

257 SAII 800

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं• 35]

नई बिल्ली, शनिवार, शगस्त 28, 1982/भाद 6, 1904

No. 35]

NEW DELHI, SATURDAY, AUGUST 28, 1982/ BHADRA 6, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रक्षा जा सके Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate complistion

भाग II—सुरुद्ध 3—उप-सुरुद्ध (li) PART II—Section 3—Sub-section (li)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों द्वारा जारी किए गए सांविधिक ग्रावेश ग्रीर ग्राधसूचन।
Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India
(other than the Ministry of Defence)

गृह भंत्रालय

कामिक और प्रशासनिक सुधार विभाग

सुद्धि-पत्र

न्हं दिल्ली 7 ग्रगस्त, 1982

का अरा ० 297॥ - - चेन्द्रीय सिविल सेवा (पेणन) (दूसरा सणीधन) नियम, 1981, भारत के राजपल, भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) तारीख 7 मार्च, 1981 में भारत सरकार के गृह मलालय (कार्मिक घोर प्रशासनिक मुधार विभाग) की प्रधिस्वता स० का ब्रांट 740, तारीख 18 फरवरी, 1981 के प्रश्रीत प्रकाणित किए गए थे :

ग्रीर उक्त निस्मा राजपत्र में प्रकाणन की तारीख से ही ग्रर्थात् 7 मार्च, 1981 में प्रवृत्त हो गए ग्रीर इसी प्रकार ग्रव भी प्रवृत्त है,

भीर उक्त नियम भारत के राजपत्न भाग 2, खड 3, उपखड (ii) तारीख 19 सितम्बर, 1981 में अधिसूचना स० का० आ० 2428 तारीख 18 फरवरी, 1981 के अधीन प्रनवधानता से पुन मुद्रित हो।

ग्रीर यह श्रावक्यक समझा गया है कि उक्त सद्रण संबंधी गलती को दूर किया आए,

भ्रम ग्रम यह निदेश दिया जाता है कि उक्त श्रधिसूचना स० का० श्रा० 2428 नारीखा 18 फरवरी 1981 की उक्स राजपन्न से लोग किया गया समझा जाए। 2 मदेह दूर करने के लिए यह भी स्पष्ट किया जाता है कि उनत अधिसूचना मर कार आर 740, तारीख़ 18 फरवरी, 1981 के माथ यथा प्रकाशित उक्त नियम, राजाल में उनके प्रकाशन की तारीख़ से स्थान 7 मार्च, 1981 से ही प्रवृत्त बने हुए हैं।

[स॰ 1(13) पे(ए)/80]

एस० पी० मदान, निदेशक (पेंग्रन)

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

(Department of Personnel and Administrative Reforms)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 7th August, 1982

SO. 2970.—Whereas the Central Civil Services (Pension) (Second Amendment) Rules, 1981 were published with the notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs (Department of Personnel and Administrative Reforms) No. S.O. 740, dated the 18th February, 1981, in the Gazette of India, Part-II, Section 3, Sub-section (ii), dated the 7th March, 1981;

And whereas the said rules have come into force on and from the date of their publication in the Official Gazette, that is to say, the 7th March, 1981 and continue to be in force as such;

And whereas the said rules were again inadvertently printed in the Gazette of India, Part II find (ii),

(3005)

551 GI/82-1

dated the 19th September, 1981, vide notification No. S.O. 2428, dated the 18th February, 1981;

And whereas it is considered necessary to rectify the said printing error;

Now, therefore, it is hereby directed that the said notification No. S.O. 2428, dated the 18th February, 1981, may be treated as having been omitted from the said Gazette.

2. It is also clarified for removal of doubts that the sail rules as published with the said notification No. S.O. 740, dated the 18th February, 1981, continue to be in force on and from the date of their publication in the official Gazette, that is to say the 7th March, 1981.

[No. 1(13)-Pen(A)/80].

S. P. MADAN, Director (Pension).

विस संत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

(वैकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 7 भगस्त, 1982

का०आ। 2971. — भारतीय रिजर्व वैक प्रधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 42 की उपधारा (1) के स्पष्टीकरण में खड़ (घ) के उपखंड (6) तथा साथ ही खड़ (इ) के उपखंड (5) हारा प्रदन शक्तियों का प्रयोग करने हुए, केन्द्रीय सरकार उक्त उपखंडों के प्रयोजनार्थ एतद्द्रारा निम्नलिखन वैंकों को प्रधिसृचित करती है, प्रयोत —

- 1. प्राध्य बैंक, हैदराबाद,
- 2. कारपोरेशन बैंक, मंगलोर,
- न्यू बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली,
- 4. भोरियंटल बैंक घाफ कामर्स, नई दिल्ली,
- 5 पजाब एण्ड सिंध वैंक, अमृतसर
- 6. विजया बैक, बंगलीर

[स॰ 15 14 82-बी॰ मो॰-III]

एन० डी० बस्रा, श्रवर सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Personnel and Administrative Reforms)

(Banking Division)

New Delhi, the 7th August, 1982

S.O. 2971.—In exercise of the powers conferred by sub-clause (vi) of clause (d) and also sub-clause (v) of clause of the Explanation to sub-section (1) of Section 4? Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934), the Government hereby notifies for the purposes of the clauses, the following banks, namely:

- 1. Andhra Bank, Hyderabad,
- 2. Corporation Bank, Mangaloie,
- 3. New Bank of India, New Delhi,
- 4. Oriental Bank of Commerce, New Delhi,
- 5. Punjab & Sind Bank, Amritsar,
- 6. Vijaya Bank, Bangalore.

[No. 15/14/82-B.O.III]

N. D. BATRA, Under Secy.

नई दिल्ली, 7 प्रगस्त, 1982

कालआल 2972—प्रावेशिक प्रामीण मैंक प्रधिनियम, 1976 (1976 का 21) को धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदस्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार, एतंब्द्वारा श्री एन० के० मिन्हा को वैशाली क्षेत्रीय प्रामीण कैंक, मुजद्फरपुर का प्रध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 1-7-1982 सं प्रारम्भ होकर 30-6-1983 को समाप्त होने वाली प्रविधि के रूप में निर्धारित करती है जिसके दौरान श्री एन० के० मिन्हा प्रध्यक्ष के रूप में कार्य करेगे।

[सं० एफ० 2-44/82 ग्रार० भार० भी०]

राम सेहरा, भ्रवर सचिव,

New Delhi, the 7th August, 1982

S.O. 2972.—In execise of the powers conferred by subsection (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri N. K. Sinha as the Chairman of the Vaishali Kshetriya Gramin Bank, Muzaffarpur and specifies the period commencing on the 1-7-1982 and ending with the 30-6-1983 as the period for which the said Shri N. K. Sinha shall hold office as such Chairman.

[No. F. 2-44/82-RRB]

RAAM BEHRA, Under Secy.

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

नई दिल्ली,

आयकर

कारुआर 2973.-- केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, प्रायकर भिधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 126 द्वारा प्रदत्त शक्तियों भीर इस निभित्त उसे समर्थ बनानें थाली प्रत्य सभी शक्तियो का प्रयोग करते हुए, समय-मसय पर संशोधित श्रपनी ब्राधसूचना स० 1 (फार्ल्स० 55/233/63-आई०टी०) नारीख 18-5-64 का निस्निसिखित संशोधन करता है।

उक्त अनुसूची के अभ सं० 31 के स्थान पर निम्नलिखिन रखा जाएगा

अनुसूचि≀

| कम स० | | शाईटी झा | भाई ए सी | एएसी | | मी ग्राई टी |
|--------------|------------------|----------|----------|----------|---|-------------|
| L | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| | े कमान, पूर्ण के | | | | | |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|--------|--|-----------------------------|------------------|------------------|---------------|-------------------------------|
| | क्षानियत्रणाधीन सैनिक कर्मचारी किन्तु उनको छोड़कर जो नीचे खंड (क) से (ग) में वर्णित है। | चैतन क्यीर प्रतिदाय पुणे | <u> </u> | | | भ्रायकर प्रायुक्त पुणे |
| 31 (ጥ) | नियन्नक सैनिक लेखा दक्षिण कमान के सपराक्ष नियन्नण।र्धान सैनिक कर्मचारी किन्तु ने जिन्हे मद्रा स्थित उप कार्यालय द्वारा सदाय किया जाता है। | स प्रधिकारी वेतन | रेज 7 मद्रास | र्ध-रेज मद्रास | - | तमिलना ड्-4- मद्रास |
| 31 (ख) | नियन्नकः, सैनिक लेखाः, वक्षिणी कमान के सपरीक्षा नि वणाधीन सैनिकः कर्मचारी किन्तु वे जिन्हे सिकन्यय बाद रिथब उप कार्यालय द्वारा सदाय किया जान | प- सर्किल हैदराबाद | रेज-4, हैंबराबाद | सी-रेज हैंदराबाद | | ए पी 1 हैदराबाद |
| 31 (ग) | नियस्नक, सैनिक लेखा दक्षिणी कमान के सपरी नियसण प्रधीन सैनिक फर्मचारी किन्तु वे जिल् अगलीर स्थित उप कार्यालय द्वारा सदाय किय जाता है। | हे ग्रधिकारी वेतन | रेज-3 बगलीर | रेज 1 बगलीर | | कर्नाटक 1 अवंगलीर |
| | यह ग्रन्धिसूचना 1 6.1982 से प्रभावी होर्ग | ो । | | | | |

[स॰ 4639/फा॰स॰ 188/3/80-फाई॰ टी॰ (ए॰झाई॰)] बी॰ बी॰ श्रीनियासन, सचिव, केन्द्रीय प्रत्यक्षकर बोर्ड

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

New Delhi, the 25th May, 1982

INCOME-TAX

S. O. 2973.— In exercise of the powers conferred by section 126 of the Income-tax Act, 1963 (43 of 1961) and of all other powers enabling it in this behalf the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following amendment to the Schedule annexed to its Notification No. 1 (F. No. 55/233/63-JT) dated 18-5-64 amended from time to time.

In the said Schedule at Sl. No. 31 the following shall be substituted:

SCHEDULE

| | ITO | IAC | AAC | CIT(A) | ClT |
|---|--|--|--|--|--|
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| of Military Accounts Southern 1 Pune except those described in | | | | | C.I.T. Pune. |
| of Controller of Military Accounts ern Command but who are being | 2nd ITO Salary Circle Madras | Range VII Madras | E-Range Madras | _ | Tamilnadu IV Madras |
| of Controller of Military Accounts there Command but who are being | Circle | Ran ge IV Hyderabad | C-Ran ge Hyderabad | | A.P.—I Hyderabad |
| of Controller of Military Accounts the Command but who are being | Salary Circle | Range III Bangalore. | Range I Bangalore. | | Karnataka I Bangalore. |
| rid) ii o ii li a o n li | employees under the audit control of r of Military Accounts Southern d Pune except those described in to (c) below: The employees under the audit conformand but who are being by sub-office situated at Madras. The employees under the audit Conformand but who are being by sub-office situated at Secunderabad ary employees under the audit conformand but who are being by sub-office situated at Secunderabad ary employees under the audit conformand but who are being by sub-office situated at Bangalore, | employees under the audit control of Pune except those described in to to (c) below: The employees under the audit control of Controller of Military Accounts are more command but who are being by sub-office situated at Madras. The employees under the audit Controller of Military Accounts are more command but who are being by sub-office situated at Secunderabad are employees under the audit controller of Military Accounts are more command but who are being by sub-office situated at Secunderabad are employees under the audit controller of Military Accounts are more command but who are being by sub-office situated at Bangalore. Salaries and Refunds Pune. 2nd ITO Salary Circle Madras B-Ward Salary Circle Hyderabad Ary employees under the audit controller of Military Accounts are more command but who are being by sub-office situated at Bangalore. | employees under the audit control of r of Military Accounts Southern d Pune except those described in) to (c) below: The employees under the audit control of Pune except those described in) to (c) below: The employees under the audit control of Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit | employees under the audit control of roof Military Accounts Southern de Pune except those described in to to (c) below: Ary employees under the audit control of Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military Accounts ary employees under the audit Controller of Military A | employees under the audit control of rof Military Accounts Southern d Pune except those described in to (c) below: Arry employees under the audit concording by sub-office situated at Madras. Arry employees under the audit Concording by sub-office situated at Secunderabad by sub-office situated at Secunderabad arry employees under the audit concording by sub-office situated at Secunderabad by sub-office situated at Bangalore. Salaries and Refunds Pune. Circle Madras Madra |

केन्द्रीय उत्पाव-शुल्क अीर सीमा-शुल्क बोर्ड

नई दिल्ली, 29 अगस्त, 1982

सं. 196 ∕82-सीमा-**श्ल्क**

का. आ. 2974: —केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और गीमा-शुल्क बोर्ड, सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 9 द्वारा प्रदत्त शिवतयों का प्रयोग करते हुए, महाराष्ट्र राज्य में बुलढाना जिले के खामगांव को भाण्डागार स्टेशन के खप में घोषित करता है।

[फ . मं 473/91/32-सी . श्. -7] एन . के . कपूर , अवर सचिव , केन्द्रीय उत्पाद-श्लक और सीमा-श्लक बीडी

CENTRAL BOARD OF EXCISE AND CUSTOMS

New Delhi, the 28th August, 1982

No. 196/82-CUSTOMS

S.O. 2974.—In exercise of the powers conferred by section 9 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Board of Excise and Customs hereby declares Khamgaon of Buldana District in the State of Maharashtra, to be a warehousing station.

[F. No. 473/91/82-CUS. VII]

N. K. KAPUR, Under Secy. Central Board of Excise and Customs

धनकर आयुक्त कार्यालय, हरियाणा,

रोह्तक, ६ ग्रगस्त, 1982

धमकःर

का॰ आ॰ 2975. — केन्द्रीय सरकार की राय है कि लोकहित से यह आवश्यक तथा समीचीत है कि धनकर धिधित्यम, 1957 (1957 का 27) के धधीन यहा इसके पश्चात विनिर्देष्ट ऐसे करदानाओं के नाम तथा धन्य विशिष्टियों प्रकाशित की जाएं, जिनका शृद्ध धन वित्तीय वर्ष 1981-82 के दौरान 10 लाख रुपयें से अधिक निर्धारित किया गया है।

भीर भनः भनकर प्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) की धारा 42-क द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का नथा इस निमित्त उसे समर्थ सनाने वाली भन्य सभी शिक्तयों का प्रयोग करने हुए, केन्द्रीय सरकार ने अपने भादेश दिनांक 7 जनवरी, 1975 के द्वारा धनकर के सभी आयुक्तों की अपने केन्द्राक्षिकार में स्थित करदानाओं से संबंधित नाम, पले, हैसियत नथा निर्धारित वर्ष तथा एमें करदानाओं द्वारा विवरणित अन, निर्धारित किए गए धन सथा विद्राय भर्ष 1981-82 के दौरान देय धनकर तथा विद्रागए धनकर का प्रकाशित करने के लिए प्राधिकृत किया है।

धतः धवं केन्द्रीय सरकार के उपर्युक्त दिनांकः 7 जनवरी, 1975 के स्रादेश के धनुसार प्रदत्तं गिक्तियो का प्रयोग करने हुए, मै एतत्द्वारा इसके संलग्न प्रमुसूची में उपर्यूक्त करतावाधों के नाम तथा विगिष्टिया प्रशाशिक करता हुं।

[फा०मं० 418(5)82-83-बसुली]

सी०की० राठी, धनकर मायुक्त

भ्रायकर विभाग, हरियाणा, रोहतक

धनकर के ऐसे सभी करदानाओं के नाम, जिनका शुद्ध धन थिसीय वर्ष 1981-82 के दौरान 10 लाख रुपये से अधिक निर्धारित किया गया

- था। (i) हैंसियन के लिए "एच" हिन्दी फ्रिंभिक्त कुटुम्ब फ्रीर "फ्राई" व्यक्तिगत के लिए, (ii) कर किशिण वर्ष के लिए (iii) दें गई शुद्ध जिंबरणी (रिर्टन) के लिए (iv) निर्धारित शुद्ध धन के लिए (v) देय कर के लिए (vi) दिए गए कर के लिए।
 - । श्री पन्ना लाल द्वारा भ्रोरिष्ण्टल साईस ग्रापरेट्स वर्कगाप भ्रम्बाला केट
 - (i) "एच" (ii) 1978-79 (iii) 1057760/- (iv) 1189800/- (v) 27900/- (vi) 27900/-
 - श्री लक्ष्मी मागर द्वारा मारिएण्टल माईम मापरेट्म वर्कणाप प्रभवामा केंट
 - (i) "ত্ৰ" (ii) 1978-79 (iii) 988600/-(iv) 112000/
 - (V) 25460/- (Vi) 25460/-

Office of the Commissioner of Wealth Tax. Haryana

Rohtak, the 6th August, 1982

WEALTH TAX

s.o. 2975.—Whereas the Central Government is of the opinion that it is necessary and expedient in the Public interest to publish the names and other putticulars hereinafter specified relating to assessees who have been assessed under the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957) on net wealth exceeding Rs. 10 lacs during the financial year 1981-82.

And whereas in exercise of the powers conferred by section 42A of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957), and all other powers enabling them in this behalf the Central Government has by its order dated 7-1-1975 authorised all Commissioners of Wealth-tax to publish the names, addresses, status and assessment year relating to assessees within their jurisdiction and wealth returned by the wealth assessed on, the wealth-tax payable and the wealth-tax paid by such assessees during the financial year 1981-82.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred upon me by the Central Government by its aforesaid order dated 7-1-1975, I hereby publish in Schedule, hereto annexed, the names and other particulars of the assessees aforesaid.

JF. No. 418(5)/82-83/RECJ

C. B. RATHI, Commissioner of Wealth Tax.

INCOME TAX DEPARTMENT, HARYANA, ROHTAK Names of all wealth-tax assesses assessed on net wealth exceeding Rs. 10 lakhs during the financial year 1981-82 (i) stands for status—'I' for Individual, 'H' for Hindu Undivided Family (ii) for assessment year (iii) for net wealth returned (iv) for net wealth assessed (v) for tax payable and (vi) for tax paid.

- 1. Shri Panna Lal C/o Oriental Science Apparatus Workshop Ambala Cantt, (i) H(Sp) (ii) 1978-79 (iii) 1057760/- (iv) 11,89,800/- (v) Rs. 27,900/- (vi) 27,900/-.
- 2. Shri Lakshmi Sagar C/o above (i) H(Sp) (ii) 1978-79 (iii) 9,86,600/- (iv) 11,20,100/- (v) 25,460/- (vi) 25,460/-.

बाणिज्य मंत्रालय

(बाणिज्य विमाग)

नई दिल्ली, 24 द्यगम्न, 1982

का आ 2976. केन्द्रीय सरकार, निर्याप (अवालिटी नियंत्रण श्रीर निरीक्षण) श्रीविनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 17 द्वारा प्रदत्त सिन्तयो का प्रयोग करने हुए, थिद्युन मोडरो नवा जनिको का निर्यात (क्यालिटी नियद्मण और निरीक्षण) नियम, 1980* का राणीधन करने के लिए निम्नलिखित निधम बनाती है, ग्रासीत्—

- । सक्षिप्त नाम और प्रारम्भ
- (1) इस नियमो का सिक्ष्यित नाम विश्वत साटरो नया जनिक्रो का नियमि (क्वालिटी नियदण ग्रौर निरीक्षण) संशोधन नियम, 1982 है।
- (2) में राजपत्र में प्रकाशन की शारीख का प्रवृत्त होंगे।
- 2 विश्वन मोटरो नथा जिनत्रो का निर्मात (स्वालिटी नियत्रण ग्रीर तिरीक्षण) नियम, 1980 के नियम 8 के स्थान पर निम्नलिखिल निथम रखा आएगा, ग्रार्थात्—
 - "(8) निरीक्षण फीस ——निर्शत कर्ता द्वारा ग्रामिकरण को निरीक्षण फीस निस्तित्वित के श्रनुसार वी जाएगी
 - (i) (क) उत्पादन के बौरान यथालिटी नियवण स्तीम के बर्धान निर्यात के लिए प्रति परेषण न्यूनतम 20 रुपये के अधीन रहते हुए, पोन पर्यन्त नि मृत्य मृत्य के 0 2 प्रतिप्रान की दर में 1
 - (८) परेचणानुमार निरीक्षण ने धाधीन निर्यात के लिए प्रति परेषण ग्यनतम 20 रुपए के घाधीन रहते हुए, पोत पर्यन्त नि णुरक भृत्य के 0 1 प्रतिणान की वर से।
 - (ii) उन वितिमांताक्षा/निर्यातकनियों के लिए जा राज्यों/राध राज्य क्षेत्रां की सर्वाधित सरकार के साथ लघु उद्योग विनिर्माण एककों के लिए रिजस्ट्रीकृत है, प्रति परेषण न्युनतम 20 रुपए के ब्राधीन रहते हुए, त्रमण (क) और (ख) के लिए 0 18 प्रतिशत क्षीर 0 36 प्रतिणत की दर से होरी।"

पाद टिप्पण

*का॰ग्रा॰ 2554 तारीख 27-9-80

[पत्र ग० ६(१)/४०-नि०नि० तथा नि०उ०]

MINISTRY OF COMMERCE

(Department of Commerce)

New Delhi, the 28th August, 1982

- S.O. 2976.—In exercise of the powers conferred by section 17 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government hereby makes the following rules to amend the *Export of I lectric Motors and Generators (Quality Control and Inspection) Rules, 1980, namely —
- 1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Export of Electric Motors and Generators (Quality Control and Inspection) Amendment Rules, 1982
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2 In the Export of Electric Motors and Generators (Quality Control and Inspection) Rules, 1980, for rule 8, the following rule shall be substituted, namely:
 - "(8) Inspection fee—Inspection fee shall be paid by the exporter to the Agency as under:
 - (i) (a) For export under in-process quality control scheme at the rate of 0.2 per cent of the FOB, value subject to a minimum of Rs 20/1 per consignment

- (b) For exports under consignmentwise inspection at the rate of 0.4 per cent of the FOB, value subject to a minimum of Rs. 20/- per consignment.
- (it) Subject to the minimum of Rs. 20/- per consignment, the late shall be 0.18 per cent and 0.36 per cent for (a) and (b) respectively for manufactures-exporter who are registered as Small Scale Manufacturing Units with the concerned Government of States/Union Territolies".

*Foot note ;---

SO 2554 dated 27-9-1980.

[F. No 6(9)/80-EI&EP]

कारुयार 2977. भेन्दीय सरकार निर्यात (अवालिटी नियन्नण और निरीक्षण) अधिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 17 द्वारा प्रदेन णिक्तियों का प्रयोग करने हुए पटसन मिल के गुर्जे तथा उपसाधन निर्यात (स्वालिटी निधन्नण ग्रोर निरीक्षण) नियम, 1979* का संशोधन करने के लिए निस्तलिखित नियम सनाती है, ग्रार्थन

- ा सक्षिप्त नाम भीर प्र(रम्भ ----
- (1) इन नियमो का सक्षिप्त नाम पटसन मिल के पूर्वे तथा उपसाधन निर्याह (भ्यालिटी नियत्रण शौर निरीक्षण) समोधन नियम, 1982 है।
- (2) ये राजपत्र मे प्रकमणन की नारीख को प्रवृक्त होग।
- 2 पटमन मिल के पुर्जे नथा उपसाधन निर्यात (क्वालिटी नियत्नण भौर निरीक्षण) नियम, 1979 के नियम 6 के स्थान पर निम्नलिखित नियम प्रतिस्थापित किया जाएगा, ग्राचीन् ----
 - '(৬) निरोक्षण फीम निर्यातकर्ता द्वारा भ्रभिकरण को निरोक्षण फीम निम्नलिखिन के भन्सार दी जाएगी
 - (i) (क) उत्पादन के दौरान क्वालिटी नियत्नण स्कीम के अधीन निर्यात के लिए प्रति परेषण न्यूननम 20 रुपए के प्रधीन रहते हुए, दोत पर्यन्त निशृल्क मूल्य के 0 2 प्रतिशत की दर से।
 - (ख) परेगणानुसार निरीक्षण के प्रधीन निर्यात के लिए प्रति परेषण स्यूनतम 20 रुपए के प्रधीन रक्षने हुए, पोन प्रयक्त नि शुल्क सूल्य के 0 1 प्रतिश्वत की दर से।
 - (ii) उन विनिधानाधो/नियातिकताधो के लिए जो राज्या/सध राज्य क्षेत्रो की संबंधित सरकारों के साथ लघु उद्योग एकको के लिए रिजस्ट्रीकृत है, प्रति परेषण त्युननम 20 भपए के प्रधीन रहते हुए, श्रमश (क) भौर (ख) के लिए 0 18 प्रतिशत और 0 36 प्रतिशत की बर होगी।

^अपाद **टि**प्पण का०भ्रा० 939 नारी**ख** 17-3-1979

[पत्र स॰ 6(9)/80-नि॰नि॰ नथा नि॰उ॰)]

- S.O. 2977.—In exercise of the powers conferred by section 17 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government hereby makes the following rules to amend the 'Export of Jute Mill Spares and Accessories (Quality Control and Inspection) Rules, 1979, namley:—
- 1 Short title and commencement—(1) These rules may be called the Export of Jute Mill Spares and accessories (Quality Control and Inspection) Amendment Rules, 1982,

- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Export of Jute Mill Spares and Accessories (Quality Control and Inspection) Rules, 1979, for rule 6, the following rule shall be substituted, namely:
 - "(6) Inspection fee.—Inspection fee shall be paid by exporter to the Agency as under:
 - (i) (a) For exports under in-process quality control scheme at the rate of 0.2 per cent of the F.O.B. value subject to a minimum of Rs. 20/- per consignment.
 - (b) For exports under consignmentwise inspection at the rate of 0.4 per cent of the F.O.B. value subject to a minimum of Rs. 20/- per consignment.
 - (ii) Subject to the minimum of Rs. 20/- per consignment, the rate shall be 0.18 percent and 0.36 per cent for (a) and (b) respectively for manufacturer exporter who are registered as Small Scale Manufacturing Units with the concerned Governments of States/Union Territories".

Foot note:

S.O. 939 dated 17-3-1979.

[F. O. No. 6(9)/80--EI&EP]

का अा 2978.— केन्द्रीय सरकार, निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण श्रीर निरीक्षण) श्रश्चिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 17 द्वारा प्रदत्त गक्तियों का प्रयोग करने हुए, एत्यूमीनियम के बतेनों के निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम, 1980* का संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनानी है, श्रथीत्:---

- 1 सक्षिप्त नाम भीर प्रारम्भ .--
- (i) इन नियमो का संक्षिप्त नाम एत्य्मीनियम के बर्तन निर्यात (यवालिटी नियन्नण भीर निरीक्षण) सशोधन नियम, 1982 है।
- (ii) ये राजपल में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
- १ एल्युमीनियम के बर्तन निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम, 1980 के नियम 7 के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा आएगा, प्रश्रीत् —-
 - "(7) निरीक्षण कीस '--निर्यातकर्ता द्वारा भ्रमिकरण को निरीक्षण कीम निष्नलिखित के भ्रमुसार दी जाएती
 - (i) (क) उत्पादन के दौरान क्वालिटी नियवण के अर्धान निर्यात के लिए प्रति परेषण न्यूनतम 20 रुपये के अर्धन रहने हुए, पान, पर्यस्त नि मुख्क नत्य के 0 2 प्रतिकात की दर में।
 - (स्त्र) परेषण निरीक्षण के प्रधीन निर्यात के लिये—
 प्रित परेषण न्यूनतम 20 रूपण के प्रधीन रहने हुए पंति
 पर्यन्त नियानक सूल्य के 0.4 प्रतिशत की दर से।
 - (ii) उन विनिर्मातायो/निर्मातकतियों के लिए जो राज्यो/संघ राज्य क्षेत्रों की सबक्षित सरकारों के साथ लघु उद्योग विनिर्माण एककों के लिए र्गअस्ट्रीकृत है, प्रति परेषण स्पूनसम 20 रुपये के प्रक्षीन रहते हुए असम (क) धीर '(ख) के लिए 0.18 प्रतिगत धीर 0.36 प्रतिगत की वर से होंगी।''

*पाद टिप्पण---

का॰ग्रा॰ 2440 नारीख 20 9-80

[पन्न स० ७(५)/८०-नि०नि० गथा नि०उ०)] मी०बी० कुकरनी, संयुक्त निदेशक

- S.O. 2978.—In exercise of the powers conferred by section 17 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government hereby makes the following rules to amend the Export of Aluminium Utensils (Quality Control and Inspection) Rules, *1980, namely:—
- 1. Short title and commencement.—(1) There rules may be called the Export of Aluminium Utensils (Quality Control and Inspection) Amendment Rules, 1982.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Export of Aleminium Utensils (Quality Control and Inspection) Rules, 1980, for rule 7, the following rule shall be substituted, namely:—
- "(7) Inspection fee.—Inspection fee shall be paid by the exporter to the Agency as under:
 - (i) (a) For exports under in-process quality control scheme at the rate of 0.2 per cent of the F.O.B. value subject to a minimum of Rs. 20/- per consignment.
 - (b) For exports under consignmentwive inspection at the rate of 0.4 per cent of the F.O.B. value subject to a minimum of Rs. 20/- per consignment.
 - (ii) Subject to the minimum of Rs. 20/- per consignment, the rate shall be 0.18 per cent and 0.36 per cent for (a) and (b) respectively for manufacturer exporter who are registered as Small Scale Manufacturing units with the concerned Governments of States/Union Territories".

"Foot note:--

S.O. 2440 dated 20-9-1980.

[F. No 6(9)/80-EI&EP1

C. B. KUKRETI, Jt. Director,

नई दिल्ली, 17 धगस्त, 1982

(तम्बाक उद्योग विकास नियंत्रण

कां कां 2979. — केन्द्रीय सरकार, तबाकू बोर्ड नियम, 1976 के नियम 3 घीर 4 के साथ पठित तबाकू बोर्ड भ्रिधिनियम, 1975 (1975 का 4) की धारा 4 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए श्रीमती श्रुकणा माखन, निदेशक, विक्त प्रभाग वाणिज्य विभाग नई विल्ली, डा० डी एन राम, कृषि निदेशक, बिहार सरकार पटना श्रीर श्री एस सी बंदोपाध्याय, कृषि उप निदेशक (विपणन) पश्चिमी बंगाल सरकार, कलकत्ता को तबाकू बोर्ड के सदस्य के इप मैं नियुक्त करती है, श्रीर निदेश देती है कि भारत सरकार के वाणिज्य महालय (तबाकू उद्योग विकास नियंद्रण) की श्रीधसूचना म० का०आ० 5417 नारीख 17 दिसम्बर, 3975 में निक्तिलिखन श्रीर संशोधन किए जाएंगे, श्रूष्ट्रीन ५—

जक्त प्रश्निमूचना में, विद्यमान क्रम मं० 7,21 प्रीर 22 तथा उनसे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, प्रथति ——

7. श्रीमती प्ररुणा माखनर वित्त से सञ्यवहार करने वाले निदेशक, वित्त प्रभाग मत्रालय का प्रतिनिधित्व वाणिज्य विभाग, करने के लिए नुतर्ह किल्ली —सदस्य

21. श्रीएस० सील बंदी-पक्षिमी धगाल सरकार का पाध्याय प्रतिनिधिस्य करने के लिए कृषि उप निदेशक (विप्रान) पश्चिमी बंगाल मरकार वे दो वर्ष की कलकला-मदस्य ग्रवधि के लिए पद धारण करेंगे। 22. डा०डी एन० सम बिहार सरकार का प्रतिनि-धित्व करने के लिए कृषि निवेशक बिद्वार सरकार विकास सचिवालय पटना-15 सवस्य [म० 8/3/82-इ० पी० कृषि-6]

New Delhi the 17th August, 1982

म्रो० पी० गप्त, द्रेस्क अधिकारी

(TOBACCO INDUSTRY DEVELOPMENT CONTROL)

S.O. 2979 – In exercise of the powers conferred by subsection (4) of section 4 of the Tobacco Board Act, 1975 (4 of 1975) read with rules 3 and 4 of the Tobacco Board Rules, 1976, the Central Government hereby appoints Smt. Aruna Makhan, Director, Finance Division, Department of Commerce, New Delhi, Dr. D.N Ram, Director of Agriculture, Government of Bhar, Patna and Sh. S.C. Bandopadhyaya, Deputy Director of Agriculture (Marketing) Government of West Bergal, Calcutta, as Members of Tobacco Board and directs that the felli wing further amendments shall be made in the Netifical on of the Government of India in the Ministry of Commerce (Tobacco Industry Development Central) No. S.O. 5417 dated the 17th December, 1975 namely:—

In the said notification, for the existing serial Nes. 7, 21, and 22 and entries relating thereto, the following shall be substituted namely:-

7. Smt. Aruna Makhan, Member to represent Director, the Ministry Finance Division, dealing with Department of Commerce, New Delhi.

21. Sh. S.C. Bandopadhyaya,
Deputy Director of Member to represent
Agriculture (Marketing),
Government of West
Bengal, Calcuita.
Bengal

22. Dr. D.N. Ram,
Member to represent

| They hold office

Bengal, Calcutta.

22. Dr. D.N. Ram, Member to represent the Government of Bihar, Vikas Sachivalya, Patna-15.

[No. 8/3/82-EP-Agri-vi)] O.P. GUPTA, Desk Officer

संयुक्त मुख्य नियंत्रक भाषात निर्यात का पार्यालय वस्त्रकें,

विषय मिडको कन्टेनर्स लि० बम्बर्ड को जारी किए गए प्राप्तिम लाइसेस सं० पीक /0456541, दिनाक 1-9-81 (दोनो प्रतिया) मृत्य 1,93,4000 रुपए और दी ई ई सी सदया 001841 दिनाक 4-9-81 को रह करने का ध्रादेश। का॰ आ० 2980.—सर्वश्री मिडको कत्टेन्से लि॰ वस्बई की लाइमेंस भ्रविधि सप्रैल—सार्च के लिए इस झादेश के पाछ लिखी मदों के लिए एक अग्निम लाईसेस सख्या भी के/0456541, दिनोक्ष 1-9-1981 मृस्य 18,93,400 रुपण और डी ईई सी संख्या 001841, दिनाक 4-9-81 जारी किए गए थे। उन्होंने इस आधार पर प्रियम लाईसेस और डी ई ई सी की झनु- लिप प्रतिया के लिए थाबेदन किया है तिमल प्रतिया करा ली गई है।

2 प्रयने तर्क के समर्थन में श्रायंदन ने महानगरीय मिजिरहेट, सम्बर्ध के न्यायालय में पंजीयक द्वारा विधियन मख्याकित स्टाम्स पेपर पर एक सपथ पत्र दाखिल किया है। मैं सतुष्ट हूं कि लाईसेस की दोनों मूल प्रितिया और मूल दी ई ई सी खो गई है और निदेश देगा हूं कि प्रशिम लाइसेस की अनुलिप (दोनों प्रतिया) और डी ई ई सी की अनुलिप धाबेदन को जारी कर दी जाए। यिग्रम लाइसेंस की दोनों मूल प्रतिया और डी ई ई सी रह की गई समझीं जाए।

[मिसिन स॰ ए डी वी |यूडी ई एस | 372 | 055235 | एएस-81 | एस एस एस दिनांक 25-1-81]

जी मार० नायर, उप मुख्य नियन्नक,

आयात-नियमि

कृते संयुक्त मुख्य नियम्नक, आयान-नियमि

वियय - लाइमेस संख्यापी के /0456541, दिनाक 1-9-81 की अनुलिपिक सीमा गुल्क प्रयोजन प्रति की और डी ई ई सी पुस्तिका सं०-061841, दिनाक 4-9-81 की अनुलिपि प्रतिया जारी करना।

यह अनुरोध किया जाता है कि उपर उन्निष्यित मूल अग्निम लाइसेम श्रीर डी ई ई सी जिनका ब्यीरा नीचे विया गया है यदि वे प्रस्तुन किए जाए तो वे बैध न समझे जाएं श्रीर यदि उत्प्रमृश्त लाइसेम की बोनों मूल प्रतिया श्रीर उत्देईमी अपके पत्तन पर प्रस्तुन किए जाएं या उपयोग किए जाएं तो इसकी सूचनों इस कार्यालय को तुरन्त वी जाए।

लाहमेंस स० ग्रीर जारी **वै**धना शीईई मी विनाम करने वाला कार्यालय कानीम 0456541विनांक संयुक्त एम ० एस ० 12 मास भ्रमील-1893400 1-9-81 श्रीर मार्च गुरुष प्लंटस रुपए डी ई ई सी न० 8 एमएम नियत्रक 1982 001841,दिनाक मायात-प्रार्डम क्या-नियान लोटी 495 4-9-81 का एम०टी० कार्यालय एम० बालगंगाधरन, नियंत्रक, मायात- निर्याप्त

कृते सयुक्त मुख्य नियक्तक, आयान-रियति

Office of the Joint Chief Controller of Imports and Exports

Bombay

Subject: Order for Cancellation of Advance Licence No. PK/0456541 dt. 1-9-81 for Rs. 18,93,400 (both copies) and DEEC No. 001841 dt. 4-9-81 issued in favour of M/s. Midco Containers Ltd., Bombay.

- S.O. 2980.—(1) M/s. Midco ontainers Ltd., Bombay were granted advance licence No. PK/0456541 dt. 1-9-81 for Rs. 18,93,400 and DEEC No. 001841 dt. 4-9-81 for the item shown on reverse of this order for Licensing period AM. They have applied for duplicate copy of advance licence and DEEC on the grounds that the same are stolen.
- (2) In support of their contention the applicants have filed an affidavit on stamped paper duly attested before the Regist-

rar, Metropolitan Magistrate's Court, Bombay. I am satisfied that original Licence in duplicate and original DEEC have been lost and direct that the duplicate advance licence (both copies) and duplicate DEEC be issued to the applicant. Both copies original of advance licence and DEEC mentioned above may be deemed to have been cancelled.

[P..No. ADV|UDES.372|055235|AM81|L|ALS]
G. R. NAIR, Dy. Chief Controller of Imports & Exports.

For Jt. Chief Controller of Imports and Exports

SUB: Issue of duplicate customs of copy of No. PK/0456541 dt. 1-9-81; and DEEC Book No. 001841 dt. 4-9-81

It is requested that the original advance licence and DEEC mentioned above, particulars given below would not be valid if produced and that intimation would be sent to this office immediately if the original both copies of above licence and DEEC are presented or utilized at his post.

Licence NO. & Issued Items Valid for periodluvalucear.

DEEC. Dt. by

0456541 Jt. C C.1 & M.S. plates

AM82 Rs, 1893400/-

dt, 1-9-81 E,

8mm. 12/months

& DEEC No.

prime qua

001841 & dt.

lity 495 M.T.

4-9-81

M. BALGANGADHARAN, Controller Of

Imports & Exports.

For Jt. C'nief Controllers of Imports & Expsors

पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्रालय

(पेट्रोलियम विभाग)

नर्क दिल्ली, 7 अगस्त, 1982

काठआह 2981.— पेट्रोलियम एवं खानिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के भ्रधिकार का भ्रजन) मधिनियम, 1962 (1962 का 50) के खण्ड 2 की धारा (क) के भ्रमुसरण में तथा भारत भरकार, पेट्रोलियम, रसायन भीर उर्वरक मंत्रालय की श्रिक्ष्मचना एमर धार संख्या 985 दिनांक 6-3-76 का भ्रधिकमण करने हुए, केन्द्रीय सरकार नीचे दी गयी भ्रनुसूची के कालम 1 में उल्लिखिन प्राधिकारी को उक्त कालम (3) की तदनुरूपी प्रविष्टि में उल्लिखित क्षत्र की सीमाभ्रो के भीतर उक्त म्रिधिनियम के भ्रन्तर्गन मक्षम प्राधिकारी के कार्य करने के लिए एनवहारा प्राधिकार करती हैं.

मनुभूषी

| — व्यक्तिकानाम | पता - - | ————————————————————————————————————— |
|---|---|---------------------------------------|
| • | सीनियर पाइपलाइन इजी- नियर नया सम्पर्क प्रधिकारी इडियन प्रायल कारपोरेशन लिमिटेड (रिफाइनरी व पाइपलाइन प्रभाग) प्रली- गज पुलिस स्टेणन के पास पोस्ट बाक्स संख्या 58 | • |
| | | |

[र्स० 12017/2/81 प्रो०]

MINISTRY OF PETROLEUM, CHEMICALS & FERTILIZERS

(Deptt. of Petroleum)

New Delhi, the 7th August, 1982

S.O. 2981—In pursuance of Clause (a) of Section 2 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962 (50 of 1962) and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum Chemicals'S.O. No. 985 dated 6-3-76, the Central Government hereby authorises the authority mentioned in column 1 of the Schedule below to perform the function of the competent authority under the said Act, within the areas mentioned in the corresponding entry in the column 3 of the said Schedule.

SCHEDULE

| Name of Person | Address | Territorial jurisdiction |
|---------------------|--------------------|-----------------------------|
| Sentor Pipeline | Senior Pipeline E | Ingineer Uttar Pradesh |
| Engineer, | & Liaison Officer | - -1 |
| Indian Oil Corpora- | I.O.C. Ltd., | |
| ti n Ltd. | (Refineries & Pipe | elines |
| | Division), near Al | liganj |
| | Police Station, P. | В. |
| | No. 58, Allahaba | d. |

[File No. 12017/2/82- Prod]

नई दिल्ली, 9 अगस्त 1982

का० ग्रा० 2982—याः पेट्रोलियम ग्रीर खानिज पाईपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का प्रार्जन) ग्रिधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) के ग्रिधीन भारत मरकार के पेट्रोलियम रमायन ग्रीर उर्वरक मंत्रालय (पेट्रोलियम विभाग) की ग्रिधिमुचना का० ग्रा०स० 941 तार्गख 26-6-81 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने उस ग्रिधिमुचना से मंलग्न ग्रानुमुची में विनिविष्ट भूमियो के उपयोग के ग्रिधिकारो का पाइप लाईनो को बिछाने के प्रयोजन के लिए ग्राजिन करने का ग्रापना भागय घोषिन कर दिया था।

भीर यत समक्ष प्राधिकारी ने उक्त प्रधिनियम की धारा 6 की उप-धारा (1) के प्रधीन सरकार को रिपोर्ट वे दी है।

श्रीर श्रागे, यत केन्द्रीय सरकार ने उक्त रिपोर्ट पर क्विचार करने के पण्चात इस श्रधिसूचना से संलग्न श्रनुसूची मे विनिर्दिष्ट मृमियों में उपयोग का श्रधिकार श्रीजित करने का विनिश्चिय किया है।

भ्रज, भ्रत: उक्त भ्रष्टिनियम की घारा 6 की उपभ्रारा (1) द्वारा प्रवन्त भ्राप्तिन का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार एनव्द्वारा भ्रोषित्र करती है कि इस भ्रष्टिमूचना में सलग्न भ्रनुसूची में जिनिर्दिष्ट उक्त भूमियों में उपयोग का भ्रधिकार पाइपलाइन बिछाने के प्रयोजन के लिए एनतद्वारा भ्रजिन किया जाता है।

श्रीर श्रागे उस धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निर्देश देनी है कि उक्त भूमियों में उपयोग का श्रीधकार केन्द्रीय सरकार में विहित होने के बजाय तेल श्रीर प्राकृतिक गैस श्रायोग में, सभी बाधाश्रों से मुक्त रूप में, घं,पणा के प्रकाशम की इस तारीख की निहित होगा।

अनुसूर्च

कृप न० एन के० मी०बी० से एन. के सी.यू से एन के सी एन. तक ूपाइप लाइन बिछाने के लिए।

| राज्य | गुजरात | (জাল, খুন। | लुका. | | म ष्ट्रेमाना |
|-----------|------------|--------------|---------|--------------------|---------------------|
| | र्गाव | सर्वे न० | हेक्टयर | ्ए प्रा र ई | सेन्टीअर |
| धानपुरा | | 357 | - 0 | 04 | 56 |
| | | 352 | 0 | 07 | 44 |
| | | 351 | 0 | 07 | 20 |
| | | 346 | 0 | 00 | 50 |
| | | 349 | 0 | 07 | 56 |
| | | 348 | 0 | 14 | 88 |
| | | 347 | 0 | 08 | 76 |
| | | 332 | Ü | 00 | 50 |
| | | कार्ट ट्रेक | 0 | 00 | 60 |
| | | 455 | 0 | 03 | 84 |
| | | 458 | 0 | 15 | 60 |
| | | 457 | 0 | 03 | 00 |
| | | 458/2 | 0 | 03 | 84 |
| | | 458/1 | 0 | 04 | 08 |
| | | 459 | 0 | 01 | 92 |
| | | 465/1 | 0 | 06 | 96 |
| | | 466 | 0 | 10 | 08 |
| | | कार्ट ट्रेक | 0 | 00 | 96 |
| | | 463 | 0 | 08 | 16 |
| | | 473 | 0 | 10 | 20 |
| | | 474 | 0 | 06 | 60 |
| | | कार्ट ट्रेक | 0 | 02 | 76 |
| | | 635 | 0 | 02 | 88 |
| | | 622 | 0 | 01 | 80 |
| | | 621/2 | 0 | 0.5 | 28 |
| | | 620 | 0 | 03 | 48 |
| | | कार्ट ट्रेक | 0 | 03 | 84 |
| | | 499/1/2 | 0 | 07 | 68 |
| | | 499/2/1 | 0 | 08 | 40 |
| | | 496 | 0 | 08 | 36 |
| | | 495 | 0 | 10 | 00 |
| | | कार्ट ट्रेक | 0 | 03 | 84 |
| | | 503 | 0 | 1 2 | 60 |
| | | 505 | 0 | 24 | 72 |
| | | 504 | 0 | 05 | 64 |
| | | 502 | O | 03 | 60 |

[सं॰ 12016/20/81-मोड II]

New Delhi, the 9th August, 1982

S.O. 2982.—Whereas by notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum, Chemicals & Fertilizer, (Department of Petroleum) S.O. 1941 dated 26-6-81 under sub-section (1) of Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government declared its intention to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline;

And whereas the Competent Authority has under subsection (1) of Section 6 of the said Act, submitted report to the Government;

And further whereas the Central Government has after considering the said report, decided to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to this notification;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (1) of the Section 6 of the said Act, the Central Government hereby declares that the right of user in the said

lands specified in the schedule appended to this notification hereby acquired for loying the pipeline;

And further in exercise of power conferred by sub-section (4) of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government vests on this date of the publication of this declaration in the Oil & Natural Gas Commission free from encumbrances.

SCHEDULE

Acquisition of R O.U. From well No. NKCB to NKBU to NKCN.

STATE: GUJARAT DISTRICT & TALUKA: MEHSANA

| STATE : GUJAKAT | DISTRICT & 17 | | | |
|-----------------|---------------|------|-----|----------------|
| Village | Survey No. | Hec- | Arc | Cen- |
| | | tare | | tiare |
| DHANPURA | 357 | | 04 | 56 |
| | 352 | 0 | 07 | 44 |
| | 351 | 0 | 07 | 20 |
| | 346 | 0 | 00 | 50 |
| | 349 | 0 | 07 | 56 88 76 |
| | 348 | 0 | 14 | 88 |
| | 347 | 0 | 08 | 76 |
| | 332 | 0 | 00 | 50 |
| | Cart track | Ŏ | 00 | 60 |
| | 455 | 0 | 03 | 84 |
| | 456 | Ō | 15 | 60 |
| | 457 | Ŏ | 03 | 00 |
| | 458/2 | Ō | 03 | 00 84 |
| | 458/1 | Ŏ | 04 | 08 |
| | 459 | Ŏ | 01 | 08 92 |
| | 465/2 | Ō | 06 | 96 |
| | 466 | Ŏ | 10 | 08 |
| | Cart track | Ŏ | ÕÕ | 96° |
| | 463 | ŏ | 08 | 16 |
| | 473 | ŏ | 10 | 2ŏ |
| | 474 | ŏ | 06 | 60 |
| | Cart track | ŏ | 02 | 7 |
| | 635 | ŏ | 02 | 23 6 |
| | 635 622 | ŏ | 01 | 76 |
| | 621/2 | ŏ | ŎŜ | 28 |
| | 620 | ŏ | 03 | 28 48 |
| | Cart track | ŏ | 03 | 84 |
| | 499/1/2 | ŏ | 07 | 68 |
| | 499/2/1 | ŏ | ŏ8 | 40 |
| | 496 | ŏ | 06 | 36 |
| | 495 | ŏ | 01 | 00 |
| | Cart track | Ö | 03 | 84 |
| | 503 | ő | 12 | 60 |
| | 505 505 | ő | 24 | 72 |
| | 504 | ŏ | 05 | 64 |
| | 502 | ő | 03 | 60 |
| | 302 | U | Ų3 | an |

[No. 12016/20/81-Prod. II]

का० आ० 2983, — यतः पेट्रोलियम ग्रीर खनिज पार्यलाह्म (भूमि में उपयोग के मधिकार का भर्जन) ग्रिधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपयोग (1) के मधीन मारत सरकार के पेट्रोलियम, रसायन ग्रीर उर्वरक मंद्रालय (पेट्रोलियम विभाग) की ग्रिधिन् चना का०ग्रा० सं० 187 तारीख द्वारा केन्द्रीय रसकार है उस मिन्सूचना से संलवन भनुसूची में विनिविष्ट भूमियों के उपयोग के ग्रिधिन् मधिकार को पाइप लाईमों को विछाने के प्रयोजन के लिए ग्राजित करके का ग्रापना ग्रामय योजित कर दिया था।

ग्रीर यत: समक्ष अधिकारी ने उक्त प्रक्षिनियम की धारा 6 की उपद्यारा (I) के प्रधीन सरकार की रिपोर्ट वे वी है।

ग्रीर भ्रागे, यत. केन्द्रीय सरकार ने उक्त रिपोर्ट पर विश्वार करने के पश्चात इस भ्रधिसूचना से संलग्न भनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों में जुण्योय का भ्रधिकार भ्रजित करने का विभिक्ष्यय किया है।

मब, मतः उक्त मधिनियम को घारा 6 की उपवारा (1) द्वारा प्रवत्त मिनत का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतव्हारा योवित करते हैं कि इस मधिसूचना में संलग्न मनुसूची में विनिधिष्ट उक्त मूमियों के उपयोग का अधिकार पाइपलाईन विछाने के प्रयोजन के लिए एतव्हारा मिलत किया जाता है।

भीर धाने उस धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निर्देश देनी है कि उक्त सूमियों में जपयोग का ध्रधिकार केन्द्रीय सरकार में विदिन होने के बजाय तेल भीर प्राक्षितक गैस भायोग, में सभी बाद्याओं से मुक्त रूप में, घोषणा के प्रकासन की इस तारीख को निहित होगा

अनुसूची ग्रंकलेश्वर से थवोडरातक पाइप लाईन

| राज्य:नुजरात | <u> ত</u> িব | ना एथ म | ालुकाः ≔ | -५१६प |
|--------------|--------------|----------|----------|-------------------|
| गां व | सर्वे न० | हेक्टेथर | ए भार ह | हे सेर्न्टःथः |
| भोलाव | 25/8 | 0 | 00 | 68 |
| | 25/7 | 0 | 10 | 24 |
| | 2 2/P | 0 | 14 | 70 |
| | 27 | 0 | 05 | 00 |
| | 81 | 0 | 06 | 33 |
| | 69/ A | 0 | 18 | 0.0 |

[स॰ 12016/57/81-प्रोड II]

S.O. 2983.—Whereas by notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum, Chemicals & Fertilizer, Department of Petroleum) S.O. 187 dated under sub-section (1) of Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962 50 of 1962), the Central Government declared its intention of acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline;

And whereas the Competent Authority has under subsection (1) of Section 6 of the said Act, submitted report to the Government;

And further whereas the Central Government has, after considering the said report, decided to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to this notification:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (1) of the Section 6 of the said Act, the Central Government hereby declares that the right of user in the said lands specified in the schedule appended to this notification hereby acquired for laying the pipeline;

And further in exercise of power conferred by sub-section (4) of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government vests on this date of the publication of this declaration in the Oil & Natural Gas Commission free from encumbrances.

SCHEDULE

Pipeline from Ankleshwar to Vadodara

STATE: GUJARAT DISTRICT & TALUKA: BHARUCH

| Village | Survey No. | Hec- tare | Hec- Are | |
|---------|------------|--------------|----------|----|
| BHOLAV | 25/8 | 0 | 00 | 68 |
| BHOLAV | 25/7 | 0 | 10 | 24 |
| | 22/P | 0 | 14 | 70 |
| | 27 | 0 | 05 | 00 |
| | 81 | 0 | 06 | 33 |
| | 69/A | 0 | 18 | 00 |

[No. 12016/57/81-Prod II]

श्चि-पत

मई विल्ली, 15 जुलाई, 1982

का आ 2984 — पेट्रोलियम भौर खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के मधिकार का म्राजैन) मधिनियम, 1962 (1962 का 50) के मंतर्गन भारत भरकार, पेट्रोलियम, रसायन भौर उबँरक मंत्रालय (पेट्रोलियम विभाग) द्वारा जारी मधिसूचना का आ 2591 दिनांक 3 10 1982 प्रो॰ सं॰ 120 20/7/81-प्रो॰ दिनांक 17.9.81 के संलग्न धनुसूची में भारत के राजपंत्र के भाग II खण्ड 3 उपखण्ड (ii) में (पृष्ठ 3254-72) प्रकाशित तहसील समराला, जिला खुधियाना, राज्य पंजाय ।

| | | के स | यान पर | | | पढ़े | | | | |
|--------------|------------------------|-------|---------------|-----|-----|-------------------------------|----|-----------|-----|-------------|
| नाम ग्राम | खमरा मं० | - | क्षेत्रफल | | | | - | क्षेत्रफल | | |
| | | ţ. | <u>ऐ</u> ० | व० | मी० | · · | ŧ. | Πo | ৰ ০ | -— - मी० |
| 1 | 2 | • | 3 | | | | | | | |
| बादला 177 | 5 7 9 मिन | • • • | 0.0 | 07 | 84 | | | 00 | 07 | 34 |
| रैया/321 | 23/29 मिम | | 00 | 05 | 51 | | | 00 | 00 | 51 |
| चडी/323 | 1 4/27 मिन | | 0.0 | 01 | 26 | 1 4/26 मिन | | 0.0 | 0 1 | 26 |
| धरवाली कला | 16/21/1 मिन | | 0.0 | j 0 | 38 | 16/21/2 मिन | | 0.0 | 10 | 38 |
| 114 | 322 मिम | | 0.0 | 0.0 | 51 | 332 मिन | | 0.0 | 00 | 51 |
| मल माजरा | 764 मिन | | 0.0 | 18 | 73 | | | 00 | 18 | 33 |
| 113 | 932 मिन | | 0.0 | 16 | 95 | 1041-1040 | | 0.0 | 16 | 95 |
| कोटला समसपुर | 4/23/1 मिन | | 00 | 01 | 5 1 | 932 | | 0.0 | 01 | 5 2 |
| 110 | 13/3,4/6/1,6/1,6/2,7/1 | | | | | (11/3, 4, 6/1, 6/2, 7/3, 7/2) | | | | |
| सपरीया | 22/11 /1 मिन | | 0.0 | 00 | 76 | 22/11/2 | | 0.0 | 00 | 76 |
| 94 | 2 2/1 1 / 2 मिम | | 0.0 | 10 | 63 | 22/11/1मिम | | 0.0 | 10 | 63 |

| I | 2 | | 3 | | | | 4 | |
|----------------|-----------------------------------|------|------|------|--------------------------------------|-------------|----------|-------------|
| हरिया खुर्व | 3/19/1 मिन | 19/2 | 18/1 | 18/2 | 8/19/1 मिन | 19/2 | 18/1 | 18/2 |
| 92 | 18/11/1 मिन | 00 | 13 | 16 | 1 8/1 1/2 मिन | 0.0 | 13 | 16 |
| | 1 8/1 1/2 मिन | 00 | 0.0 | 76 | 18/11/1 | 00 | 0.0 | 76 |
| हरिया कला | 4/11 मिन | 00 | 06 | 83 | 4/11/1 मिन | 00 | 06 | 83 |
| 91 | 4/12 मिन | 00 | 0.8 | 10 | 4/12'1 मिन | 00 | 07 | 3 |
| | | | | | 4/12/2 मिन | 00 | 00 | 76 |
| इरना 93 | 3/17 मिन | 00 | 0.0 | 26 | 39/17/1 मिन | 00 | 00 | 26 |
| | 4 3 / 4 मिन | 0.0 | 03 | 04 | 43 [/] 4 [/] 2 मिन | 00 | 03 | 04 |
| ाढी तरकाना | 1 3/2 मिन | 00 | 03 | 29 | | | | |
| 79 | 7 मिन | 00 | 00 | 76 | | | | |
| | 8 मिन | 00 | 11 | 89 | | | | |
| | 9/1 मिन | 00 | 10 | 63 | | | | |
| | 9/2 मिन | 0.0 | 00 | 26 | | | | |
| | 1 <i>3</i> / 2 मिन | 00 | 01 | 01 | | | | |
| | 1 4 ∕ 1 मिन | 00 | 03 | 29 | | | | |
| | 1 4/2 मिन | 00 | 08 | 35 | | | | |
| | 1 5/1 मिन | 00 | 04 | 81 | | | | |
| | 1 5/2 मिन | 00 | 04 | 05 | | | | |
| | 1 6/1 मिन | 00 | 02 | 02 | | | | |
| | 1 4/1 1/4 मिन | 00 | 0.0 | 00 | | | | |
| | 1 9/2 मिन | 00 | 0.7 | 59 | | | _ | |
| | 20/1/मिन | 00 | 05 | 32 | | _ | | |
| | 20/2 मिन | 00 | 07 | 08 | | | | |
| | 20/21नर 22 मिन | 00 | 04 | 55 | | | | |
| | 23 मिन | 00 | 12 | 65 | | | | |
| | 24 मिन | 00 | 02 | | | | | |
| | 23/1 मिन | 00 | 01 | 78 | | | | |
| | 8 मिन | (10 | | 26 | | | | |
| | 9 मिन | | 0.0 | 26 | | | | _ |
| |)। 10 मिन | 0.0 | 10 | 63 | | | | |
| | 10 ामन 1 2 मिन | 00 | 11 | 13 | | | | |
| | | 00 | 0.2 | 0.2 | | | | |
| | 1 3/1 मिन 1 a/a जिल | 00 | 07 | 08 | | | _ | <u>-</u> |
| | 1 3/2 मिन | 00 | 05 | 32 | | | | |
| | 1 4/1 मिन | 00 | 03 | 29 | | wateri | | |
| | 1 4/2 मिन | 00 | 03 | 54 | | | - | |
| | 16/2 मिन | 00 | 0.8 | 10 | | | | |
| | 23/17/1 मिन | 00 | 02 | 0.2 | | | | |
| | 1 7/2 मिन | 00 | 00 | 51 | | | _ | |
| | 25 मिम | 00 | 07 | 84 | | | | |
| | 24/4/1 मिन | 0.0 | 03 | 29 | | | | |
| | 4/2 मिन | 00 | 06 | 58 | | | - | |
| | 5 मिन | 00 | 12 | 40 | | | _ | |
| | 6 मिन | 00 | 00 | 51 | | | | |
| | 3 3 _/ 1 9 मिन | 0.0 | 08 | 60 | | | | |
| | 1 1 2 मिन | 00 | 0.0 | 51 | | 00 | 01 | 26 |
| | 1 1 5 सिम | 00 | 01 | 52 | | | | |
| | 1 1 7 मिस | 00 | 0.0 | 52 | | | | |
| | 378 मिन | 00 | 01 | 26 | | | | |
| | 3 8,5 मिन | 0.0 | 99 | 51 | | | | |
| टि या | 23/11 मिन | 00 | 91 | 26 | | 00 | 04 | 05 |
| 78 | 2 3/1 9 मिन | 00 | 03 | 04 | | 0.0 | 06 | 83 |
| | 20 मिन | 00 | 13 | 16 | | 0.0 | 10 | 12 |
| | 2 2 मिन | 00 | 11 | 64 | | 0.0 | 07 | 08 |
| | 23 मिन | 00 | 04 | 81 | | 00 | 09 | 87 |
| | 24/3/1 मिन | 0.0 | 0.5 | | 24/3/1 मिन | 0.0 | 00 | 26 |
| | 1.1 | = | | ີ້ ໂ | • | 00 | 05 05 | 06 |

| 1 2 | | 3 | | 4 | | |
|-------------------|-----|-----|--------------|-----|----|------------|
| 2 4/ 6 मिन | 00 | 00 | 26 | 00 | 01 | 01 |
| ७ मिन | 00 | 13 | 66 | 00 | 13 | 91 |
| 1 4 मिन | 00 | 01 | 26 | 0.0 | 00 | 51 |
| 2 4/ 1 5 मिन | 00 | 13 | 16 | 0.0 | 11 | 89 |
| 16/1 मिन | 00 | 00 | 26 | | | |
| 2 8/ 3 मिन | 00 | 09 | 36 | 00 | 04 | 0.5 |
| <u> 4</u> मिन | 00 | 0.5 | 82 | 00 | 10 | 88 |
| 6 मिन | 00 | 08 | 60 | 00 | 11 | 89 |
| 7 मि न | 00 | 07 | 84 | 00 | 03 | 04 |
| 1 5 मिन | 00 | 0.5 | 82 | 00 | 03 | 54 |
| 2 9/ 2 मिन | 00 | 02 | 28 29/22 मिन | 0.0 | 02 | 28 |
| 29/11 मिन | 0.0 | 10 | 63 | 00 | 11 | 64 |
| 3 4 ∕ 7 मिन | | | | 00 | 00 | 25 |
| 71 मिन | 00 | 0.0 | 51 | 00 | 00 | 7 6 |

[सं॰ 12020/7/81---प्रोड॰]

एल० एम० गोयल, निदेशक

CORRIGENDUM

New Delhi, the 15th July, 1982

S.O. 2984.—In the Schedule appended to the notification of the Govt. of India, Ministry of Petroleum, Chemicals and Fertilizers (Department of Petroleum) S.O. No. 2591 dated 3-10-1981, notification No. 12020/7/81 prod dated 17-9-1981 issued under sub section) (i) of Section 3 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of rights of user in land) Act 1962 (50 of 1962) published at page 3254 to 3272 dated 3-10-1981 of Gazette of India Part II, Section 3 of sub section (ii) for Tehsil Samrala Distt. Ludhiana State of Punjab,

| Name of village with H. No. | Khasra No. | For | | | | Read | | |
|-----------------------------------|------------------------------|-----------|--------|--------|---------------------------------|--------------------------|--------|--------|
| (1) | (2) | | (3) | | | - | (4) | |
| Badla H. No. 177 | 579 min | 00 | 07 | 84 | | 00 | 07 | 34 |
| Ria H. No. 321 | 23/29 min | 00 | 05 | 51 | | 00 | 00 | 51 |
| Chari H. No. 323 | 14/27 min | 00 | 01 | 26 | 14/26 min | 00 | 01 | 26 |
| Barwali Kalan H. No. 114 | 16/21 min 1 | 00 | 10 | 38 | 16//21 min | 00 | 10 | 38 |
| Mal Majra | 322 min | 00 | 00 | 51 | 332 min | 00 | 00 | 51 |
| H. No. 113 | 764 min | 00 | 18 | 73 | | 00 | 18 | 33 |
| | 932 min | 00 | 16 | 95 | 10401041 | 00 | 16 | 95 |
| | | | | | 932 | | | |
| Kotla Shamashpur H. No. 110 | $\frac{4/23 \text{ min}}{1}$ | 00 | 01 | 51 | | 00 | 01 | 52 |
| | 13/3, 4, 6/1, 6/2, 3 | 7/1, 7/2) | | | (11/3, 4, 6/1, 6/2 areas uno | 2, 7/3, 7/2) changed) | | |
| Tap ⁺ ian H. No. 94 | $\frac{22/11}{1} \min$ | 00 | 00 | 76 | 22/11 — min | 00 | 00 | 76 |
| | $\frac{22/11}{2} \min$ | 00 | 10 | 63 | 22/11 — min 2 | 00 | 10 | 63 |
| Harjon Khurd | (3/19 min | 19 min | 18 mln | 18 min | (8/19 min | 19 min | 18 min | 18 min |
| H. No. 92 | 1 | | 1 | | <u></u> | | 1 | |
| | | | | | | areas unc | | |
| | 18/11 min | 00 | 13 | 16 | 18/11 min | 00 | 13 | 16 |
| | 1 | | | | 2 | | | |
| | 18/11 min | 00 | 00 | 76 | 18/11 min | 00 | 00 | 76 |
| | $\overline{\overline{2}}$ | | | | 1 | | | |

| 1 | 2 | 3 | | | | . 4 | |
|-----------------------------|-------------------------|----------|------------------|--|--------------|------------|----------|
| Harjon Kalan | 4/11 min | 00 | 06 | 83 4/11 min | 00 | 06 | 83 |
| H. No. 91 | | | | ĩ | | | |
| | 4/12 mln | 00 | 08 | 10 \ 4/12 min | 00 | 07 | 34 |
| | | | | $\sqrt{\frac{1}{1}}$ | | | _ |
| | | | | $\begin{cases} 4/12 \\ \rightarrow \min \end{cases}$ | 00 | 00 | 76 |
| | | | | ՝լ 2 | 22 | 4.0 | |
| Urna H. No. 93 | 39/17 min | 00 | 00 | 26 39/17 min | 00 | 00 | 26 |
| | | | | 2 | 00 | 0.2 | • |
| | 43/4 min | 00 | 03 | 04 43/4 min | 00 | 03 | 04 |
| a. 12 m. 11 | 4.6. | 40 | 0.2 | 2 | | | |
| Garhi Tarkhana H. No. 79 | 13/2 min 7 min | 00 00 | 03 0 0 | 29 76 | | _ - | _ |
| 11, 140, 75 | 8 min | 00 | 11 | 89 | | _ | |
| | 9/1 min | 00 | 10 | 63 | - | | _ |
| | 9/2 min | 00 | 00 | 26 | - | _ | <u>-</u> |
| | 13/2 min | 00 | 01 | 01 | - | _ | |
| | 14/1 min | 00 00 | 03 | 29 35 | - | | - |
| | 14/2 min) 15/1 min | 00 | 08 04 | 81 | - | _ | _ |
| | 15/2 min | 00 | -04 | 05 | _ | _ | - |
| | 16/1 min | 00 | 02 | 02 | _ | | |
| | 14/11/4 min | 00 | 00 | 00 | → | - | _ |
| | 19/2 min | 00 | 07 | 59 | - | - | _ |
| | 20/1 min | 00 | 05 | 32 | | - | - |
| | 20/2 min 22 min | 00 00 | 07 04 | 08 55 | | <u> </u> | - |
| | 23 min | 00 | 12 | 65 | | _ | _ |
| | 24 min | 00 | 02 | 78 | | | _ |
| | 23/1 min | 00 | 01 | 26 | **** | | _ |
| | 8 min | 00 | 00 | 26 | - | | - |
| | 9 min | 00 | 10 | 63 | _ | | _ |
| | 10 min 12 min | 00 00 | 11 02 | 13 02 | _ | | - |
| | 13/1 min | 00 | 07 | 08 | - - | _ | _ |
| | 13/2 min | 00 | 05 | 32 | _ | | _ |
| | 14/1 mln | 00 | 03 | 29 | - | _ | _ |
| | 14/2 min | 00 | 03 | 54 | - | | |
| | 16/2 min | 00 | 08 | 10 | | - | _ |
| | 23/17/1 min 17/2 min | 00 00 | 02 00 | 02 51 | - | - | _ |
| | 25 min | 00 | 07 | 84 | _ | _ | _ |
| | 24/4/1 min | 00 | 03 | 29 | | _ | _ |
| | 4/2 min | 00 | 06 | 58 | _ | _ | - |
| | 5 min | 00 | 12 | 40 | - | _ | - |
| | 6 min | 00 . | 00 | 51 | | | - |
| | 33/19 min 112 min | 00 00 | 08 00 | 60 51 | 00 | 01 | |
| | 115 min | 00 | 01 | 52 | _ | 01 | 26 |
| | 117 min | 00 | 10 | 52 | _ | | _ |
| | 378 min | 00 | 01 | 26 | _ | _ | _ |
| | 38 5 min | 00 | 00 | 51 | _ | | |
| Bhatian H. No. 78 | 23/11 min | 00 | 01 | 26 | 00 | 04 | 0: |
| | 23/19 min 20 min | 00 | 03 | 04, | 00 | 06 | 8. |
| | 22 min | 00 00 | 13 11 | 16 64 | 00 00 | 10 07 | 12 |
| | 23 min | 00 | 04 | 81 | 00 | 07 09 | 08 8 |
| | 24/3/1 min | 00 | 05 | $32 \begin{cases} 24/3/1/1 \text{ min} \\ 3/1/2 \text{ min} \end{cases}$ | 007 | 00 | 26 |
| | 24/6: | | | \(\frac{1}{3}\) 1/2 min | 00 | 05 | 00 |
| | 24/6 min 7 min | 00 00 | 00 | 26 | 00 | 01 | Λ. |
| | 7 mm 14 min | 00 | 13 01 | 66 26 | 00 00 | 13 00 | 9: 5 |
| | 24/15 min | 00 | 13 | 16 | 00 | 11 | 8 |
| | 16/1 min | 00 | òo | 26 | 00 | | <u>.</u> |

| PART | II- | -Sec. | 30 | (ih | 1 |
|------|-----|-------|----|-----|---|
| | | | | | |

| ^^ | ~~ |
|----|-----|
| 44 | .,, |
| | |

| 1 | 2 | | 3 | | | 4 | |
|----------------------------|------------|-----|----|--------------|----|-----|----|
| Bhation H. No. 78 (Contd.) | 28/3 min | 00 | 69 | 36 | 00 | 04 | 05 |
| · | 4 min | 00 | 05 | 82 | 00 | 10 | 88 |
| | 28/6 min | 00 | 08 | 60 | 00 | l į | 89 |
| | 7 min | 00~ | 07 | 84 | 00 | 03 | 04 |
| | 15 min - | 00 | 05 | 82 | 00 | 03 | 54 |
| | 29/2 min | 00 | 02 | 28 29/22 min | 00 | 62 | 28 |
| | 29/11 miп | 00 | 10 | 63 | 00 | 11 | 64 |
| | 34/7 min - | | _ | | 00 | 00 | 25 |
| | 71 min | 00. | 00 | 51 | 00 | 00 | 76 |

[12020/7/81-Prcc.]

L. M. GOYAL, Direc r

कर्जा मंत्रालय

(कोयला विमाग)

नई विल्ली 6 मगस्त, 1982

का०आ० 2985 ---केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि इससे उपाबद प्रतुसूची में उल्लिखित भूमि में कोवला अधिप्रान्त किए जाने की संभावना है।

मतः, केन्द्रीय सरकार, कोयला धारक क्षेत्र (मर्जन भारेर विकास) श्रधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उपधारा(1) द्वारा प्रदत्त विकासों का प्रयोग करते हुए, उसमें कोयले का पूर्वेक्षण करने के अपने भागय की मूचना देती है,

2 इस ग्रधिसूचना के ग्रधीन ग्राने वाले क्षेत्र के रेखांक का निरीक्षण सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (राजस्व ग्रनुभाग), दरभंगा हाउस, राची के कार्यालय में या जिलां मजिस्ट्रेट धेनकनाल (उड़ीसा) के कार्यालय में ग्रथना कोयला नियंत्रक, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकता के कार्यालय में किया जा सकता है !

इस अधिसूजना के अधीन भाने जाली भूमि में हितबढ़ सभी स्थिक्त, उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (7) मे निर्दिष्ट सभी नक्शों, चाटौं भीर भन्य दस्सावेजों को, इस अधिसूजना के प्रकाशन की नारीख से 90 दिन के भीतर राजस्व अधिकारी, सेंट्रल कोलकील्ड्स लिमिटेड, दरभंगा हाउस, रांची को भजेंग।

अनुसूची

गोपाल प्रसाद क्लाक (तालचेर कोयला क्षेत्र) रेखांक सं० राजस्व √106/81 तारीख 28-12-81

(जिसमें पूर्वेक्षण के लिए अधिसूचित भूमि वाशित की गई है)।

| ऋम | सं० | ्ग्राम | तहसील | थाना | ग्राम स० | जिला | क्षेत्र | टिप्पणिया |
|-----|----------------------|------------|------------|----------|----------|----------|---------|-------------------|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 1 | मार्दाहरि ह र | पुर | तालचेर | कोयलाखान | 55 | धेनकानस | 307.20 | भाग |
| 2. | चितलपुर | | n | " | 20 | n | 416.00 | भाग |
| | बानाबासपुर | | ,,, | 11 | 41 | " | 346.60 | भाग |
| 4. | पुरावेडा | | 11 | н | 40 | <i>p</i> | 139.12 | पूर्ण |
| | गोपाल प्रस | ाद खामर |)) | " | 19 | " | 96.40 | पूर्ण |
| 6. | तेलीपुर | | 71 | IJ | 27 | 11 | 368.83 | पूर्ण |
| 7. | मारकित व | ल | 17 | | | 11 | 430.00 | पूर्ण |
| 8. | गोपाल प्रस | ा व | 17 | 11 | 18 | n | 961,26 | पूर्ण |
| 9. | कुमृन्डा | | n | " | 11 | 11 | 640.00 | भाग |
| 10 | भालूगाडिय | τ | 37 | 2) | 52 | 1) | 670.77 | पूर्ण |
| 11. | बाधुबोले | | 37 | 1) | 44 | ,, | 397.14 | पूर्ण |
| | कुसुम पाल | | 71 | 17 | 12 | 11 | 103.53 | पूर्ण |
| 13. | घासानावा ह | ली |)) | n | 1 | 11 | 105.38 | पूर्ण पूर्ण |
| 14. | मालीबान्य | | 11 | " | 54 | n | 294.49 | पूर्ण, |
| | नौमुहिन | |)1 | n | 36 | 11 | 167.98 | पूर्ण |
| 16. | भन्तागाडिय | ιτ | n | 1) | 3 | ,,, | 155.93 | पूर्ण |
| | कालमाचुईर | | " | " | в | • | 1506.78 | पूर्ण |
| | बुरिंगा | | " | " | 16 | 1) | 162.04 | पू र्व |

| <u> </u> | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
|------------------------------------|---------------------|----------|-----|------------|---------|--------|
| ı ३. खोलोडर | नालचे र | कोयलाखान | 63 | द्येनक।नल | 1152.50 | माग |
| 20. बीराबारपुर | 71 |) r | 48 | " | 77.29 | पूर्णं |
| 21. माझीका | 71 | 11 | 53 | 11 | 158.66 | पूर्ण |
| 2. सत्यबाहीपुर | •• | 7.1 | 62 | 37 | 73.98 | पूर्ण |
| 23. न(थाग₁म | " | 71 | 34 | 17 | 80.73 | पूर्ण |
| 2.4. तेल ई पासी | U 17 | 11 | 26 | 1) | 239.17 | पूर्ण |
| 2 5. आह्माणाभाहली | r) | " | 47 | 1) | 393,76 | पूर्ण |
| छोटाबरिनी | छेंदीपा द्या | जरापाडा | 64 | 11 | 35.40 | भाग |
| 27. कानकाराई | 11 | 11 | 65 | 77 | 588,80 | भाग |
| .a. पिर ःखा मान | 17 | ,, | 66 | ", | 246.16 | पूर्ण |
| 2 ५. बालीचन्द्रपुर | 11 | 71 | 6,7 | " | 438.74 | पूर्ण. |
| 30. माराक्षित वन (पी०एफ०) | ,, | 7.1 | | " | 1514.00 | पूज |
| 31. नीसा | ,,, | 1) | 69 | م الا | 1152.00 | भाग |
| 32. कालिया क ाटा | 1) | n | 70 | n | 473.60 | भाग |
| 33. रामा बीही | र्घगुल | भंगुल | | ** | 230.04 | भाग |
| 34. निरं जनपु र | ,, | " | 8 | 'n | 192.00 | भाग |
| 35. निरंजनपुर(बी०झाई०टी० II) | ,,, | n | | b | 527.20 | भाग |
| 3.6. मारक्षित नम | ,,, | n | | * 17 | 256.00 | भाग |
| 37. मुबान पुर | 11 | " | 10 | " | 128,00 | भाग |
| 38. जॅमनाली | 17 | " | 15 | - n | 50.20 | भाग |
| वडाझारन | 11 | 11 | 5 | n | 509.01 | पूर्ण |
| io. आरंप्धात वन मुद्धों जंगल - 🕝 🔻 | | 1) | | n . | 35.00 | भाग |
| श्रीठियामाली | ,, | •• | 4 | " | 336.83 | पूर्ण |
| 12. बारामहीटोला | 11 | , | 7 | " | 1132.17 | भाग |
| ≀3. नाटाडा ^र | ,,, | 11 | 3 | 1) | 1429,21 | पूर्ण |
| . 4. ग्रम्बा पाल | " | " | 1 | " | 624.64 | पूर्ण |
| . ग्रम्या पाल जंगल | ,,, | n | 2 | D. | 388,40 | पूर्ण |
| खानमाहीटोला | n | ,,, | 6 | 11 | 51,83 | पूर्ण |
| 17. व्यां जूरिया | तालचेर | कोयलाखान | 15 | 17 | 202.51 | पूर्ण |
| 18. नीलाद्रीपुर | 1) | ,, | 35 |)1 | 34.63 | पूर्ण |
| 19. दामोल | ,, | " | 25 | ,,, | 91.14 | पूर्ण |
| 0. सारंग | 11 | - '' | 60 | <i>y</i> 1 | 75,00 | भाग |
| sı. नाक ई पासी | 13 | 1) | 32 | n | 460.80 | भाग |
| ५२. प्रमान प्रसाद | 17) | ,, | 39 | n | 510.42 | पूर्ण |

कुल क्षेत्र या: 21159.70 एकड़ (लगभग) 8562.91 हैक्टर (लगभग)

मीमा वर्णनः

क----ख रेखा ग्राम कालियाकाटा से होकर जाती है ग्रीर बिदु 'ख' पर मिलती है।

- ख—म रेखा प्राप्त कालियाकाटा, रामाङोही, भुवानपुर, निरंजनपुर, भ्रारक्षित वन, निरंजनपुर बीब्झाईब्टीब-II, बारामहीटोला भीर जभुनाली से होकर प्राप्त बाडाझारन भीर झारक्षित वन कुझों जंगल की भागतः सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती हुई झारक्षित वन कुझीं जंगल होकर जाती है भीर बिंबु 'ग' पर मिलती है।
- ग—ष रेखा तहसील घंगुल और तहसील तालचेर की भागत सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है (जो नाटिडी ब्लाक की सम्मिलित सीमा बनाती है) और विंदु 'घ' पर मिलती है।
- घ—- ङ रेखा ग्राम कालमाचुईन भौर वानरा, बाह्यणवाली भौर वानरा, प्रसान प्रसाव भौर वानरा, न।कईपासी भौर वानरा, वामोल भौर वानरा पुनः नाकईपास् भौर वानरा की भागतः सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है भौर बिंदु 'भ' पर मिलनी है।
- ङ----च रेखा ग्राम नाकईपामी से होकर जाती है (जो ग्रन्नताबैरिनी ब्लाक की सम्मिलित मीमा बनाती है) ग्रीर बिंदु 'च' पर मिलती है ।
- च-छ-ज रेखा ग्राम नाकईपासी भीर सारंग से होकर जाती है भीर गिंदु 'ज' पर मिलती है।
- ज⊶म रेखा ग्राम खाजुरिया भौर कान्धोबोनी की भागतः सम्मिलित सीमा के साथ-माथ होकर, ग्राम खोलोडो से होकर, ग्राम नेलीपुर, भौर खोलोडो की सम्मिलित सीमा केसाथ-साथ होकर, ग्राम-बानाबापुर से होकर जाती है भौर बिंदु 'झ' पर मिलडी है।
- झ-ु--- है । रेखा याम वानावासपुर, चितलपुर, मादीहरिहरपुर, ग्रीर कुमुन्डा से होकर जाती **है भी**र बिद्ध 'ज' पर मिलती है ।

ङा---ट रेखा नदी से होकर, ग्राम छोटाबेरिनी **ग्रीर** कानकाराई से होकर जाती है भीर बिंखु 'ट' पर मिलती है।

ट--ठ रेखा सड़क की भागत पूर्वी विज्ञा के साथ साथ जती है और ग्राम नीस में बिंदु 'ठ' पर मिलनी है।

7—क रेखा बाम मिन से होकर, बाम नीसा और मालीबाह्मणी, कालियाकाटा भीर भारक्षित वन की भागतः सम्मिलित सीमा के साथ-साथ होकर जाती है भीर ब्रारम्भिक बिंदु कि पर मिलती है।

[फा॰सं॰ 19/28/82-सी एम]

स्वर्ण सिंह, प्रवर सचिव

MINISTRY OF ENERGY

(Department of Coal)

New Delhi, the 6th August 1982

S.O.2985,—Whereas it appears to the Central Government that coal is likely to be obtained from the lands mentioned in the Schedule hereto annexed;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to prospect for coal therein;

The plan of the area covered by this notification can be inspected in the Office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section) Darbhanga House, Ranchi, or in the Office of the District Magistrate, Dhenkanal (Orissa), or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta.

All persons interested in the lands covered by this notification shall deliver all maps, charts and other documents referred to in sub-section (7) of section 13 of the said Act to the Revenue Officer, Central Coalfields Limited, Darbhanga House, Ranchi, within 90 days from the date of publication of this notification:

| SCHEDULE |
|---------------------|
| GOPAL PRASAD BLOCK |
| (Talcher Coalfield) |

Drg. No. Rev/106/81, Dated 28-12-81

| | (Talcher Coalfie | ld) | | (Showing lands | notified for p | rospecting) |
|----------------------------|------------------|------------------|-------------------|----------------|----------------|-------------|
| Sl. Village No. | Tahsil | Police Station | Village number | Districts | Area | Remarks |
| (1) (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) |
| 1. Mardahariharpur | Talcher | Colliery | 55 | Dhenkanal | 307,20 | Part |
| 2. Chitalpur | -do- | -do- | 20 | -do- | 416.00 | -do- |
| 3. Banabaspur | -do- | -do <i>€</i> | 41 | -do- | 346.60 | -do- |
| 4. Purabeda | -do- | -do- | 40 | -do- | 139.12 | Full |
| 5. Gopal Prasad Khamar | -do- | -do- | 19 | -do- | 96.40 | Full |
| 6. Telipur | -do- | -do- | 27 | -do- | 368.83 | -do- |
| 7. Reserved forest | -do- | -do- | - | -do- | 430,00 | -do- |
| 8. Gopal Prasad | -do- | -do- | 18 | -do- | 961.26 | -do- |
| 9. Kumunda | -do- | -do- | 11 | -do- | 640.00 | Part |
| 10. Bhalugadia | -do- | -do- | 52 | -do- | 670.7 7 | Full |
| 11. Baghubole | -do- | -do- | 44 | -d o- | 397.14 | -do- |
| 12. Kusumpal | -do- | -do- | 12 | -do- | 103.53 | -do- |
| 13. Asanabahali | -do- | -do- | 1 | -do- | 105.38 | -do- |
| 14. Malibandha | -do- | -do- | 54 | -do- | 294,49 | -do- |
| 15. Namuhin | -do- | -do- | 36 | -do- | 157.98 | -do- |
| 16. Antagadia | -do- | -do- | 3 | -do- | 155.93 | -do- |
| 17. Kalamachuin | -do- | -do- | 6 | -do- | 1506,78 | -do- |
| 18. Khuringa | -do- | -do- | 16 | -do- | 162.04 | -do- |
| 19. Soloda | -do- | -do- | 63 | -do- | 1152.00 | Part |
| 20. Birabai pur | -do- | -do• | 48 | -do- | 77.29 | Full |
| 21. Majhika | -do- | -do- | 53 | -do- | 158.66 | -do- |
| 22. Satyabadipur | -do- | -do- | 62 | -do- | 73.98 | -do |
| 23. Nathagan | -do- | -do- | 34 | -do- | 80.73 | -do- |
| 24. Teleipasi | -do- | -do- | 26 | -do- | 239.74 | -do- |
| 25. Brahmanbahali | -do- | -do- | 47 | -do- | 393.76 | -do- |
| 26. Chhotaberini | Chhend ipada | Jarapada | 64 | -do- | 35.40 | Part |
| 27. Kankarai | -do- | -do- | 65 | -do- | 588.80 | -do- |
| 28. Pirakhaman | -do- | -do- | 6 6 | -do- | 246.16 | Full |
| 29. Balichandrapur | -do- | -do- | 67 | -do- | 438.74 | -do- |
| 30. Reserved forest (P.F.) | -do- | -do- | | -do- | 1514.00 | -do- |
| 31. Nisa | -do- | -do - | 69 | -do- | 152.00 | Part |
| 32. Kaliakata | -do- | -do- | 70 | -do- | 473,60 | -do- |
| 33. Ramadihi | Angul | Angul | | -do- | 230,40 | -do- |
| 34. Niranjanpur | -do- | -do- | 8 | -do- | 192,00 | -do- |

| (1) (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) |
|--------------------------------|---------------|----------|-----------------|-----------|---------|-------|
| 35. Niranrjanpur BIT.II | AnguI | Angul | | Dhonkanal | 527 20 | Pirt |
| 36. Reserved Forest | -do | -do- | _ | -do- | 256.00 | -do- |
| 37. Bhubanpur | -do- | -do- | 10 | -do- | 128.00 | -do- |
| 38. Jamunali | -do- | ,do- | 15 | -do- | 50 20 | -do- |
| 99. Badajharan | -do- | -do- | 5 | ~do~ | 509.01 | Full |
| 0. Reserved forest Kueo Jungle | -do- | -do- | _ | -do- | 35.00 | Part |
| Bethianali | -do- | -do- | 4 | -do- | 336 83 | Full |
| 2. Baramahitola | -do- | -do- | 7 | -do- | 1132.17 | Part |
| 3. Natada | -do- | -do- | 3 | -do- | 1429,21 | Full |
| 4. Ambapal | -do- | -do- | 1 | -doe | 624.64 | -do- |
| 5. Ambapal Jungle | -do | -do- | 2 | -do- | 388.40 | -do- |
| 6. Sanamahitola | -do- | -do- | 6 | -do- | 51.83 | -do- |
| 7. Khajuria | Talcher | Colliery | 15 | -do- | 202.51 | -do- |
| 18. Niladripur | -do- | -do- | 35 | -do- | 34.63 | -do- |
| 19. Damol | -do- | -do- | 25 | -do- | 91.14 | -do- |
| 0. Sarang | -do- | -do- | 69 | -do- | 75.00 | Part |
| 51. Nakeipasi | -do- | -do- | 32 | -do- | 450.80 | -d >- |
| 52. Prasan Prasad | - d o- | -do- | 39 | -do- | 510 42 | Full |
| | Total are: | | ucros (approx.) | | | |

Boundary Description:-

| Λ—B | line passes through village Kaliakata and meets at point 'B'. |
|--------|--|
| ВС | line passes through villages Kaliakata, Ramadihi, Bhubanapur, Niranjanpur, Reserved Forest, Niranjanpur BIT-II, Baramahitola and Jamunali, passes along part common boundary of villages Badajharan and Reserve forest Kueo Jungle through reserved forest Kueo Jungle and meets at point 'C'. |
| C—D | line passes along the part common boundary of Tahsil Angul and Tahsil Talcher (which forms common boundary of Natidi Block and meets at point 'D'. |
| D— E | line passes along the part common boundary of villages Kalamachuin and Danra, Brahmanbahali and Danra, Prasan Prasad and Danra, Nakeipasi and Danra, Damol and Danra, again Nakeipasi and Danra and meets at point 'E'. |
| E⊸F | line passes through village Nakeipasi (which forms common boundary of Anantaberini Block) and meets at point 'F'. |
| F.G.H. | lines pass through villages Nakcipasi and Sarang and meet at point 'H'. |
| н1 | line passes along part common boundary of villages Khajuria and Kandhobuani, through village Soloda, passes along common boundary of villages Telipur and Soloda, through village Banabaspur and meets at point 'I'. |
| I—J | line passes through villages Banabaspur, Chit dpur, Mardahariharpur and Kumunda and moets at point 'J'. |
| J→K | line passes through river through village Chhotaberini and Kankarai and meets at point 'K'. |
| K-L | line passes along part eastern side of road and meets as point 'L' in village Nisa. |
| L-A | line passes through villago Nisa, passes along part common boundary of villages Nisa and Malibrahmani, |

[No. 19/28/82-CL]

SWARAN SINGH, Under Secy.

रामीण विकास संज्ञालय

नई दिल्लीं, 13 भगस्स, 1982

काल्आः 2986 — 25 जुलाई, 1967 की अधिमुचना मध्या एफ० 9-1/66-ए एस के तहन गठित सम्बाक् अपीलीय पैनल नत्काल अस्तित्व-हीन हो जाएगा।

[सं॰ 9-3/72-ए एम]

Kaliakata and Reserve forest and meets at starting point 'A'.

MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 13th August, 1982

S.O. 2986,—The Appellate Panel of Tobacco, constituted vide Notification No. F. 9-1/66-ΛM, dated the 25th July, 1967, shall cease to exist with immediate effect.

[No. 9-3/72-AM]

লাওলাও 2987— यसस्पति तेल श्रेणीकरण श्रीर चिल्लांकन निधम 1955 में संगोधन करने के लिए कतिपय नियमों का एक प्रारूप कृषि उपज (श्रेणीकरण भौर चिह्यांकन) अधिनियम, 1937 (1937 का 1) की धारा 3 द्वारा भेषेक्षित रूप में भारत सरकार के ब्रामीण पुनिर्माण मंत्रालय की अधिमूचना संख्या का० मा॰ 39 तारीख 24 दिसम्बर, 1979 के मधीन भारत के राजपन्न भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) तारीख 5 जनवरी, 1980, पुष्ठ 41-42 पर प्रकाणित किया गया था जिसमें उक्त प्रधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की भविभ की समाप्ति के पूर्व उन सभी अयक्तियों से घाक्षेप और सुकाव भांगे गए थे, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है।

भौर उक्त राजपत्न 12 जनवरी 1980 को जनता को उपलब्ध करा दिया गया था ,

मीर केन्द्रेय भरकार ने उक्त प्रारूप की बाबत प्राप्त भाक्षेपों भीर मुझावों पर विवार कर लिया है,

भतः, भव, केन्द्रीय सरकार, जन्त अधिनियम को धारा 3 द्वारा प्रवत्स शक्तियों का प्रधीग करने हुए, वनस्पति तेल श्रेण करण भीर विह्नांकन नियम, 1955 का भीर संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, घर्यात :----

- 1. (1) इन नियमों का सीक्षण्त नाम बनस्पति तेल श्रेणे।करण घोर चिह्नाकन (संशोधन) नियम, 1982 है।
 - (2) वे राजपल में प्रकाशन की तारीख की प्रवृत्त हाँगे।
- बनस्पति श्रेणं करण भीर बिह्यांकन नियम, 1955 में,—

मिलावट, उच्छिष्ट तथा श्रन्य

- (i) निगम 3 में "4 से 12" शंको भीर शब्द के स्थान पर " 4 से 13 " भंक भीर शब्द रखे जायेंगे।
- (ii) कियम 4 में "4 से 12" ग्रंकों ग्रीर शब्द के स्थान पर "4 से 13" ग्रंकगीर शब्द रखें जायेंगे।
- (iii) भनसूची 2 (घ) में सभी वनस्पति केल श्रेणी "एक्स" से संबंधिन प्रविष्टि (10) को प्रविष्टि (11) के रूप में पून: संवर्धीकन किया जाएगा

| "(1+) | | धान की भूसि चौकर का बोल परिष्कृत (खाद्य) | | | | | नी ल | गोण (मोव)" |
|--|---|--|---------------------------------------|--------------------|--|---|--|--|
| | (iv) अनुसूर्णः 12 के प | श्च _ा न निम्सलिखित अनुसूर्च। म न | : स्थापित की | जाएगी, अथा | त | | | |
| | | | "मनुमूर्वो II (नियम 3 व्र | | | | | |
| मव भेर सीम | वर्णन | सेल के ले.बी विनिदिष्ट माण्ड माप- गुरूत्व मान पर 30/30 से०⁴ रंग जिसे Y+SR के रूप में मिश्यक्त किया गया है (से गहरा नहीं)* | 40 से ग्रे० पर भ्रप- 'वर्तनांक* | साबुनी करण मान* | भ्रायोडीन (मान) (विजय पद्धिति)≱ | श्रसानृती कारक पदार्थ (प्रतिशत से श्राधिक नहीं)* | ग्रस्लमान प्रतिशत से प्रधिक नहीं* | मश्रह्मा तथा भविषये भशुद्धतः। भार के भनुसार अधिकतम् प्रतिशत* |
| 1 | 2 | 3 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| सटोवा की फुट गये द्वाः विलाया जाएगा (ई) श्रे षी उपयोग का प मिट्टीः संक्रियि जाग्गा | िलन पामक्रोमिन के ध हि प्रक्रिया के समय उत न के छिलके की परतों क घोल प्रक्रिया से निका जिसमें भा०मा० 034 1966 के प्रनुसार के ट्रैकसीन विलायक एकार जल्ला प्रवृक्ष से विरंजित करके और | से ला 70 जाच क क से ले ज्या लेख स्था | | | 90 से 105 तक | 3 0 | 0.5 | 0 10 |

2

विजातीय पदायों से भौर मिलावटी रंग भौर सुवाम तत्वों से भुक्त होगा । बंद कप पदाित से ज्वलाक 250 सें से कम नहीं होगा । छने कुए नेल का नमूला 35 से जापकम पर 24 घंटे रखों जाने के पश्चात् भाविलता से मुक्त होगा।

*भा॰मा॰ 3448- 1968 से लिया गया।

[स॰ एफ॰ 10-7/79-ए॰एम॰] राम सिंह, भ्रवर सचिव

S.O. 2987.—Whereas a draft of certain rules further to amend the Vegetable Oils Grading and Marking Rules, 1955, were published as required by section 3 of the Agricultural Produce (Grading and Marking) Act, 1937 (1 of 1937), at pages 42 and 43 of the Gazette of India, Part II—Section 3—Sub-Section (ii), dated the 5th January, 1980, with the notification of the Government of India, in the Ministry of Rural Reconstruction, No. S.O. 39, dated the 24th December, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby before the expiry of a period of forty five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 12th January, 1980;

And whereas objections and suggestions received in respect of the said draft rules from the public were considered by the Central Government;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Vegetable Oils Grading and Marking Rules, 1955, namely:—

RULES.

- 1. (1) These rules may be called the Vegetable Oils Grading and Marking (Amendment) Rules, 1982.
 - (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Vegetable Oils Grading and Marking Rules, 1955,
 - (i) in rule 3, for the figures and word "IV to XII", the figures and word "IV to XIII", shall be substituted;
 - (ii) in rule 4, for the figures and word "IV to XII", the figures and word "IV to XIII" shall be substituted;
 - (iii) in Schedule II(d), the entry (x) relating to All Vegetable Oils 'X' grade, shall be renumbered as entry (xi) and before entry (xi) so renumbered, the following entry shall be inserted, namely :—
 - "(x) Rice Bran Oil Refind* Mauve" (edible)
 - (iv) after Schedule XII, the following Schedule shall be inserted, namely:—

"SCHEDULE XIII"

(See rules 3 and 4)

Greed right tien and definition of quality of Rice Bran Oil)

| G, ade designs- tion | D scription | Colour cn Lovib nd serlain 1" cell expressed is Y +5R (Nat deeper than)" | Sp eific gravity ?0°/?0° C* | Refirctive index rt 40° C* | Seperifi- ertien velue* | Icdir e value (Wij's muthed) | Unst po- riffs ble matter (rot mare ther per cent)* | V: lue (rot more (hrn)* | Moisture (17d ir- (17d ir- (17d ir- (18d impuri- (18d imp |
|----------------------------|--|---|--------------------------------------|----------------------------------|-------------------------------|---------------------------------------|--|-------------------------------|--|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 01 |
| Refined (cdible) | Rice bran oil shall be obtaired from the rice bran layers a rourd the endosperm of rice, removed during the process of rice milling from paddy of O.yza Sativa Linn. Fam. Gramines by a process of solvent extraction using food grade hexame solvent conforming to IS: 247((E)—1966. The refining of the oil shall be done by neutralisation with alkali, bleaching by adsorbant earth and/or activated carbon and deodourised with | domir ent | 0.910 to 0.920 | 1.4600 to 1.4700 | 180 to 195 | 90 to 105 | 3.0 | 0 5 | 0.10* |

1

steam. No other chemical agent shall be used. The oil shall be clear and free from rancidity, adulterants, sediment, suspended and other freeign matter and added colouring and favorating substance. The flack point by closed cup method shall not be less than 250-C. The filtered sample of the oil shall be free from turbidity after kauping at 35°C for 24 hours."

*Adopted from IS: 3448-1968

[No. F. 10-7/79-A.M.] RAM SINGH, Under Sccy.

अंतरिक विमाग

बंगलौर 14 जुलाई, 1982

का० आ० 2988.— केन्द्रीय सरकार, सरकारी स्थान (ध्रप्राधिकृत अधिभोगियों की बेवखली) ग्राधिनियम, 1971 (1971 का 40) की धार, 3 द्वारा प्रदश्स प्राक्तियों का प्रयोग करते हुए नीने वी गई सारणी के स्तंभ (1) में निर्दिष्ट ग्राधिकारी को, जो सरकार के राजपित्रत ग्राधिकारों की पनित के समतुल्य ग्राधिकारी है, उक्त ग्राधिनियम के प्रयोगनों के लिए सम्पदा ग्राधिकारी के एप में नियुक्त करती है, जो उक्त सारणी के स्तर्भ (2) में विनिष्टि सरकारी स्थानों की बाबत ग्रंपनी ग्राधिकारिता की स्थानीय सीमाग्रों के भीतर उक्त ग्राधिनियम द्वार, या उसके ग्राधीन सम्पदा ग्राधिकारी को प्रवत्त ग्रावित्यों का प्रयोग ग्रार ग्राधिरोपित कर्तव्य का पालन करेगा।

भ्रष्ठिकारीका पदाभिधान सरकारीस्थानों के प्रवर्गे और स्थानीय श्रिधिकारिता की सीमाएं

 $(1) \qquad (2)$

निर्माण इंज नियर, सिबिल इंजीनियरी प्रभाग, मंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, मंतरिक्ष विभाग, ऋहमदाबाद । रजिस्ट्रीकरण जिला सिरोसही भौर भ्राक् रोड के उप-जिले का भ्राब् रोड तालुके के मौज भ्राब् का सर्वे सं० 49, जिसका माप 4.809 एकड़ भर्थात् 19,260 वंग मीटर या उसके संगक्षा है, इसक साथ-साथ एक बगला उपगृह भ्रोर भ्रन्य भवन तथा "हिल ब्यू" के नाम से ज्ञात उसपर निर्मित संरचना, जिसकी मकान सं० 232/ माउंट भ्राब् नगरपालिका का वार्ड सं० 4, जिसकी सोमाएं निम्नलिखित हैं:

पूर्व : सरकारी भूमि

पक्ष्मिम : के०एल०सेट० का प्लाट

उत्तर: सरकारी भूमि

दक्षिण: सरकारी भूमि घौर पिलियीम रोज

[सं० 9/2(2)/82-III]

के० भार० रामनाथ, श्रवर सचिव,

DEPARTMENT OF SPACE

Bangalore, 14th, July 1982

S.O. 2988.—In exercise of the p wers conferred by Section-3 of the Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Act, 1971 (4) of 1971) the Central Government hereby appoint

the Officer mentioned in a lumn (1) of the Table bolow, being an officer equivalent to the rank of Gazetted Officer of Government to be Estate Officer for the purpose of the said Act, who shall exercise the powers conferred and perform the duties imposed on Estate Officer by or under the said Act, within the local limits of his jurisdict on in respect of the public premises specified in the corresponding entry in column (2) of the said Table.

TABLE

Designation of the Officer Categor es of public premises and local limits of the jurisdiction

(1)

(2)

Construction Engineer, Civ I Engineering Division, Space Applications Centre, Department of Space, Ahmedabad. Survey No. 49 of Mouje Abu ct Abu Read Taluka the Registration Dist. Suchi and Sub-District of Abu Road, admeasuring 4 809 acres i.e., 19,260 sq. mtrs. or thereabouts together with a bunglow, outhouse and other buildings and structure constructed thereof known as 'H II Viow' bearing house No. 232/Ward No. 4 of the M unt Abu, Nagarpalika and bounded as fill cwst-

East : Government Land
West : Plot No. K.L. Soth
North : Government land and
South : Government Land
and Pilgrim Road

[No. 9/2(2)/82-II.]

K. R. RAMNATH, Under Socy

भौवहन और परिवहन संज्ञालय

(परिवहम पक्ष)

नई दिल्ली, 10 प्रगस्त,1982

का॰ आ॰ 2989—केन्द्रीय सरकार, आक कर्मकार (नियोजन का वि-नियमन) ग्रंथिनियम, 1948 (1948 का 9) की घारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए, कलकत्ता डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) स्कीम, 1970 का कित्यय ग्रीर संशोधन करना चाहती है जैसा कि उक्त धारा से अपेक्षित है, प्रस्तावित संशोधनों का निम्नलिखित प्रारूप छन सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिए प्रकाशित िया जा रहा है, फिनके उरासे प्रभावित होने की समायना है। इसके द्वारा सूचना दा आती है कि उस्त प्रारूप पर इस फाधसूचना के राजपत्न में प्रभाजन की तारीख से साट दिन की अवाध का समाप्ति के परचात ।वचार किया जाएगा।

इस प्रकार विक्तिंदिष्ट ध्रविध से पूर्व नियमों के उक्त प्रारूप का बाबत जो भी प्राक्षेप या गुक्राव किसी स्थापत से प्राप्त होंगे, कन्द्राय सरकार उन पर विचार करेगी।

शस्य स्कीम

- 1 इस स्थान का सक्षिप्त नाभ क्लाफला डाक वर्मकार (नियाजन का विनियमन) दूसण संशोधन स्कान, 1982 है।
- 2 कलकत्ता डाक फनवार (नियोजन का विक्तिमन) स्काम, 1970 की अनुसूर्वा 4 की भव 3 (1v) के पण्यात् निम्नार्णाखत परत्तुक अन्त-स्थापित किया जाएगा, धर्यात्

''परन्तु यन्नमात्तत स्विमिश होरण असके अन्तर्गत घटात वर हेरि भी है, के कायकरण का दशा में, किसी विष्णान्य स्थान पर सभी नियन्नक लेबला अले ऐसे प्रत्येष रियमिंग इत्या के प्रभालन के लिए एक विधि पालक भीर एक भारभोचन विधा भाषक रखा जाएगा।"

[फा॰ स॰ एल की सः/32/52-गन 4]

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(Transport Wing)

New Delhi, the 10th August, 1982

S.O. 2989.—The following draft of Scheme further to amend the Calcutta Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme, 1978, which the Central Government proposes to make in exercise of the powers conferred by subsection (1) of section 4 of the Dock Workers (Regulation of Employment) Act, 1948 (9 of 1948), is hereby published as required by the said sub-section for the information of all persons likely to be affected thereby, and notice is hereby given that the said draft will be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date of publication of this notification in the Official Gazette

Any objections or suggestions which may be received from any person with respect to the said draft before the period so specified will be taken into consideration by the Central Government.

DRAFT SCHEME

- 1 This Scheme may be called the Calcutta Dock Workers (Regulation of Employment) Second Amendment Scheme, 1982.
- 2 In the Calcutta Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme. 1978 in Schedule VI, after item No 3(iv), the following proviso shall be inserted, namely .—
 - "Provided that in the case of working of mechanically operated swinging Dorrick including cantilever swinging Derrick, one Winch Driver and one relieving Winch Driver shall be booked for operation of every such swinging Derrick having all the centrelling levers at one particular place"

[F No LDC/32/82-L IV]

(श्रम प्रमाग)

नई दिल्ली, 11 भगस्त, 198?

का॰ आ॰ 2990 -- केन्द्रीय मरकार डाक वर्मेचारी (मियोजन का विनियमन) प्रधिनियम 1948 (1948 का 9) की घारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रवल्त मिक्नियों का प्रयोग करते हुए कोचीन डाक क्रमंकार (नियोजन

का विनियमन) स्कीम, 1959 का कित्य और सणीधन करना चाहती है। जैं। कि उसन उपधारा में अपेक्षित है प्रस्तावित सशाधनों का निम्निनिखा, प्राच्य उन गर्मी व्यक्तियों की मानवारों के लिए प्रशाणित किया जा रहा है जिनके उससे प्रभावित होने की सभावना है। इसके द्वारा मूचना वो जाती है कि उक्त प्राच्या पर इस प्रधिसूचना के राजात में प्रकाशन की तारीख से साठ दिन के प्रवसान पर था उसके पश्चात विचार। कथा जाएगा।

उक्त अवधि के प्रवसान के पूर्व नियमों के उक्त प्रारूप की बाबत जो भी आक्षेप या मुकाब किसी ब्यक्ति से प्राप्त होंगे केन्द्रीय नीरकार उन पर विचार परंगी।

प्रारूप नियम

- 1 (1) इस स्तीम का साक्षण्य नाम नाचन द्वाव वर्मकार (नियोजन का विनियमन) (संशोधन) स्काम, 1982 है।
- अकोचीन काक कर्मकार (नियोजन का विानचमन) स्कीम, 1958 की अनुसूची में मद (छ) के पश्चात् निस्नर्लिखित मद अनस्थापित की जाएगा, अर्थान् —
 - ''(ज) मिलान/टेबल पर्यवेक्षक '

[स० एस० घी० एक्स० / 18 / 8 2 एल० 4]

बी० शंकर्रालगम, उप स*ि*वव

(LABOUR DIVISION)

New Delhi, the 11th August, 1982

S.O 2990.—The following draft of a Scheme further to amend the Cochin Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme, 1959, which the Central Government proposes to make in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Dock Workers (Regulation of Employment) Act, 1948 (6 of 1948), is hereby published as required by the said sub-section for the information of all persons likely to be affected hereby; and notice is hereby given that the said draft will be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date of publication of this notification in the Official Gazette.

Any objections or suggestions which may be received rom any person with respect to the said draft before the expiry of the said period will be considered by the Central Government

DRAFT SCHEME

- 1 This Scheme may be called the Cochine Dock Workers (Regulation of Employment) (Amendment) Scheme 1982.
- 2 In the Cochin Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme, 1959, in the Schedule after item(g) the following item shall be inserted, namely '—
 - "(h) Tally/Table Supervisor"

[No LDX/18/82-L IV]

V SANKARALINGAM, Dy Secy.

(नौबहन महानिवेशालय)

बम्बई, 13 धगम्म, 1982

(व।णिज्य पौत परिवहन)

का० आ० 2991—भारत सरकार, नौबहन भीर परिबहन महासय की भिधमूचना स० एम०एस०ई० (६)/77 एम०टी० नारीख 13 जून 1977 के साथ पठिन भारतीय वाणिज्य पोत परिबहन (नाविक नियोजन कार्यालय सम्बई) नियम, 1954 के नियम 5 के उप-नियम (1) क्षारा प्रवक्त शक्तियो का प्रयोग करते हुए नौबहन महानियेशक, इस भिधमूचना के राजपन्न में प्रकाशित होने की नारीख से दो वर्ष की भविध

के लिए बम्बई पत्तन पर (नाधिक नियोजन कोई) (विदेशभागी) की एतव्-द्वारा नियुक्ति करते हैं जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे, अर्थात् :-- नौबहन महानिवेशक 2 नौबहन उप महानिदेशक न(विक नियोजन के सरकार के प्रभारो 3 श्रम प्रायुक्त, बम्बई प्रतिनिधित्य नाविकपाल, धम्बई करने काले 5. निवेशक नाविक नियो-भवस्य जन कार्यालय, बस्बई 6. पत्जन स्वास्थ्य प्रधिकारी बम्बर्ड कप्तान एम०एस० कोरेरा

8. श्री के० एम० दलाल 9. श्री टी॰एस॰ नारायन 10. श्रीके०एम० मण्डारकर पोतस्थामियों के प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य 11. श्री ही । एस । कुमाना 12 कंभोड़ोर एन०के० शर्मा

13. डा० लि०म्रो० बॉम 14 श्री याकक्ष एम० सेरंग नाविकों के 15 श्रीय०एम० ग्रल्मेडा प्रतिनिधिरव करने वाले 16. श्री एम० मोदद 17. श्री एम०टी० जोसेफ सदस्य 18. श्री ई० प्रमाकरन

मीवहन महानिवेशक और माविक नियोजन कार्यालय, बम्बई के प्रभारी नौबहुत उप महानिदेशक उक्त बोर्ड के कमशः प्रध्यक्ष धीर उपाध्यक्ष होंगे। निदेशक, माबिक नियोजन कार्यालय, अम्बई उक्त बोर्ड के भवस्य-समिव क्षोंगे ।

> [प्र- 25(1) सी॰प्रार॰ए०/79] मा० कु० पावर, नौषहन उप महानिवेशक

(Directorate General of Shipping)

Bombay the 13th August, 1982

MERCHANT SHIPPING

S.O. 2291.—In exercise of the powers conferred by sub-Rule (1) of rule 5 of the Indian Merchant Shipping (Seamen's Employment Office, Bombay) Rules, 1954, read with the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport No. MSF(6)/77 MT, dated the 13th June, 1977 the Director General of Shipping bereby appoints Seamon's Employment Board (Foreign Going) at the Port of Bombay for a period of two years with effect from the date of publication of this notification in the Official Gazette, consisting of the following members, namely:-

1. The Director General of Shipping 2. The Deputy Director General of SI ipping. Incharge of the Seamon's Employment Members 3. Labour Commissioner, Bombay. Representing 4. The Shipping Master, Bombay. Government, 5. The Director,
Sea near's Employment Office, Bombay. 6. The Port Health Office, Bombay

7. Capt. M. X. Corera. 8. Shri K. N. Dalal. 9. Shri T. S. Narayan. 10. Shri K. S. Bhandarkar.

Mombors Representing Shipowners.

- 11. Shri D.S. Dumana. 17. Comdr. I.K. Sharma. 13. Dr. Lab Barnes.
- 14. Shri Yakub M. Sorang. 15. Shri U.M. Almeida. 16. Shri M. Moidoo
- 17. Shrl M. T. Joseph.

18. Shri F. Prabhakaran.

M:mbore Represe ting Seame 1.

The Director General of Shipping and Deputy Director General of Shipping incharge of the Seamer's Employment Office, B. mbay shall respectively be the Chairman and the vice Chairman of the aforesaid Board. The Director, Seamen's Employment Office, shall be member-Secretary of the aforesaid Board,

[N > 25 '1) CR4/79]

B.K. PAWAR, Deputy Director General of Shipping.

विक्की विकास प्राधिकरण

नई दिल्ली, 31 मई, 1982

का (० अ (० 2992 - विल्सी विकास मधिनियम, 1957 (1957 की सं० 61) की घारा 57 के भ्रन्तर्गत बनाए गए डी०डी०ए० (मैनेजर्मेट एंड डिस्पीजल भाक हार्कमिण इस्टेट्म) रेगुलेशन्स 1968 के रेगुलेशन 4 द्वारा उपाध्यक्ष दिल्ली विकास प्राधिकरण में निह्नित गक्तियों का प्रयोग करते हुए उपाध्यक्ष विल्ली विकास प्राधिकरण, सहायक निवेशक, बट्टा प्रशासन (भावास) को उक्त रेगुलेशन्स के भन्तर्गन किए जाने वाले सभी भनुबन्धों को निष्पा-पादित करने के लिए प्राधिकृत करते हैं।

[सं० एफ 1 (17) /82-एल ए जी (एच)]

नाय राम, सचिष

DELHI DEVELOPMENT AUTHORITY

New Delhi, the 31st May, 1982

S.O. 2992.—In exercise of the power vested in him under Regulation 4 of the D.D.A. (Management and Disposal of Housing Estates) Regulations 1968 framed under Section 57 of the Delhi Development Act, 1957 (No. 61 of 1957), the Vice-Chairman, Delhi Development Authority, authorises, Assistant Director Lease Admn. (Housing) to execute agreements made under the said Regulations,

> [No. F. 1(17)/82-LAB(H)] NATHU RAM, Secy.

संचार संत्रालय

(डाक सार बोर्ड)

नई विल्ली, 10 घगस्त, 1982

का०आ० 2993--स्थायी मावेश स० 627, विनोक 8 मार्च, 1960 द्वारा लाग किए गए भारतीय नार नियम, 1951 के नियम 434 के खंड III के पैरा (क) के अनुसार डाक-नार महानिदेशक ने वोम्मान्ती वानागना ग्रालि, ग्रोक, ग्रत्माकुर, बलगोडे, बस्य ग्रत्माकुर में टेलीफोन केन्द्र में विनांक 1-9-1982 से प्रमाणित वर प्रणाली खागू करने का निश्चय किया है।

[म॰ 5-6/82-पी एच बीवीटी]

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(P&T Board)

New Delhi, the 10th August, 1982

S.O 2993—In pursuance of paia (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by SO. No 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifics 1 9-1982 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Vommangi, Banaganapalli, OWK, Atmakur, Velgode, Bandi Atmakur Telephone Exchanges Andhra Pradesh Circle

[No. 5-6/82 PHB(Pt.)]

का शाह 2994 - स्थार्य। भादेश सं० 627 विनाक 10 भगस्त, 1982 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खड III के पैरा (क) के भ्रतुमार आक-नार महानिधेशक ने, कावालम, पुलिकल, मृहार, चपकुत्तम, रामकरि, कोनुत्ते हरी, टेलीफोन केन्द्र में दिनाक 1-9-1882 से प्रमाणित वर प्रणाली लागू करने का निष्क्य किया है।

[स॰ 5~10/82-पी एच की]

SO 2994—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by SO. No 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies 1-9-1982 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Pulincunnu, Ramangary, Kalvalam, Champakulam, Mutiar & Kozhencherry Telephone Exchanges, Kerala Circle

[No 5-10/82 PHB]

नई दिल्ली, 11 अगस्त, 1982

भावता 2995 — स्थायी ग्रादेश सक्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खड़ III के पैरा (क) ने प्रनुसार डाव तार महानिदेशक ने ग्रान्थिपति ढेलीफोन नेन्द्र मे दिनांक 1-9-1982 से प्रमाणित दर प्रणाली लाग करने का मिश्यम किया है।

[सख्या 5-4/82-मी० इच ० बी०]

New Delhi, the 11th August, 1982

S.O. 2995.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifics 1-9-1982 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Aundipatti Telephone Exchange, Tamil Nadu Circle.

[No. 5-4/82-PHB]

नई विल्ली 19 धगस्म, 1983

चरा० आर. १८९६ -- स्थायी आदेश संख्या ६२७, दिनांक ८ मार्च, 1980 हारा लागू किए गए भारतीय सार नियम, 1951 के नियम 434 के खंड III के पैरा (क) के अनुसार डाक-सार महाविदेशक ने काल-वेरी टेलीफान केन्द्र में बिनाक 1-9-1987 में प्रमाणित दर प्रणाली लाग करन का निकास किया है।

[सक्या 5-10/५०-पीएकार]

म्रार०सी० कटाटिया सहायय महानिदेशय (पी०णच०म०)

New Delhi, the 19th August, 1982

S.O. 2996.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by SO No 627 dated 8th March, 1960 the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies 19 1982 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Kolencherry Telephone Exchange, Kerala Circle

[No 5-10/82-PHB]

RC KATARIA Assistant Director General (PHB)

(भारतीय डाक तार विभाग) मंडल इजीनियर, नार का कार्यालय पालक्काड पालक्काड, 13 मई, 1982

का०आ० 2997 --- केन्द्रीय सिविल सेवाए (ग्रस्यायी सेवाए) नियम, 1965 के नियम 5 के उपनियम (1) के परन्तुक के अनुसरण में मैं ए० परमेण्वरन, मंडल डजीनियर नार, पालक्काड एतव्दारा श्री पेन्यू जीसफ, हेलीफोन आपरेटर, टेलीफोन केन्द्र, आल्क्तूर की सेवाए नत्काल समाप्त करता ह और निदंश देता हू कि वह सेवा समाप्ति के तुरन्त पहले जिस दर पर वेनन तथा भन्ते प्राप्त करना था उस दर पर, यथास्थिति, नाटिस की अविध नक का या ऐसा नोटिस एक महीने से जिनने दिन के लिए कम पडता है उतने दिन तक का भनाओ महित वेनन का दथा वरने के लिए हकदार होगा ।

[स॰ एक्स/82/टी॰-एम-एन/4]

(INDIAN POSTS & TELEGRAPHS DEPARTMENT) (Office of the Divisional Engineer Telegraphs, Palghat) Palghat, the 13th May, 1982

Order of termination of service issued under the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965—

S.O 2997.—In pursuance of the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965, I. A Parameswaran, Divisional Engineer, Telegraphs, Palghat hereby terminate forthwith the services of Shri Mathew Joseph, Telephone Operator, Alathur Exchange and direct that he shall be entitled to claim a sum equivalent to the amount of his pay plus allowances for the period of notice at the same rates at which he was drawing them immediately before the termination of his service, or as the case may be, for the period by which such notice falls short of one month

[Memo No X/82/TMN/4]

का॰ आ॰ 2998 — केन्डीय सिविल सेवाए (ग्रस्थायी सेवाए) नियम, 1965 के नियम 5 के उपनियम (1) के परन्तुक के प्रमुसरण में मैं ए॰ परमेण्वरन, महल हजीनियर, तार पालक्काड एतव्हारा श्री॰ बी॰ साजन, टेलीफोन ग्रापरेटर, टेलीफोन केन्द्र, प्रालपुर की सेवाए तरकाल समाप्त करता ह भौर निदेश देता हू कि वह सेवा समाप्ति के तुरस्त पहले जिस दर पर वेतन तथा भरों प्राप्त करता था हम दर पर यथास्थिति नोटिम की प्रविध सक का या ऐसा नोटिस एक महीने से जितने दिन के लिए कम पड़ता है उतने विन नक का भत्ताधी सहित वेतम का वावा करने के लिए हकवार होगा।

[स॰ एक्स/82/टी-एम-एम/2]

Order of termination of service issued under the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965:—

SO. 2998—In pursuance of the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965, I, A. Parameswaran, Divisional Engineer, Telegraphs, Palghat hereby terminate forthwith the services of Shri V. Sajan, Telephone Operator, Alathur Exchange and direct that he shall be entitled to claim a sum equivalent to the amount of his pay plus allowances for the period of notice at the same rates at which he was drawing them immediately before the termination of his service, or, as the case may be, for the period by which such notice falls short of one month.

[Memo No. X/82/TMN/2]

कार आरं 2999 — केन्द्रीय सिविल मेवाए (प्रस्थायी सेवाए) नियम 1965 के नियम 5 के उपनियम (1) के परन्तुक के अनुसरण में मैं ए० परमेपवरन, मडल इजीनियर तार, पालक्वाड एतद्वारा श्री एन० राजन्द्रन, टेलीफोन प्रापरेटर, टेलीफोन केन्द्र श्रानक्त्र की सेवाए तत्कार समाप्त करता ह भीर निदेश देता ह कि वह सेवा समाप्ति के पुरन्त पहले जिस वर पर बेतन तथा भक्ते प्राप्त करता था उस दर पर, श्रथा-स्थिति नोटिस की खर्याय तक का या ऐसा नोटिस एक महीने से जितने दिन के निये जाम पड़ता है उतने दिन तक का भक्ताओं महित बेनन का दावा करने के लिए हकदार होगा।

[स॰ एक्स/82/डी०-एम-एन/3]

Order of termination of service issued under the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965.

S.O. 2999.—In pursuance of the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965, I, A. Parameswaran, Divisional Engineer, Telegraphs, Palghat hereby terminate forthwith the services of Shri N. Rajendran, Telephone Operator, Alathur Fxchange and direct that he shall be entitled to claim a sum equivalent to the amount of his pay plus allowances for the period of notice at the same rates at which he was drawing them immediately before the termination of his service, or, as the case may be, for the period by which such notice falls short of one month.

[Memo. No. X/82/TMN/3]

क(०आ० 3000 — केन्द्रीय मिविल सेवाएँ (श्रस्थायी सेवाएँ) नियम 1965 के नियम 5 के उपित्रम (1) के परन्तुक के श्रनुसरण में मैं ए० परमेश्वरन, मङल इजीनियर तार, पालक्काड एक्ट्रांग श्री. यू.पी० नरेन्द्रनाथ, टे र्ल फीन डापरेटर, टर्ल फीन केन्द्र कोड्रवायूर की सेवाए तत्काल समाप्त करता ह और निदंश देना हूं कि वह सेवा समाप्ति के तुरस्य पहले जिस दर पर बेनन नथा भक्ते प्राप्त करना था उम दर पर, यथास्थिनि नोटिस की ध्रविध तक का या ऐसा नोटिस एक महीने से जिनने दिन के लिए कम पडला है उनने दिन नक का भक्ताओं सहित बेनन का दाधा अपने के लिए हकदार होगा।

[स॰ एक्स/१2/टी॰एम॰एन॰/६]

ए० परनेश्वरत महत इर्ज नियर, सार

Order of termination of service issued under the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965.

S.O. 3000—In pursuance of the proviso to sub-rule (1) of Rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965, I, A. Parameswaran, Divisional Fngincer, Telegraphs, Palghat hereby terminate forthwith the services of Shri U. P. Narendranath, Telephone Operator, Koduvayui Exchange and direct that he shall be entitled to claim a sum

equivalent to the amount of his pay plus allowances for the period of notice at the same rates at which he was drawing them immediately before the termination of his service, or, as the case may be, for the period by which such notice falls short of one month.

[Memo No. X/82/TMN/6] A PARAMESWARAN, Divisional Engineer Telegraphs

पुर्ति और प्नर्वास मंत्रालय

(पुनवसि विभाग)

नई दिल्ली, 30 जलाई, 1982

का अराव 3001 — निष्कान्त सम्पत्ति प्रशासन अधिनियम 1950 (1950 का 31) की घारा 5 द्वारा प्रवत्त शिक्तियो का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा हरियाणा सरकार के पुनर्वास विभाग में श्री धावपाव नेजा, सयुक्त सचिव (पुनर्वास) वो उक्त प्रधिनियम द्वारा उसके घ्रधीन सहायक मह निर्दाक्षक को सौथे गए कार्यों का निष्पादन करने के लिए तत्काल प्रभाव से सहायक ग्रिभरक्षक, निष्कान्त सम्पत्ति के क्य मे नियान करनी है।

इससे विनांक 11 फरवरी, 1982 की अधिनूचना स० 1(8) विशोध सीन/77- एस०एस-2 (क) का अधिकसण किया जाता है।

[म॰ 1 (14)/विशेषसैल/82-एस॰एस०-2 (क)]

MINISTRY OF SUPPLY AND REHABILITATION

(Department of Rehabilitation)

New Delhi, the 30th July, 1982

SO. 3001.—In exercise of the powers conferred by section 5 of the Administration of Evacuee Property Act, 1950 (XXXI of 1950), the Central Government hereby appoints Shri O. P. Taneja, Joint Secretary (Rehabilitation) in the Rehabilitation Department, Government of Haryana, as Assistant Custodian General of Evacuee Property for the purpose of discharging the duties imposed on such Assistant Custodian General by or under the said Act with immediate effect.

This supersedes Notification No. 1(8)/Spl-Cell/77-SS.II(A) dated 11th February 1982.

[No. 1(14)/Spl. Cell/82-SS.JI(A)]

स्(० आ o 3002 — विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) प्रिधिन्यम 1954 (1954 का 44) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवक्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा हरियाणा राज्य के पुनर्वास विसाग में संयुक्त मिलव, श्री श्रो०पी० ननेजा को उकत प्रधिनियम द्वारा या उसके श्रधीन बंदोबस्त श्रायुक्त को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए बन्दोबस्त श्रायुक्त के रूप में निथुक्त करती है।

2 इससे इस धिभाग की घिधसूचना संख्या 1 (14)/4 विशेष मे $\pi/82$ एस एस-2 (0) दिनांक 19 2 82 का धिधक्रमण किया जाता है 1

[संख्या 1(15)/विशेष सेल/82-एस०एस-2(ए)] महेन्द्र कुमार कराल, श्रवर सचिव

S.O. 3002.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 3 of the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Act, 1954 (44 of 1954), the Central Government hereby appoints Shri O. P. Taueja, Joint Secretary in the Rehabilitation Department in the Government of Haryana, as Settlement Commissioner in the State of Haryana for the purpose of performing the functions assigned to a Settlement Commissioner by or under the said Act.

This Notification supersedes Notification No. 1(14)/Spl. Cell/75-SS.H, dated the 19th February, 1981.

> [No. 1(15)/Spl Cell/82-SS.H.(A)] M. K. KANSAL, Under Secy.

आवेश

नर्ष विरुक्ती, 30 ज्लार्क, 1982

कां आ 3003 -- बिस्थापिन व्यक्ति (प्रतिकर नथा पुनर्वास) प्रधि-नियम, 1954 (1954 का 44) की घारा 34 की उप-धारा 2 ग्रास प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, मुख्य बन्दोत्रस्त धायुक्त इसके द्वारा हरियाणा सरकार के पुनर्वास विभाग में सयुक्त सचिव, श्री ग्रो० पी० तनेजा को, जो बन्दोगस्त आधकत की गक्तियों का प्रयोग कर रहे हैं उक्त भिधिनियम की धारा 23, 24, 28 और 35 के प्रधीन, हरियाणा राज्य में ग्रामीण एव गहरी निष्कांत भूमिया ग्रीर सम्पत्तियों के बारे में शक्तियों के प्रयोग के सबध में श्रवनी शक्तियां सौपते हैं।

इससे दिनांक 19 फरवरी, 1981 के ग्रादेश सं० 1(14)/विशेष सेल/ 75-एस०एस०-2 का श्रधिश्रमण किया जाता है।

[संo 1(15)/विशेष मेल/82-एम०एस०-2 (बी)]

ORDER

New Delhi, the 30th July, 1982

S.O. 3003.—In exercise of the powers conferred on the Chief Settlement Commissioner by sub-section (2) of Section 34 of the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Act, 1954 (44 of 1954), the Chief Settlement Commissioner hereby delegates to Shri O. P. Taneja, Joint Secretary in the Rehabilitation Department of the Government of Haryana, exercising the powers of Settlement Commissioner, the powers conferred on the Chief Settlement Commissioner under section 23, 24, 28 and 35 of the said Act, in so far as such powers may be exercised in respect of tural and urban evacuee lands and properties situated in Haryana State.

Tis order supersedes Order No. 1(14)/Spl. Cell/75-SS.II, dated the 19th February, 1981.

[No. I(15)/Spl. Cell/82-SS.II(B)]

का०आ० 3004--विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर श्रीर पूनर्वास) ग्रिक्षिनियस, 1954 (1954 का 44) की धारा 34 की उपधारा(2) द्यारा प्रदत्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा राज्य के पुनर्वाम विभाग में संयक्त सचिव, श्री ग्रो०पी० तनेजा को, जो बन्दोबस्न श्रायक्त की शक्तियों का प्रयोग कर रहे हैं, फरीदाबाद में मुझाबजा पूल की संस्कार बुवारा निर्मित परिसंपत्तियों और निष्कांत मपत्तियों के निपटान के लिए, जिन्हें प्रणासनिक भीर वितीय व्यवस्था के श्रस्तर्गत हरियाणा सरकार को हस्ता-तरित किया गया है, उनत प्रधिनियम के प्रधीन बनाए गए नियम सं० 87, 88, 90 (1) क, 90 (1) (ख), 90(11), 90(12) स्रोर 101 के भर्मात प्रकाशकित्य सामा है।

2 इससे दिनांक 2 नवम्बर, 1981 की प्रधिसूचना सं० 1(14)/ विशोध सेत/ 75-एस एस-2 का श्रधिकमण किया जाता है।

> [सं० 1(15)/विशेष सेल/82-एम एम 2(र्सा)] एस०के० बम्, म्० बन्दोबस्त ग्रा०

- S.O. 3004.—In exercise of the powers conferred by subsection (2) of Section 34 of the Displaced Persons (Compensa tion and Rchabilitation) Act, 1954 (44 of 1954), the Chievannia Settlement Commissioner hereby delegates to Shri O. P. Taneja, Joint Secretary, Rehabilitation Department, Government of Haryana, exercising the powers of the Settlement Commissione his powers under rules 87, 88, 90(1)(a) 90(1)(b), 90(11), 90(12) framed under the said Act, for the purpose of disposal of all lands and properties in Faridabad forming part of the Compensation Pool, transferred to the Government of Har-yana, under administrative and financial arrangements.
- 2. This supersedes notification No. 1(14)Spl.Cell/75-SS.II, dated the 2nd November, 1981.

[No. 1(15)/Spl.Cell/82-SS.H(C)] S. K. BASU, Chief Settlement Commissioner

अस मंत्रालय

आवेश

नई दिल्ली, 13 मई, 1982

काव्आव 3005--केन्द्रीय सरकार की राय है कि इससे उपावस अनुसूची में विनिर्दिष्ट विषय के बारे में भारतीय खाद्य निगम, नालागोंडा-के प्रयंधतंत्र से सम्बद्ध एक भ्रीयोगिक विवाद नियोजकों भीर उनके कर्म-कारों के बीच विध्यान है,

स्रोर केन्द्रीय सरकार उक्त विवाद को न्यायनिर्णयन के लिए निर्देशित करना वांछनीय समझती है,

मनः, केन्द्रीय सरकार, भौग्रोगिक विवाद म्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 7-क भीर धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (घ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एक ग्रीबोगिक भ्रधिकरण गठित करती है जिसके पीटासीन प्रधिकारी श्री बी०प्रसाद राव होंगे जिनका मुख्यालय हैदराबाद में होगा श्रीर उक्त विवाद की उक्त श्रीधकरण को न्यायनिर्णयन के लिए निर्देशित करती है।

अमुसूची

"क्या भारतीय खाद्य निगम के प्रबंधतंत्र की 110 श्रमिकों की, जिनके नाम उपाबंध में वर्णित है, सेवाघों को उक्त उपाबंध में प्रत्येक के सामने वर्णित तारी खों से समाप्त करने की कार्यवाही न्यायी चित है ? यदि नहीं, तो संबंधित कर्मकार किस धनुसोष के हकदार है ?"

अपावंध

1 2 सर्वश्री 1 भारिक भ्रष्टमद 28-7-81 2. ए० मोहन रेड्डी

551 G of I/82-4

| 1 | 2 | 1 | 2 |
|--|----------------|-----------------------------------|-------------------------------|
| मोहम्मद यूगुफ भ्रली | 28-7-81 | | 28-7-81 |
| के० राम मोहन | <i>n</i> | 60. डी० नागेश्वर रावे | 17 |
| जे० चन्द्रप्या | | 61. के०मुरारी | " |
| . डी० लोकनाथन | " | 62. बी० प्रजस्या | " |
| मो० बाबर | 11 | 63. टी० रंगाचारी | " |
| के० करनाकर | 7) | 64. जी० गुजरमा | " |
| मो० जहांगीर | n | 65. शोख मो० भ्रुषी | " |
| काण अहागार 0. मो० जामीमियां | 11 | 66. एम० राजैय्या | · |
| ∪. माण्यानासमा 1. वी० किशन | 11 | 67. पी० नरमय्या | 1) |
| 1. बार्गानाम 2. बीर् गसबै या | 11 | 68. नजीर ग्रहमव | " |
| 2. बी० अस्तिप्य। 3. बी० घ्रमोक | n | 69. ६ ० सिरुपतच्या |)) |
| | n | | " |
| 4. मो० ख्वाजा, मुईनउद्दीन |)) | 70. जे० सुवाराय चे० स्टीप्टीप | 17 |
| 5. एन ० सैवु स् | 11 | 71. मो० बर्गास्ट्टीन | n |
| 6. मो० सलीम | n | 72. के० रामू <i>लू</i> | <i>n</i> |
| 7. पी० दुर्गाप्रसाद | IJ | 73. जी० वीरस्थामी | n |
| 8. मो० गौस | " | 74. ए० प्रताप | " |
| 9. के ० थोडल रेड्डी | 11 | 75. वाई० स्वर्णं कुमार | n |
| 0. मो० इस्माइल | 11 | 76. एम ० नर्गि ह ल् |) f |
| 1. जी० लिगैया | n | 77. टी॰ पुलैया | n |
| 2. ए० शेरीया | n | 78. पी० नरसिंग्या | n |
| 3. पी ० पनमैस्या | n | 79. वी० गरेंद्रवारी | ,,, |
| 4. मो० महबूब खां | 1) | 80. के० जान | 11 |
| मो शेशिंगिरिराव | 11 | 81. ई० सेंदुलु | n |
| एस० विक्णम | •) | 82. पी० प्रसाव | 1) |
| 7. एन० नागभूषणम | 11 | 83. चो० श्रीनिवासचारी | " |
| 8. एन० सत्यनारायण | | 84. एम०ए० राउफ | 19 |
| 9. चो० नरसिंह | n | 85. ए० कुला गे वर | " |
| o. ई० सत्यनारायण | | 86. वी० नागेश्वर शव | 17 |
| ा. के ० भंज यया | <i>11</i> | 87. म्रार० लज्जार | " |
| 2. एन गुर्वशन रेड्डी | n | 88. मो० जाफर | 11 |
| एस०पी० राजू | 1) | 89. ऍल० राजारतनम | " |
| 4. एस० मतीफ | II . | 90. एस० कें व्याबू | |
| ह. एतर पताक इ.इ. को० को० सम राव | n | 91. वी० कृष्णय्या | n |
| | " | 92. बी० गोपाल राव | ,, |
| 16. ए० मत्ता माले | 11 | 93. मो ० ग्रा फजल हुसैन | 1) |
| 37. के० मोहन रेड्डी | 1) | 94. एम ० नरसिंह | 11 |
| 88. पी ० कृ पस्या | 1) | 95. चौ० प्रकाश | n |
| 39. मो ० फकोरुद्दी न | " | | " |
| 10. मो० हबीबुद्दीन | n | 96. एम० नरसिंह गव |) T |
| 1. जी० रामा लिंगपया | n | 97. ड ि सत्यनारायण | 17 |
| 12. जी० समियाल |)) | 98. च ी ० प्रताप | " |
| 13. सैयद छवाजा मिया | n | 99. एम० भिवलिंगम | n |
| 14. सैयर ग्रहमद हुसैन | n | 100. जी० नर्गसह | " |
| 15. वी॰ राम्लू | 1) | 101. मो० ख्वाजा मोईन उद्दीन | n |
| जी० कोलैय्या | n | 102. बी० वेंकरना | 31-12-77 |
| 47. जी० रामास्वामी | ıi . | 103. जी० वैंकटस्या | 28-7-81 |
| 4.२. एन० लाजारेस | 11 | 104. गेख जा न मियां | 2 7- 7-81 |
| 49. मो० ग्रमीर श्रफखां | n | 105. शमसुद्दीन | 15-7-81 |
| 50. एस० बोयोज् | 11 | 106. हसन भ्रह्मद | 1 5-7-8 1 |
| 51. पी० कोरनल | 11 | 107. भ्रार० यदुगिरी राव | 28-7-81 |
| 52. के० मिक्षमय्या | J _J | 108. मो० मकबूल पाका | 28-7-81 |
| 53. चो०येलेश | " | 109. मी० ग्रबपुल गनी | 28-7-81 |
| 54. के० सुस्तर राव | " | 110. मो० सिद्दीकी | 23-2-81 |
| 55. चो० नागेण्वर राव | n | · | |
| 56. इडी० रूबेम | n n | - | F |
| 50. ड ि र सम्प 57. ड ि र सेयल | | | [सं० एस-42011 (27) / 81-\$ी-4 |
| 57- कार्य्यल \$8. एम० लिंगया | 11 | | |

42. ,,

43. ,,

44. ,,

46. ,,

41. " G. Rama Lingniah

45. ,, V. Ramulu .

48. " N. Lazarace . 49. , Md. Amoer Afkha 1

50. " S. Boyoju .

52. " K. Bikshamalah

53. " Ch. Yellesh .

55. " Ch. Nageshwar Rao

54. ,, K. Sinder Rao

56. " D. Rubber

58. " M. Lingaiah

59. " D. Nagaiah .

61. " K. Murahari

62. , B. Anjaiah .

64. " G. Gurvaiah

66. " M. Rajaiah .

60. " D.Nageshwar Rao

63. ,, T. Ranga Charry .

65. , Sk. Mahaboob Ali.

57. " D. Rayol

51. " P. Kernel

G. Samial . .

Syed Khaja Miya .

G. Kotaiah 47. " B. Rama Swamy .

Syed Ahmed Hussain

23-7-81

,,

MINISTRY OF LABOUR

ORDER

New Delhi, the 13th May, 1982

S.O. 3005.—Whereas the Central Government is of opinion that an industrial dispute exists between the employers in relation to the Food Corporation of India, Nalgonda and their workmen in respect of the matters specified in the Schedule hereto annexed ;

And, Whereas, the Central Government considers it desirable to refer the said dispute for adjudication :

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sx. tion 7A, and clause (d) of sub section (1), of section 10, of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby constitut's an industrial Trivinal of which Shri B. Prasada Rao, shall be the Presicing Officer with headquarters at Hyderabad and refers the said dispute for adjudication to the said Tribunal.

SCHEDULE

"Whether the management of Food Corporation of India, Nalgorda is justified in terminaling the services of 110 workmen, whose names have been mentioned in Annexure with effect from the dates mentioned againe, each in the said Aunexuro? If not, to what relief are the concerned workmen entitled?"

ANNEXURE

| 2. A. Mohan Reddy , | | |
|--|---|----------|
| 21 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 1 | | ** |
| 3. , Md. Yousuf Ali . , 69. , E. Thirupathaigh | | " |
| 4. , K. Ram Mohan , , 70. , J. Subba Rao | | ٠, |
| 5. , J. Chandraiah , 71. , Md. Basheeruddin | | * |
| 6. , D. Lokanadham , 72. , K. Ramulu | | ** |
| 7. , Md. Babar | • | ** |
| 8. , K. Karnakar | | •• |
| 9. , Md. Jahangir | | , |
| 10. , Md. Janimia , , 76. , L. Narsimhulu | | •• |
| 11. , V. Kishan , 77. , T. Pullajah | | " |
| 12. , B. Basavaiah | , | 17 |
| 13. ,, B. Ashok | • | ,, |
| M. M. Khaia Majauddin 80 K Jan | • | ** |
| N Saidulu 81 E Saidulu | • | ** |
| 82 P. Prasad | • | ,, |
| B. Durganga ad | • | ,, |
| 84 MA Paggi | • | ** |
| W Kondol Beddy 85 A Kula Shekar | • | " |
| 86. V. Naueshwar Rao | • | 11 |
| of C. Lineaigh 87 R. Lazzar | • | " |
| A Sharhaigh | • | ,, |
| 22. , B. Greenen | • | • |
| 24 Note Mahahash Whan 90 S.K. Babu | • | ** |
| 91. V. Krishnajah | • | ,, |
| 92 B. Gonala Rao | - | ** |
| 20. , S. Dichitali | • | ", |
| 27. N. Nagaudushanant | • | 11 |
| 28. ,, N. Salityanarayana ,, OS Ch Peokosha | • | 11 |
| 29. , Cli. Nai Silina | • | ", |
| 30. , E. Sathyana and Sathyanarayana | • | " |
| 31. , K. Augana | • | ", |
| 32. , M. Situalinam | • | ** |
| 33. , S.P. Raju | • | ** |
| 34. , S. Lattieer " 101 Md Khaja Mojnuddin | • | 3) |
| 35 K.K. Kani Kao | | 31-12 37 |
| 36. A. Watta Watte | ' | 28-7-31 |
| 37 K. Monai Reddy | • | 27-7-81 |
| 18 P. KUSHIMMI | • | 15-7-31 |
| 30 Mu. radii oddii | | 15-7-81 |
| 40. , Md. Habeobuddin i, 06. , Sk. Hasan Ahmed | • | 70-1-01 |

| 107. Sari R. Yadagiri Rao . | | | 28-7-81 |
|-----------------------------|--|--|---------|
| 108. " Md. Maqbool Pasha | | | 28-7-81 |
| 109. ,, Md. Abdul Gani . | | | 28-7-81 |
| 110. " Md. Siddiquo . | | | 23-2-81 |

[No. L-42011(27)/81-D. IV(A]

New Delhi, the 17th August, 1982

S.O. 3006.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur in the industrial dispute between the employers in relation to the management of National Insurance Company Limited, Indore and their workmen, which was received by the Central Government on the 3rd August, 1982.

BEFORE JUSTICE SHRI S.R. VYAS (RETD.) PRESI-DING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT INDUS-TRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT. JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT/LC (R) (18) 1979.

PARTIES:

Employers in Insurance Company Limited, Indore, and their workman Shri Ramesh Kumar Toshniwal, Assistant represented through the Employees' Union (Western Zone), Indore Unit C/o Sh·i Sharad Mahajan, Nilkanth Colony, Indore-45002.

APPEARANCES:

For workman—Shri L. N. Malhotra, Advocate. For management—Shri P. V. Pandit, Advocate.

INDUSTRY: Insurance DISTRICT: Indore (M.P.)

Dated the 22th July, 1982

AWARD

In exercise of the powers conferred by Clause (d) of subsection 1 of the Industrial Disputes Act 1947 (14 of 1947), the Central Government in the Ministry of Labour has referred the following dispute to his Tribunal for adjudication vide Notification No. L-17012 (3) /79-D, IV (A) Dated 31st July 1979:—

- Whether the action of the Divisional Manager of National Insurance Company Limited, Indore, in fixing the basic pay of their workman, Shri Ramesh Kumar Toshniwal Assistant, at Rs. 175/ per month on his appointment on probation on the 27th April, 1976 without giving him the benefit of his past service and the Annual Grade Increments, is justified? If not, to what relief is the concerned workman entitled?"
- 2. The claim of the workman, Shri Ramesh Kumar Toshniwal, hereinafter referred to as the workman is as follows:—

The management of the National Insurance Company appointed the workman in its Divisional Office at Indore from 1st July 1974 in a permanent vacancy. Though this appointment was against a permanent vacancy it was termed as temporary appointment only. The appointment was continued upto 5-9-1974. He was again appointed on 9-9-1974 and this appointment continued upto 8-11-1974. He was again appointed on 11-11-1974 and continued upto 23-4-1976. Thus in the aforesaid appointments there were breaks of 3, 2 and 3 days respectively, Lastly, the workman

was again appointed in a substantive capacity from 27-4-1976 and confirmed on 28-10-76.

- 3. The contention of the workman is that the aforesaid three breaks were only artificial and colourable so as to give an appearance of temporary employment to deprive the workman the rights of a continuous workman. During these temporary appointments he was initially given a consolidated pay of Rs. 150/- p.m. On confirmation as aforesaid he was granted a time scale of Rs. 175-585. The workman, therefore, claims that his appointment from the very beginning should be treated as a continuous appointment and the should be granted annual increments on 1-1-1975, 1-7-1975 and so on upto the last July 1979 and allowed all arrears and other consequential benefits.
- 4. The contention of the management is that this Tribunal has no jurisdiction to adjudicate upon the alleged dispute as the jurisdiction is barred by virtue of Sec. 16(5) and (7) of the General Insurance Business (Nationalisation) Act, 1972. It is further alleged that the Union which has raised this dispute is not competent as the concerned workman is not a member of that Union. It is also urged that according to the General Insurance (Rationalisation and Revision of Pay Scales and other Conditions of Service of Supervisory, Clerical and Subordinate Staff) Scheme, 1974, the present claim is not maintainable. As regards the nature of the appointments given to the workman, the management contends that it was in exercise of their rights that under peculiar circumstances temporary appointments were given to the workman as and when necessary; that there was no permanent post against which the workman could be appointed; that subsequently when there was a vacancy the workman was given substantive appointment on a pay admissible to the post in which he was appointed; that the terms and conditions haid down in the appointment order were voluntarily accepted by the workman without any objection and that the werkman is not entitled to any relief.
- 5. Rejoinders were filed by both the parties in which they have maintained their pleas raised in their respective statements of claims.
- 6. As per order pased on 1-5-1980 the only issue that arises is that which is mentioned in the order of reference. Consequently no separate issue was framed. For the sake of convenience the issues contemplated by the order dated 1-5-1980 may be formulated as under :—

ISSUES

- 1. Whether the reference is not maintainable?
- Whether the action of the Division Manager of the National Insurance Company Limited, Indore, was justified in fixing the basic wage of Shri Ramesh Kumar Toshniwal, Assistant, at R3. 175/- per month on his appointment on 27-4-76?
- 3. If not, whether the management should have given the benefit of past service and annual graded increments as claimed by the workman?
- 4. To what relief are the parties entitled?
- 7. Having considered the evidence given by both the parties my findings on the aforesaid issues are as under :--

Issue No. 1.-Reference is maintainable.

Issue No. 2.—The management of the National Insurance Company Limited was not justified in fixing the pay of Shri Ramesh Kumar Toshniwal at Rs. 175/- p.m. on his appointment on 27-4-1976.

Issue No. 3.—The management of the National Insurance Company Ltd, should have given the benefit of past service and annual graded increments to the workman as claimed by him.

Issue No. 4.—As per order passed below.

8. In this case both the parties have led oral and documentary evidence which will be referred to at the relevant stage.

Reasons for the above findings:

- 9. Issue No. 1.-On behalf of the management nothing has been shown as to how the reference is not maintainable. All that was urged was that before the natinalisation of the General Insurance Business there were different companies carrying on insurance business in India; that before integration of all the companies into one different units were workig under different names and that consequent upon the integration of the companies certain schemes referred to in the statement of claim were trained for the fixation of the of the employees working in different units. Scheme envisaged rationalisation of the service conditions and pay of the staff but in my opinion all the Scheme etc. are not relevant in the present case as the workman in this case is a post nationalisation insurance employee and is not a workman employed by any company affected by the General Insurance business (nationalisation) Act. Consequently, the scheme and other provisions of the Nationalisation Act are not at all relevant in this case and they cannot govern the dispute raised by the workman in these proceedings.
- 10. The next contention is that the workman is not a member of the Union which has raised this dispute and consequently the reference is not maintainable. The workman was questioned in para 15 of his statement and he has made a categorical statement that from 1975 he was a member of the union which has raised this dispute. No evidence has been given to the contrary by the management. Consequently, in view of the fact that the workman is a member of the Union which has raised this dispute, it cannot be said that the reference at the instance of the union is not maintainable. Issue No. I is accordingly answered against the management.
- 11. Issue No. 2.—It is not disputed that but for the three breaks in appointments i.e. from 6th to 8th September, 1974, 9th and 10th November, 1974 and 24th to 26th April, 1976, the workman was in the employment with the management on a consolidated salary of Rs. 150 per month. It may be mentioned here that later on the management has given him salary for the aforesaid period i. e. from 1st July, 1974 to 23rd of April, 1976 except for the three breaks mentioned above. The salary applicable to the post. The question is as to how this service with colourable breaks, according to the workman, and that the real breaks according to the management, has to be treated.
- 12. It cannot be disputed that on 27-4-1976 when the minagement gave the workman a substantive appointment vide appointment letter Ex. E/11 dated 27-4-1976, the workman had been in service from 1-7-1974 including the aforesaid three breaks. Before his appointment vide Ex. F/11 on 27-4-1976 the workman had already completed 240 days as an employee of the management. Even the last period of appointment from 11th November, 1974 to 23rd April, 1976 had exceeded 240 days. Consequently, in the light of the decision of their Lordship of the Supreme Court in Mohanlal Vs. Bharat Electronics (AIR 1981 SC. p. 1255) the workman had acquired the status of continuous workman. The management, therefore, could not terminate his service without proper compliance of the Industrial Disputes Act tegarding the payment of retrenchment compensation. Since there was no such compliance the workman has to be deemed in continuous service.
- 13. As regards the affect of the temporary breaks, the workman contends that though in official records there were temporary breaks recorded by the management but in fact he had been discharging his duties on the post on which he was appointed. He has referred to certain documents Fx. E/1, E/12, E/19, F/16 and F|17 which are said to be in his handwritings and are of the break periods. These documents, according to the workman, show that though officially he was shown as being not an employee during the break periods yet for all practical purposes he was discharging his duties as usual.
- 14. The management's witness (FW, 1) Babulal Gupta has stated that since there was no post vacant the workman was given only temporary appointments to cope up with the additional work in the office and that he was given

- permanent appointment only when a post was sanctioned.

 I fail to understand as to how there should have been burden on the official work from July, 1974 to April, 1976 continuously but for the broken periods referred to above. appears that the management deliberately gave artificial breaks to the appointments given to the workman so that he can be deprived of the status of a continuous workman if and when such a status is claimed by him. What is the effect of such artificial and coloutable breaks has been considered in S. K. Verma Vs. CGIT (AIR 1981 SC. p. 423) as also in State Bank of India Vs. N. Sundermony (AIR 1976 SC. p. 1111). In this connection, a reference may also be made to the decision in S. K. Gupta Vs. Bank of Patiala (AIR 1980 SC p. 1819). In all these cases, it has been held that once in a calendar year the workman completes 240 working days he acquires the status of a continuous workman. In the instant case, the workman had been in employment from July 1974 to 27-4-1976 but for the three breaks (1) for 3 days in September 1974, (2) 2 days in November 1974 and (3) for 3 days in April 1976. Thus he had, as already stated above, completed more than 240 days before he was given the so called substantive appointment on 27-4-1976. The breaks, as already stated above, were all colourable and artificial and were given only with a view to deprive the workman of acquiring the status of a continuous workman. Such breaks cannot come in the way of the workman's right which he was earned by completing 240 days working. Accordingly the workman should be deemed to be in service from 1-7-1974. Consequently, it is held that the management of the National Insurance Company Limited, Indore, Divisional Manager's Office, was not justified in fixing the pay of the workman at Rs. 175 per month from 27-4-1976.
- 15. Issue No. 3.—As a consequence of the findings given on Issue No. 2, it has to be held that the management was bound to give the benefit of past service from 1-7-1974 to the workman while fixing his pay on his appointment on 27th Aptil, 1976. The management shall therefore fix his pay on 27-4-1976 on the basis that he was appointed in a substantive capacity on 1-7-1974 as an Assistant and grant him future increments as admissible under the rules to him. The workman shall also be entitled to such arrears of pay, increments etc. which may be work out on the aforesaid basis.
- 16. Issue No. 4.—The workman is entitled to the relief mentioned above. Accordingly for the reasons given above, it is directed that the management shall fix the pay of the workman, Shri Ramesh Kumar Toshniwal, on the basis that he was in continuous service in substantive capacity from 1-7-1974. His pay on the aforesaid basis shall be fixed in accordance with the time scale of pay applicable to the post on which he was formally appointed on 27-4-1976. Further his pay on 27-4-1976 shall be fixed on the aforesaid basis with all previous increments earned by him after 1-7-1974. Arrears of pay and increments on the basis of such fixation shall also be paid to him. In the circumstances of the case, both the parties are directed to bear their own costs as incurred.

Sd}-S. R. VYAS, Presiding Officer [No. L-17012/3/79/D.IV(A)]

New Delhi, the 18th August, 1982

S.O. 3007.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act. 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, No. 2, Bombay in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Messrs Sanghavi Brothers, Bombay and their workmen, which was received by the Central Government on the 31st July, 1982.

BEFORE THE CENTRAL GOVFRNMFNT INDUSTRIAL TRIBUNAL NO. ?

PRESENT:

Shri M.A. Deshpanda, Presiding Officer.

Reference No. CGIT-2/12 of 1982

PARTIES:

Employers in relation to the Management of Messrs Sanghavi Bros. Bombay.

AND

Their Workman

APPEARANCES:

For the Employers-No appearance.

For the workmen -No appearance.

INDUSTRY: Ports & Docks STATE: Maharashtra

Bombay, dated the 19th July, 1982

AWARD

By order No. L-31012 (17) 81 D. IV (A) dated 19-2-1982 the Central Government has referred the following dispute for adjudication under Section 10 (1) (d) of the Industrial Disputes Act, 1947:—

"Whether the action of the management of Messrs Sanghavi Bros., Bombay in terminating the services of Sarvashri S. H. Jainullah, Jaifulla Mainulla and Tawakullah Mainulla, Watchmen, is justified? If not, to what relief are the concerned workmen entitled?"

2. The dispute relates to the termination of services of three workmen by the management of Messrs Sunghavi Bros., Bombay, but despite several attempts neither the management could be traced nor the union has filed any statement of claim justifying the reference. In these circumstances there is no other go but to reject the reference.

Award accordingly, No order as to costs.

Sd/-

M. A. DESHPANDE, Presiding Officer Central Govt, Industrial Tribunal No. 2 Bombay.

[No. L-31012/17/81-D. IV (A)]

T. B. SITARAMAN, Desk Officer

New Delhi, the 9th August, 1982

S.O. 3008.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal No. 2, Bombay, in the industrial dispute between the employers in relation to the Food Corporation of India, Nagpur and their workmen, which was received by the Central Government on the 30th July, 1982.

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL NO. 2, BOMBAY

Reference No. CGIT-2/5 of 1980

PARTIES:

Employers in relation to the Food Corporation of India.

AND

Their workmen

APPEARANCES:

For the Employers-1. Shri J. J. Srivastava, Dy. Manager (Legal). 2. Shri P. V. Balakrishnan Dy.

Manager (QC), 3. Shri M. B. Sarvodaya, Assit. Manager (QC).

For the workmen-1. Shri G. R. Gondre, 2. Shri P. Gondane, Bharatiya Khadya Nigani Kamgar Sangh.

INDUSTRY: Food Corporation STATE. Maharashtra.

Bombay, dated the 15th July, 1982

AWARD

By their order No. L-42011(39)/79 L.II(B) dated 14-4-1980 the Central Government referred the following dispute for adjudication under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947:—

"Whether the demands of Food Corporation of India Employees Association, Nagpur, relating to Special Allowance of Rs. 10/- p.m. from inception of depot to the daily rated, called as Casual Labourers, engaged in Quality Control Section and Medical Assistance/Attendance on the pattern available to those regulars who work in Quality Control Section of Food Corporation of India are justified? If not, to what relief they are entitled."

- 2. The matters relates to the work alleged to have performed by the Casual Labourers engaged by the Food Corporation of Inda in their Quality Control Depots where the Dusting Operator who are in ragular service of the Food Corporation of India are being paid special allowance of Rs. 10/- per month and these casual labourers who are alleged to be assisting the Dusting Operators and perform certain duties in the same shed or godown who come in contact with the poisonous substances and because of the hazardous nature of their work they want Special Allowance of Rs. 10/- per month and medical facilities as are made available to the regular workmen.
- 3. The Food Corporation of India by their written statement Exhibit 3/M have denied all these averments and contended that all the work as described by the Union in fact is performed by the Dusting Operators and because of those duties they are paid Rs. 10 per month extra and the casual labourers even posted today quality control work do not perform such hazardous duties but carry on only what is known as coolies duties.
- 4. Points therefore arise for determination are:

 Issues
- (i) whether the casual labourers posted to perform qualify control duties do work similar

yes

Findings

(ii) If yes whether they are entited to extra allowance and any medical facilties

to that of Dusting operator

yes —Extra allowance. No —medical facility

REASONS

- 5. Even though at the time of evidence an attempt was made to suggest that Dusting Operators are paid Rs 10/by way of special Allowance although the duties are not hazardous, the written statement of the Food Corporation of India Ex. 3/M in clear terms admitted in paragraphs 2 and 3 thereof that because of handling of chemicals etc, by the Dusting Operators they are being paid Rs 10/- by way of special pay per month. The suggestion that the Special Allowance is granted as and incentive to attract the employees of lower cadre to accept the posting of Dusting Operator must fail, Furthermore, if the watchmen, Sweepers, shifters are not prepared to accept a post carrying Rs. 10/- extra, it means that they must have their own reason and though the witness for the Food Corporation to suggest thereby the employees in the lower cadre lose their overtime, the reasons must be as suggested by the Union.
- 6. What is then the nature of the duties performed by the casual labourers, whether similar to the work undertaken by the Dusting Operators or they merely worked as

coolies rendering the assistance to those regular employees? In fact having regard to the circumstances namely the casual labourers are in the service of the Food India from 1974-75 onwards, the design Corporation of onwards, the designation as casual labourers is itself misnomer and they are nothing else but regular employees, and the said status might be to avoid giving various benefits. On behalf of the Union there are two witnesses who have described the nature of the duties performed by the casual labourers namely Shri P. Gondane and Shri G. R. Gondre and both have asserted that the casual labourers are performing the same duties as are done by the regular employees, namely the Dusting Operators like cover furnigation, spray pesheides and salvaging. They also say that because they are required to work in a packed shed, they suffer physically yet for want of medical facility they had to approach the private Doctor. Against this the Assistant Manager of the Food Corporation of India when examined tried to reiterate the plea as raised in the written statement but in cross-examination he has admitted these casual labourerrs assist the Dusting Operators in the work of salvaging, spraying and fumigation and that they work in the same shed where the Dusting Operators work. There is further admission that the duties performed by the casual labourers are entered in the register but no such register has come forward meaning thereby that the entries therein might not be supporting the Corporation. The two witnesses examined by the Union claimed to have actually worked in the Quality Control Section though in rotation and they have described the material facts of the handling of pesticides and fumigants. I do not think that any imagination is necessary for assessing the chemical effects which is matter of common experience especially when residential houses are furnigated or sprayed. Having legard to the admissions of the Assistant Manager and further having regard to the nature of the duties performed by the casual labourers who work side by side with the Dusting Operators, I do not think that there is any justification in denying the casual labourers of the special alowance, merely because, though they work, under the Food Corporation of India for several years have not been absorbed in the regular duties but still kept as casual labourers.

- 7. The Dusting Operators get Rs. 10/- per month by way of special allowance and there is no difficulty in calculating because they are in regular employment. Such may not be the case with the Casual labourers who are required to work in Quality Control Section only on rotation basis. No order therefore can be passed to pay Rs. 10/- per month as in other case, but since they are still termed as casual labourers and since there must not be any fixed number of days in the rotation for work in Quality Control Section, at the same time having justified the demand, the only order which is possible is that those casual labourers who are asked to work in Quality Control Section and required to assist the Dusting Operators shall be paid 33 paise per day for the period of their work in the Quality Control Section.
- 8. From the oral evidence of the witnesses of the Union although there is grievance regarding absence of medical facilities there is nothing to show that any of the casual labourers or to that effect even the Dusting Operators suffered physically requiring medical attention. Even the superior officers are present and had there been any mal-effect, the presence of the superior officers could not have been noticed. Therefore the prayer regarding medical facility has to be rejected.
- 9. The result is that the demand of special allowance at the rate of 33 paise per day when any casual labourer works in Quality Control Section is held to be justified but not the demand for medical facility. The Food Corporation shall pay the special allowance at this rate from the date of this Award.

Award accordingly.

No order as to costs.

M. A. DESHPANDE, Presiding Officer
[No. L-42011(39) /79-D.II(B)]

S.O. 3009.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Nagpur Telephone District and their workman, which was received by the Central Government on the 30-7-72

BEFORE JUSTICE SHRI S. R VYAS (RETD.)
PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVE INDUSTIAL
TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, JABAI PUR (M.P.)

1. Case No. CGJT/LC(R) (10)/1982

(Ministry's Reference Order No. L-40012 (8)-78-B.H.D) dated 29th January 1982)

2. Case No. CGIT/LC(R) (11)/1982

(Ministry's Reference Order No. L-40012(8)/78-B.II.D) dated 30th January, 1982)

PARTIES:

Employers in relation to the management of Nagpur Telephone District and their workman Shri Manoranjan Hiranji Kothare, Gorewada P.O. (C.P.W.D. Quarters), Nagpur-440013.

APPEARANCES:

For workman—None. For Management—None.

INDUSTRY: Telegraph DISTRICE: Nagpur (M.S.)

Dated: July 26, 1982

AWARD

By an order dated 29-1-82 the Government of India in the Minisry of Labour has referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:

- "Whether the action of the management of Nagpur Telephone District under the control of District Maanger, Telephones, Nagpur, in stopping from work Shri Manoranjan Hiranji Kothare, with effect from 3-2-1977 is legal and justified? If not, to what relief he is entitled?"
- 2. By another order dated 30-1-1982 the aforesaid dispute was referred to this Tribunal for adjudication. Therefore this award will also govern Reference Case No. 11/1982.
- 3. It is evident that an identical dispute between the management of the Nagpur Telephones under the control of the District Manager (Telephones) Nagpur has been referred by two separate orders one dated 29-1-1982 and the other dated 30-1-1982. As the dispute was identical though referred to by two different orders bearing the same number two notices were issued to both the parties to file their statements of claims. Notices were served on both the parties. As the workman did not appear on the service of tht first notice, a fresh notice was issued. The first notice was received on 12-4-1982 and the other was teceived on 20-5-1982. In response to neither of these two notices the workman came forward. Consequently, no statement of claim was filed by the workman.
- 4. In the notice issued by this Tribunal to both the parties they were directed to file the statements of claims and served copies thereof on the otherside. A date for filing rejoinders with a copy to the other side was also fixed. Only the management of the Telephones Department sent by post a statement stating that since the copy of the statement of the workman was not received they were unable to file the statement of claim. Even thereafter no statement of claim was filed either by the workman or by the management of the Telephones Department. The result was that since that date neither the statement of claims nor rejoinders nor documents were filed by the parties. In these circumstances the references were reserved for award.

- 5. From the order of reference it appears that the dispute between the parties was with regard to stopping from work Shri Manoranjan Hiranji Kothare with effect from 3-2-1977. The workman has not come forward to give details as regards the effectives in which he was stopped from work by the management of the Nagpur Telepone District. The management have also not filed any statement to indicate as to how, for what reasons and in what circumstances, the workman was or was not stopped from working in the Department. In these circumstances, the only inference to be drawn is that there is no subsisting dispute between the parties which requires adjudication by this Tribunal. Consequently, the reference has to be answered as under .—
 - "As there is no subsisting dispute between the parties with regard to the alleged stopping from work of the workman, Shri Manoranjan Harmanji Kothare, no adjudication is called for Reference is answered accordingly."

S. R. VYAS, Presiding Officer [No. L-40012(8)/78-D.H(B)]

S.O. 3010.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Posts and Telegraphs Department, Divisional Telegraph Office Naspur, and their workman, which was received by the industrial Government on 3-6-82.

OFFCER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT/LC(R)(46)/1981

FARTIES:

Employers in relation to the management of Posts and Telegraph Department, Divisional Telegraph Office, Nagpur Division, Nagpur and their workman Smt. Bhojabai, Waterman-cum-Farash-cum-Sweeper, represented through the All India Posts and Telegraph Traffic Karamchari Sangh, Nagpur Division, C/o D.T.O. Nagpur City (M.S.)

APPEARANCES:

For workman-Shri P. S. Nair, Advocate.

For Management-Shii K. K. Adhikari, Advocate,

USTRY: Post and Telegraphs DISTRICT: Nappur (M.S.)

Dated the July 26, 1982

AWARD

This is a reference made by the Government of India in the Ministry of Labour vide Notification No. L-40012(1)/78-D.II(B) dated 31st December, 1981, for the adjudication of the following dispute by this Tribunal:—

- Whether the action of the Post and Telegraph Department (Divisional Telegraph Office) Gandhibagh, Nagpur in treating Smt. Bhojabai, Waterwomancum-Farash-cum-Sweeper as casual employees, and allowing her wages and other service conditions accordingly in spite of her 19 years service, since August, 1958 in the Department is tair and justified? If not, to what relief is the employee entitled?"
- 2. Briefly stated the facts giving rise to this reference are these. Smt. Bhojabai, the workman concerned, hereinafter referred to as the workman, was appointed as a Partime Employee in the capacity of a Waterwoman-cum-Farash-cum-Sweeper on 1-9-1958 in the Central Telegraph Office Nagpur under the management of the Divisional Telegraphs Engineer's Office Nagpur on a daily wages of Rs. 3 which was subsequently raised to Rs. 5.
- 3. The grievance of the workman is that though she has been discharging her duties as a Waterman-cum-Farash-cum-

Sweeper since 1958 even then the department has not considered her claim for regular appointment even though she has been continuously working for 8 hours per day. She made a number of representations to the department but her claim remained unsatisfied. She has, therefore, prayed for her regularisation from the date of her first appointment.

- 4. The claim put forward by the Divisional Engineer is that the Post and Celegraphs Department is not an industry hence the provisions of the Industrial Disputes Act do not apply in the present case; that the workman has been working on the post of Waterwoman-cum-Farash-cum-Sweeper as contingent employee purely on daily wages that at the time of the first appointment the workman neither got herself registered with the Employment Exchange not the employment Exchange recommended her name; that under the Departmental rules such registration and recommendation are obligatory for substantive appointment; that at the time of her first appointment the workman was 34 years of age i.e. she had crossed the maximum permissible age of 30 years; that as and when the worker applied for absorption on the regular establishment her applications were duly considered and rejected; that the workman being illiterate was not eligible to the appointment to the Class IV post either of a Sweeper or Aayya; that the workman was again asked to produce certificate about her being a member of the Scheduled Castes but no such certificate was produced; that the Union which has espoused the cause of the applicant is not competent to do so as the workman is only a part time workman and is not a member of the Union and that in these proceedings the workman is not entitled to any relief.
- 5. Rejoinder was filed only by the Post and Telegraphs Department in which the allegations made by the worker in her statement of claim about fresh appointments in 1962 were denied. It was further alleged that since after the workman started working on daily wages on a casual basis no post had fallen vacant in Class IV on which she could be appointed and that for the reasons already stated in the statement of claim filed eather the workman could not and should not be regularised on any post in the Department.
- 6. On these rival claims of both the parties the following issues were framed on 14th April, 1982:—

Issues :

- 1. Whether on the facts and circumstances of this case the management of P&T Department (Divisional Telegraph Office, Nagpur) was justified in treating the workman Smt. Bhojabai Ramteke as a casual employee inspite of her continuous service from August 1958?
- 2. To what relief is the workman entitled?

Oral and documentary evidence was given by the workman only. Post and Telegraphs Department filed certain copies of Government orders etc. as annexure to the statement of claim and rejoinder. However, no oral evidence was given.

7. I have considered the evidence of both the parties. My findings on the aforesaid issues are as under:—

Issue No. 1.—The management of the Post and Telegraphs Department (D.F.T. Office Nagpur) was not justified in treating Smt. Bhogabai Ramteke as a casual employee in spite of her continuous service from August 1958.

Issue No. 2.—Smt. Bhojabai Ramteke, workman, in this case is entitled to be regularised and also entitled to payment of back wages on the lowest post in the aforesaid office from the date when a permanent post at the lowest grade had fallen vacant.

Reasons for the above findings:

8 Issue No 1.—In her statement it Is stated by the workman that ever since her first appointment she has been working continuously for the last 24 years and discharging the duties of a Sweeperess and Waterwoman. Her duty hours were 8 hours per day and she was paid firstly Rs. 3 per day and then Rs. 5 per day without any holiday. She also says that she was registered in the Employment Exchange and at the time of her first appointment her name was recommended to the Post and Telegraphs Department by the Employment Exchange. She has in this Court produced certificates about

her being a member of the Schedule Caste as also about her date of birth. In her cross examination she said that for the first time she made her lirst application for her appointment in Class IV in the year 1973. She denied that it the time of her first appointment she had represented that she was 34 years of age. She said that she became member of the Umon in 1961 and since then Union had also been making representations for her regular appointment WW.-2. Shii Ramchandra Ganpatrao Dange, an Overseer in the same office said that the workman had been working for 8 hours per day in two intervals, that she was registered in the Emper day in two intervals, that she was registered in the Employment Exchange and was a member of the Schedule Caste. He refers to an affidavit Fx. W/IA sworn before the Laluka Magistrate, Nagpur in which she had stated her date of birth as 14-5-1932 according to which she was 26 years of age at the time of her first appointment in 1958. He lastly states that though she and the Union tenteren time had been states that though she and the Union representative had been pressing the worker's claim for he regular appointment but the Department did not grant her request. He also says that the documents Ex. W/1 to W/5 were handed over by him to the Department offi et when they were deminded.

9 From the aforesaid evidence, it is clear that the worker, Smt. Bhojabai, had been working continuously from August 1958 only as a casual worker. She is being paid either daily or monthly wages but she has not been absorbed against any vacant post on the permanent establishment. The fact that she is a member of the Scheduled Caste is not denied. There is an application dated 12-10-1961 made by the worker addressed to the Felegraph Master Incharge duty at Nagpur in which she had prayed for being regularised. The Telegraph Master recommended her permanent appointment but it appears that the recommendation was not accepted. the annexures filed along with the statement and rejoinder by the department there is a certificate dated 8-11-1960 by the department there is a certificate dated 8-11-1900 (Fx M/2) in which the applicant on being referred to the Civil Surgeon her age is shown as 34 years both according to the statement of the worker as also according to her appearance. There is another letter Ex. M/5 according to which the services of one Vishwanath were terminated by the Telegraphs Department on 6-6-1961. According to Annexures 1, 2, 3, 4, and 5 which are orders passed by the Departmental Higher Authorities and the Government of India, the worker could not be regularised because she on the date of her first appointment, was not only over the prescribed age but was also not sponsored by the Impleyment Exchange for her appointment. The workman, has, however, made a categorical statement that her name was sponsored by the Employment Fred inge with which she was registered. As regards her age Annexure 6 which purports to be an entry from the Birth Register, a daughter was born to Haria Upishya Mahar on 8-5-1932. This document has been produced by the department itself. It appears that this certificate was filed by the worker when demanded by the department. If this certificate relates to the birth of the workman then at the time of her initial appointment, she was only 26 years of age and not 34 years as alleged by the department.

10. However, apart from the question of age at the time of her initial appointment the fact is that the workman has been continuously in service since 1958 till date. There is no rebuttal of her statement about her discharging of duties of 8 hours per day. The relevant record of service—the attendance register, the wage sheets etc. have not been filed by the department. Not a single witness has been examined to deny on oath the statements made by the workman and her witness. If the workman has been continuously working from August 1958 till date then she is right in making her claim for being regularised. A workman who completes 240 days on a particular post acquires the status of a continuous workman as laid down in Mohanlal Vs. Bharat Flectionics (AIR 1981 SC p. 1255). According to the recommendation of the Telegraph Master dated 12-10-1961 made on the applicant's application on the same date she was recommended for appointment on the regular establishment Even if it is assumed that the applicant's name was not sponsored by the Employment Exchange, for which also there is no evidence, it is too late for the department to contend that the worker is not entitled to be regularised even after she has put in 24 years of service. So far as the question of workman being over age at the time of her appointment is concerned, I find that she was not 34 years of age but was only 26 years as per birth certificate filed in this case. Observations of the Civil Surgeon regarding age of the

applicant by appearance cannot be said to be on authentic piece of evidence about the exact age of the workman. Considering the length of service of the workman I feel she is entitled to be regularised on such vacant post in the permanent establishment as and when it had fallen vacant after the workman had completed 240 days employment in the department. The department should have therefore regularised her as claimed in this case by the workman. Issue No. 1 is therefore answered against the department

11. Issue No. 2.-As regards the relief to be granted to the workman, I have already indicated as to the nature of the relief to which the applicant is found entitled. The management of the Post and Telegraphs Department (Divisional Telegraph Office Nagput) shall within three months from the date of this award comes in torce examine the case of the workman, Smt. Bhojabar, and regularise her on the lowest post in Class IV on its permanent establishment from the date when a substantive post had fallen vacant after 240 days of continuous service of the workman from August 1958. On being so regularised, the workman Smt. Bhojabai shall be entitled to all consequential benefits of an employee on the aforesaid post. An award is accordingly passed in favour of the workman as indicated above. In the circumstances of the case both parties are directed to bear their own costs as incurred.

> S R. VYAS, Presiding Officer [No. L-40012(1),78-D.H(B)]

S.O. 3011.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Madras, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Covernment of India, Poduction Centre, Ettumanoor, and their workman, which was received by the Central Government on the 3-8-82.

BEFORE THIRU T. SUDARSANAM DANIFI, BA., B.L.

(Constituted by the Government of India) Wedne day, the 28th day of July, 1982 Industrial Dispute No. 69 of 1981

(In the matter of the dispute for adjudication Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947 between the workmen and the Management of Government of India, Production Centre, Ettumanoor.)

BETWIEN

Thiru V. Gangadharan, V. G. Bhavan, Nadaiyanam, Nedumparampu P.O. (Via), Alancede, Trivandrum District.

The Director Government o' India Production Centre, Fitumanoor.

REFERENCE

Order No. 1. 42012/15)/81-D H(B), dated 25-8-1981 of the Ministry of Labour, Government of India

This dispute coming on for final hearing on Wednesday the 21st day of July, 1982 upon perusing the reference, claim and counter statements and all other material papers on record and upon hearing the arguments of Thiru P. C. Chacko, Central Government Standing Counsel appearing for the Management and the workerun being absent and this dispute having stood over till this day for consideration, this Tribunal made the following award.

This is an Industrial Dispute between the workmen and the Management of Government of India Production Centre, Ettumanoor, Kerala State referred to this Tribunal for adjudication under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947 by the Government of India in Order No. L.

42012(15)/81 D.II(B), dated 25-8-1981 of the Ministry of Labour in respect of the following issue:

- "Whether the Director, Government of India, Production Centre, Ettumpinor was justified in not offering re-employment to Shri V. Gongadharan and in appointing Shri Gopinathan Chettian as Helper with effect from tebjuary, 1980, in contravention of Section 25H of the Industrial Disputes Act, 1947? If not, to what relief the workman is entitled?"
- (2) Facts leading upto this dispute are as follows. The Management is the Director, Government of India Production Centre, Ettumanoor, Kerala State. The Government of India, Exension Centre, Attingal is a factory registered under the Factories Act and is owned by the Central Government of India. This Centre functions under the administrative control of the Director of Production Centres as Ettumanoor, who is also the appointing as well as disciplinary authority. This is a permanent department of the Central Government—Central Government Small Scale Industries Development Organisation under the Ministry of Industry. This Centre is supervised by an Assistant Director. Aluminium/Steel Utensils, Hospital wares etc., are produced for commercial purpose at this Centre. The aggreed workman in the present reference made by the Government of India, Ministry of Labour is Thirty V. Gangadharan. He was engaged as a Casual Labourer from 1-4-1964 to 10-11-1968—vide Ex. W-1, the certificate issued. He was retrenched as can be gathered from Ex. W-1 for want of raw materials. It is not disputed that when he was retrenched and he was also given eligible benefits. After the retrenchment in 1968, subsequently also the workman concerned was engaged by the Management as Casual Labourer not continuously, hetween February, 1974 and July, 1974 as and when work could be allotted to him. It is common case that subsequent In July, 1974, the wirkman was not at all employed by the Management. Third Gopinathan Chettiar was appointed as Helper by the Management in August, 1980 in accordance with the rules of the Management. The claim of the concerned workman is that the Tribunal may be pleased to pass an order appointing him as Helper at Government of India, Extension Centre. Attingal in the place of Third Gopinathan Chettiar with retrospective effect
- (3) In the first place, the concerned workman Thiru V. Gangadharan seeks to support his claim to be a Helper under the Management in the light of the Award rendered under the Management in the light of the Award rendered by Industrial Tribunal, Alleppev, Kerala State in I.D. No 1 of 1974 dated 28th June, 1975. Ex. W-3 is the typed copy of extract from the Award rendered by the said Tribunal. As a matter of fact on 13-2-1980 the workmar concerned in this dispute Thiru V. Gangadharan made a representation under the original of Ex. W-4 that his retrenchment is hit by Section 25(T) of the Industrial Disputes Act, 1947 and also the Award passes by Industrial Tribunal. Allenney also the Award passed by Industrial Tribunal, The Award extract which has been produced as Tribunal, Alleppey. Ex. W-3 related to certain casual workmen employed in the various production centres in Kerala with a direction to be absorbed in the regular scales of pay with effect from 1-1-1972. In that dispute, the Director of the Management had given a list of casual labourers entitled to the benefit of the Award and the same is marked as 1 st. M-1 before this Tribinal The Management admits that the Award tendered by the Industrial Tribunal, Alleppey in I.D No 1/1974 related to 36 casual workers who are declared to be Helpers. But it should be remembered that the concerned workman Thiru V. Gangadharan was not in the employment of the Management after 10-11-1968-vide Ex. W.I, but was only enter-tained in February, 1974. It is significant that Fx M-1 does not contain the concerned workman Thiru V. Gangadharan. Furthermore, even according to the admission of Thiru V. Gangadharan under Fx. W-4, his claim has been overlooked in the Award passed by the Industrial Tribunal, Alleppey in J.D. No. 1/1971. Looked at from any point of view, it is difficult to accept the case of the workman that he would be entitled to be reinstated as a Helper or even as a Casual Workman pursuant to the Award possed by the Industrial Tribunal, Alleppev in ID. No. 1/1974.
- (4) Secondly, it is stated that the appointment of the Management of Thiru Gopinathan Chettiar as a Helper in August, 1980 is in direct violation of the right conferred on the workman concerned in this dispute, namely, Thiru

- V. Gangadharan under Section 23(H) of the Industrial Disputes Act, 1947. The claim put forward by Thiru V. Gangadharan is under Ex. W-4 on 13 2-1980, more than tix vears after his last engagement under the Management in July. 1974. The aforesul Coopinathan Chettiar has not been made a party at any stage of the conciliation proceedings. Although the reference made by the Government of India, Ministry of Labour specifically refers to the appointment of Thiru Gopinathan Chettiar yet even in the reference Thiru Gopinathan Chettiar has not been made a party to the reference or dispute. Therefore in the absence of Thiru Gopinathan Chettiar no effective adjudication can be made. That apart, in the materials place before this Tribunal, it is difficult to accept the claim of the workman Thiru V. Gangadharan that he is entitled to invoke the provisions of Section 25(H) of the Industrial Disputes Act, 1947. Therefore, in the state of circumstances of the evidence now available, it cannot be held that there has been any valuation of Section 25(H) of the Industrial Disputes Act, Act, 1947 to the detriment of the workman concerned in this dispute, namely, Thiru V. Gangadharan.
- (5) Finally, on behalf of the Management it is pointed out that the concerned workman Thiru V. Gangadharan was never employed in any 'industry' as contemplated under Section 2(j) of the Industrial Disputes Act, 1947. I have already pointed out that this Centre, namely, Government of India Extension Centre. Attingal is a factory registered under the Factories Act and is owned by the Central Government. This Centre functions under the administrative ernment. control of the Director of Production Centres at Etturnanur. who is the disciplinary as well as the appointing authority. This Centre is being supervised by an Assistant Director. Merely because Aluminium/Steel utensils, hospital wares etc., are produced for commercial purposes, it cannot said that it would be an "industry" as contemplated ur as contemplated under Section 2(j) of the Industrial Disputes Act, 1947. On the other hand, the Director of Production Centre at Ettumanur who is arrayed as a Management in this dispute functioning under the Central Government is a permanent department of the Central Government, i.e., Central Government Small Scale Industries Development Organisation under the Ministry of Industry. Therefore, it cannot be seriously disputed that the employees under the Production Centres Government of India would be povered by Central Civil Service Rules and Recruitment Rules framed under Article 309 of the Constitution. In the latest decision of the Supreme Court in Banga ore Water Board's case reported in 1978—I—I.J.J. Page 349 the functions of the sovereign State would be excluded from the operation of the Industrial Disputes Act, 1947. More so, the employees of the Management would be Central Government employees and as such they would be entitled to the constitutional remedy of Article 311 of the Constitution. Looked at from that point of view, the reference under the Industrial Disputes Act, 1947 must be held to be incompetent.
- (6) In view of my findings in paragraph supra, I hold that the present reference is not maintainable under the Industrial Disputes Act, 1947. However regard being had to the fact that the workman conceined in this dispute, namely Thiru V. Gangadharan had been employed under the Management from 1-4-1964 upto 10-11-1968 and also intermittently from February, 1974 to Iuly, 1974 and also regard being had to the age of the workman and the souls dependant on him and his broken financial circumstances, the Management may favourably consider of giving him some casual employment atleast as and when possible to the concerned worker Thiru V. Gangadharan if that would be permissible. In the peculiar circumstances I direct the parties to bear their respective costs.

Dated, this 28th day of July, 1982.

WITNESSES EXAMINED

For both sides: None,

DOCUMENTS MARKED

For Workman , None

Ex. W-1/16-12-68—Employment Certificate of the workman.

- Ex. W-2/10-12-68.—Memo issued to the workman by the Management requesting to receive retronchment benefits.
- Ex. W-3/28-6-75—Award of the industrial Tribunal, Alleprey in 1.D. No. 1/74 (Central) (extract of paras 19 and 20)
- Ex W-4/13-2-80—Copy of representation of the workman to the Assistant Director, Government of India, Extension Centre, Attingal for appointment, (Exs. W-1 to W-4—Aurexure to claim statement).

For Management:

- Ex M-1—Statement showing the names of workers, date of appointment, present wages etc. in Production Centre, Ettumanur, Tituvalla and Extension Centres at Attingal and Muvattupuzha. (Annexure to counter statement).
 - T. SUNDARSANAM DANIEL Presiding Officer [No. L-42012(15)/81-D II(B)]
- S.O. 3012.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 194/), the Central Government hereby publishes the following award of the Central G vernment Industrial Tribunal, No. 2, Bombay, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Telephone, Nagpur and their workmen, which received by the Central Government on the 3-8-82

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL No. 2, BOMBAY

Reference No. CGIT-2/26 of 1981

PARTIES:

Employers in relation to the management of Telephones', Nagput.

AND

Their Workmen

APPEARANCES:

For the Employers-Shri V. G. Bhangde, Advocate,

For the Workmen—Shri N H Kumbhare, President, Nagpur Telephone Casual Worker Union.

INDUSTRY: Telephones STATF: Mahaiushtra

Bombay, the 16th July, 1982

AWARD

By their order No. L-40012(3) '81-D II(B) dated 24-10-1981 the Central Government has referred the following dispute for adjudication under Section 10(1)(d) of the Industrial D.s-putes Act, 1947:—

- "Whether the action of Divisional Engineer (Telephones) (W&A) Nagpur, in terminating the services of Shii Ramesh Vishwanith Bodhkar, Ex-Chowkidar with effect from 1-12-1980 is justified? If not, to what relief is he entitled?"
- 2 The case of the Union on behalf of the workman Shri Ramesh Vishwanath Bodhkar is that he was serving as a Watchman in the establishment of Nigpur Telephones and worked with them for more then two years. It is alleged that on 1-12-1980, despite having put in more than two years continuous service, the workman concerned was not allowed to join the duties and this act on the part of the Respondent is alleged to be illegal amounting to removal from service and therefore the relief of reinstatement is being sought.
- 3. By written statement the Respondent admits that Shri Bodhkar was in their service but they say that he was a casual worker on daily wages in the Nagpur Telephone District and that he was not employed continuously and his employment was as and when required depending upon the work. It is alleged that in the initial stage he worked as a casual worker

- from January, 1975 to September, 1976 and again during the period July, 1978 to November, 1980. It is further alleged that in the month of November 1980 the work of recovery of old cables was in progress from Medical College Hospital to Baidyanath Chowk when the workman concerned was posted on duty as a Watchman to keep a watch on the cable drum and watch the line rendered open on account of work of recovery of the old cable undertaken and a tent was put up for the purpose of stay of watchman where another watchman Gangaram Duba was on duty as a watchman. The cables which were disinterred may be of 100 pairs 6 1/2 pounds.
- 4. On 27-11-1980 it is alleged that a theft of these cables while Shii Bodhkar was on duty took place. It is alleged that it was only when Shri Shyamrao Bisan Ukey arrived on duty in the morning on 27-11-1980 that the story regarding the theft was narrated to him by the Watchman. According to the Respondent although the theft was alleged to have occurred about 1 30 A.M., neither the theft was reported to the Police Station by the Watchman nor the Superior officers were apprised thereof and it was only on the arrival of the Junior Engineer and other and that ultimately complaint to the Police was lodged. In this manner it is alleged that the watchman is guilty of dereliction in duty and since by his negligence loss of valuable property occasioned the responsibility was on the watchman himself. They therefore allege that when all these facts were admitted by the watchmen when his statement was recorded and when he was found guilty of negligence etc., the Respondent had to terminate the services which amounts to punishment after enquiry and therefore cannot be challenged. It is further contended that the activities of the telephones being of regal nature the Industrial Tribunal has no jurisdiction to entertain the reference or to grant any relief.
- 5. Admittedly there was no domestic enquiry as such and when therefore it is an admitted fact that the watchman was for more than two years in the service namely from July, 1978 to November, 1980 as well as admitted by the Respondent, when the workman was to be dismissed by way of punishment, either the Respondent was duty bound to hold a domestic enquiry or if there was no such enquiry atlenst to lay before the Tribunal sufficient material substantiating the charge of alleged misconduct. Now what is contended by the management is that the workman who was a watchman on the relevant date during the night of 26-11-1980 and 27-11-1980 failed to report the incident of theft either to the superior officers or to the Police. In this connection the statement of Shri Bodhkar is that he was assaulted by tht de oits armed with knives and was threatened and that 3 or 4 of them caught hold of him while the remaining decoits decamped with the cables, It is further alleged that he was stunned and for a while he could not understand as to what should be done and that when he recovered from the shock he narrated the incident to the co-workers whose tent was beyond the road and when Shyamrao Ukey arrived also reported the matter to him and lastly to the police when he was produced before the Police by the Superior officers, What has happened during the night was not only narrated by the workman before the superior officer but also appears in the statments of workmen recorded by Shri Parate and thereof are on record the statements of Gangaram Dube, Shyamrao Bisan Ukey and Jaising Nago Dhurve.
- 6. On going through the material which is placed before me to establish the charge of negligence, even if the contention of the Respondent is accepted and even if it is held that by not taking action immediately either by reporting the matter to the Superior officers or to the Police, the watchman failed in his duties, still it would be an act of negligence, of work once but would never be an habitual negligence. I wis told that the Telephones are governed by the Industrial Employment (Standing Orders) Act and the model standing orders under Schedule I, and if the parties are governed by those standing orders, under standing order No. 14 (3)(i) the punishment of dismissal is only if the misconduct is of habitual negligene or neglect work. The standing orders therefore require that before any workman is dismissed for the misconduct, something more than a single act of negligence is necessary otherwise the extreme punishment of dismissal could not be justified. In my view therefore even accepting the contention of the Respondent in full, having the only fault which can be attributed to him is non-reporting

the matter to the higher authorities or to the Police. It was tried to suggest that the watchman must be hand-in-glove with the culprits but there is absolutely no evidence in this regard nor at any time the case was made out that he hisself either aided or abetted the commission of the theft. Once we arrived at this conclusion and we notice that the workman coace ned was in continuous and we notice that the workman coace ned was in continuous and expert in mitton and once we find that there is no in ordicties bisited which would justify the dismissal by the post since the workman was a astial workman and since as a watchman there was some negligence on his part. I do not think that this is a case where reinstatement can be ordered but the workman deserves the relief of compensation only. While determining the quantities of compensation we have to take into account the fact that had there been no termination the workman would have continued in service and for bringing the law of severence of the relationship of the employer employee the provisions of Section 25F of the Industrial Disputes. Act would have required to be followed which the Respondent failed to do hence the order.

ORDER

The termination of services of Shii Ramesh Vishwanath Bodhkai, Ex Chowkidar with effect from 1 12-1980 is held to be not justified, but however instead of reinstatement he shall be paid a compensation of Rs 4000 (Rupees four thousand only)

No order as to costs

M A DESHPANDE, Presiding Officer Central Govt Industrial Tribunal No 2 Bombay [No L 40012(3) 81 D II(B)] S S PRASHER Desk Officer

New Delhi the 11th August 1982

S.O. 3013—In pursuance of section 17 of the industrial Disputes Act 1947 (14 of 1947) the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal Calcutta in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Bejdih Colliery of Messrs Eas ern Coalfields Limited Post Office Starampur and their workmen which was received by the Central Government on the 5 8 1982

CENTRAI GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAI

AT CALCUTTA

Reference No 52 of 1980

PARTIES

Employers in relation to the management of Bejdih Colliery under Eastern Collifields Limited

AND

Their Workmen.

PRESENT

Mr Justice M P Singh Presiding Officer

APPLARANCES

On behalf of Employers-Mr B N Lala, Advocate

On behalt Workmen-Mr Mohit Mondal the concerned workman

STATE West Bengal

INDUSTRY Coal Mine

AWARD

By Order No L-19012(64)/79-D IV(B) dated 7th July, 1980 the Government of India Ministry of Labour sent an industrial dispute existing between the employers in relation to the management of Berth Cola Vinter lastern Collfields I intitled Post Office Stationpul District Bordwin and their workmen to this Indianal to adjude two The Schedule to the Order of Reference reads as

- 'Whether the action of the management of Bejdih Colliery under Eastern Coalfields Limited Post Office Sitarampur District Burdwan in refusing Shri Mohit Mondal General Mazdoor employment with effect from 16th January 1978 is justified? If not, to what relief is the concerned workman entitled?
- 2 When the case was taken up for hearing both the parties appeared and submitted that the matter has been settled erween them and filed a memorandum of setilement and prayed for an award in terms of the settlement. I have gone through the settlement and I find the same to be legal, bonafide and in the interest of both the parties.
- 3 In view of above I accept the settlement and pass an award in terms of the settlement. The memo, indum of settlement will form part of this award which is marked Annexure. A"

Dated Calcutti

The 29th July, 1982

M P SINGH Presiding Officer

ANNEXURF 'A'

BFFORE THE HONBLE PRESIDING OFFICER, CENF RAL GOVT INDUSTRIAL TRIBUNAL, CALCUTTA

Reference No 52 of 1980

PARTIES

Employers in relation to the Management of Bejdth Coll ery under Eastern Coalfields I imited P O Sitarampur Dist. Burdwan

AND

Then workman represented by West Bengal Khin Maz good Sangh (UTUC) Chinakuri PO Sundarchak, Dist Burdwan

Both the parties above named file joint petition of comp omise as per terms mentioned hereunder

That the Government of India Ministry of Labour Order No. L 9012(64)/79 D IV(B) dated 7th July 80 referred the alleged dispute for adjudication by the Honble Tribunal

That the above matter is pending before the Honble Till bundl and the matter has not been heard as yet

That the West Bengal Khan Mazdoor Sangh (UTUC) the concerned union of the workman Sii Mohit Mondal has approached to the management for settlement of the alleged dispute. That the matter has been discussed between the management and the concerned union and the management without prejudice to its averments made before the Hon'ble Tribunal has agreed to settle the alleged dispute on the following terms and conditions.

- (i) Sri Mohit Mondal will be taken into ervice as under ground general mazdoor Cacegory I within 7 days from the date of filing the settlement and the Honble Tribunal will be requested to pass the award on the Usis of the terms of settlement. He shall be posted at any colliery under ECL depending on vacan y but for the present he shall be posted at Bejdih Colliery.
- (ii) The offer shall remain open upto 15 days from the date of filing the settlement after which the management shall not be responsible for giving employment
- (iii) Responsibility for producing proof for identity shall be with the union
- (iv) For the period from the date of unauthorised absence to the date of joining Sri Mondal shall not get any payment on no work no pay basis and the said period shall be treated as continuous service for the purpose of gratuity only and nothing clse.
- (v) The pay of Sri Mondal shall be fixed in Cat I with basic rate of Rs 1500 (Rupees Fifteen) per day as per NCWAII

at the initial stage of the scale and his next increment will fall due in September 1983.

- (vi) The rules and regulations as applicable to other employees of the company in the same category in which the concerned workman will be placed shall also be applicable to Sri Mohit Mondal. He shall also abide by the rules and or regulations and terms of employment as applicable to the other employees of the company and shall always obey and act according to the direction of the management.
- (vii) Sri Mohit Mondal will have no claim whatsoever on account of back wages otherwise from the management and this settlement resolves all dispute and claim of the concerned wokman including those of the reference dated 7th July '80 namely the instant reference 52 of 1980.
- (viii) Neither party will be entitled to any cost and the parties will bear their respective cost of the proceedings.

That both the parties submit that the Hon'ble Tribunal may be pleased to accept the aforementioned terms and c nditions as agreed by both the parties for maintaining harmomous relation between the parties and industrial peace at the establishment.

That both the parties jointly pray that the Hon'ble Tribunal may be pleased to accord approval to the proposed settlement which is considered by both the parties as quite fair and reasonable and pass the award accordingly treating this settle ment as part thereof.

And for this your petitioners shall ever pray, Dated this the 20th day of July 1982, Madhu Banerjee For and on behalf of the workman General Secretary West Bengal Khan Mazdooi Sangh

(U.T.U.C.)

Prem Chand Ray,

Sti Mohit Mandal.

For and on behalf of the

Signature of the Workman.

Employers.

Dy. Personnel Manager, Sitarampur Area. Eastern Coalfields Limited [No. L-19012(64)/79-DIV(B)] S. S. MEHTA, Desk Officer.

New Delhi, the 11th August, 1982

S.O. 3014.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal No. 2, Dhanbad in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Khas Karanpur Colliery of Central Coalfields Limited, District Hazaribagh and their workmen, which was recived by the Central Government on the 5th August 1982. ceived by the Central Government on the 5th August, 1982.

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL (NO. 2) DHANBAD

Recerence No. 46 of 1979

In the matter of an industrial dispute under 5, 10(1)(d) of the I.D. Act, 1947.

PARTIES:

Employers in relation to the management of Khas Karanpura Colhery of Central Coaffields Limited, Hazaribagh and their workmen.

APPEARANCES:

On behalf of the employers-Shra T. P. Choudhury, Advocate.

On behalf of the workmen-Shii S. Bose, Advocate.

STAIE: Bihar

INDUSTRY: Coal.

Dhanbad, 30th July, 1982

This is a reference under \$.10 of the I.D. Act, 1947. The Central Government by its order No. L-20012/218/78-D.HI(A) dated 2nd July, 1979 has referred this dispute to this tribunal for adjudication on the following terms:

SCHEDULE

"Whether the demand of the workmen of Khas Karanpura Colliery of Central Coalfields I imited District Hazatibagh for treating the Overburden removal workers mentioned in annexure 'A' as their workmen is justified? If so, to what relief are the said workmen entitled?

ANNEXURE 'A'

- Sl. No. Name.
 - 1. Shri Deo Chand
 - 2. Shri Lal Muni
 - 3. Shii Nagwa
 - 4. Shri Gopal
 - 5. Shri Tersha
 - 6. Shri Jit Mohan
 - 7. Shri Johan
 - 8. Shri Mangra
 - 9. Shri Ram Deo
 - 10. Shri Baldeo
 - 11. Shri Hiraman
 - 12. Shri Sushila
 - 13. Shri Sanichar
 - 14. Shri Salman
 - 15. Shri Albana 16. Shri Ramath
 - 17. Shii Somara
 - 18. Shri Sukarmuni
 - 19. Shri Jageshwar
 - 20. Shri Jagdish
 - 21. Shri Basmati
 - 22. Shri Jagani 23. Shri Kishani
 - 24 Shri Hiram
 - 25. Shri Bandhu
 - 26 Shii Sukari
 - 27. Shri Dasrath
 - 28. Shri Purani

 - 29. Shri Bigal
 - 30, Shri Birshi No. 1
 - 31. Shri Budhni
 - 32. Shri Waris
 - 33. Shri Sukar
 - 34. Shu Birashi
 - 35 Shri Rani
 - 36 Shrì Sudhan
 - 37. Shii Ram Charan

- 38. Shri Mangra
- 39. Shri Budhani
- 40. Shri Etwaria
- 41. Shri Silina
- 42. Shri Malani
- 43. Shri Elisha
- 44. Shri Sukarmani
- 45. Shri Hira
- 46. Shri Sherophina
- 2. The Koyala Chetra Janta Mazdoor Sangh represent 19 out of 46 workmen mentioned in the annexure to the schedule, while the remaining 27 workmen are represented by United Coal Workers Union. It so happened that after the filing of the written statements by these unions they gave up contest. These 46 workmen thereafter prayed for being represented by Shri Sankar Bose, Advocate and Secretary, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh. On behalf of the management there was no objection and Shi Sankar Bose was permitted to represent their case. Written statement was filed by Shri Sankar Bose adopting the written statement miled earlier. The management had already filed their rejoinder to the written statement filed by the unions, and so no further written statement was filed by them. In the course of argument Shri T. P. Choudhury has conceded that the management had no ground to contest on the ground that these workmen are not represented by their unions who had mised the dispute, So his point is settled at rest.
- 3. The simple case of the workmen is that they are overburden removal workers (O.B.R.) even from the time of the private owners and continues as suhe. But the management of Khas Karanpura colliery of Central Coalfields Limited do not regard them as their workmen. Their prayer is that these 46 concerned O.B.R. workers should be treated as workmen of the colliery. The management, on the other hand, has taken the plea that the concerned workmen were never O.B.R. workers of the colliery. According to the management a list of workers of all categories had been prepared immediately after the take over and in consultation with the trade union leaders names of workers were finalised. In respect of the workers from this colliery the number of workers on their roll was 1343 and out of them after screening 1291 workers were taken in leaving out only 52. These concerned workmen were not screened in and never preferred any appeal before the Dy. Custodian General. Furthermore, their names did not appear in Form B register and they were never members of Coal Mines Provident Fund. Apart from that no vouchers were available mentioning their names. The specific case of the management is that the aforesaid 1291 workers were taken in after screening were backed-up by these two unions who raised this dispute. On this basis the management's case is that the prayer for recognition of these concerned workmen as the workmen of the colliery should be rejected and the reference should be answered accordingly
- 4. The management has filed documents in support of their contention
- Ext, M1 is a list of piece rated workmen of O.B.R. of Khas Karanpura colliery. Ext. M2 and Ext. M3 are bonus registers. Ext. M4 to Ext. M4/3 are applications for gratuity by the workmen. Ext. M5 is an act of appeal before the R.L.C(C) Dhanbad under Payment of Gratuity Act, 1972 filed by the management. Ext. M6 is also an act of appeal filed by the management under Payment of Gratuity Act, 1972. Ext. M7 is also an appeal by the management filed before the RLC(C) Dhanbad Ext. M8 and Ext. M9 are also appeals filed by the management before the RLC(C) Dhanbad.
- 5. Three witnesses were examined on behalf of the management, MW-I is Shri S. K. Tayal, who was manager of Khas Karanpuia colliery from November, 1972 to April, 1973. He has said that the colliery was taken over by the Central Government on 31-7-73. He was thereafter asked to prepare a list of workmen employed in the colliery. With regard to the list Ext. MI he has said that he has prepared the list on 19-2-73. He has denied that hesides the workmen mentioned in the list, there were 139 O.B.R. workers. He has further said that there was two unions viz. United Coal Workers Union and Rastriya Colliery Mazdoor Sangh union who were operating in the collicity and these two unions were

- associated with the acreening. The total number of workers employed in the colliery was 1291. According to him another list was prepared for other types of workmen. He has denied the suggestion of the workmen that O.B.R. work was done through contractors. He has admitted that the workers of this colliery were residents of the locality. He has denied that O.B.R. workers used to work under a gang leader who used to submit bills in respect of the work done by each gang. He has also denied that the payment was made to gang leader only. He has admitted that it was not possible that each O.B.R. worker could be paid Rs. 500 per week or 38,500 annually.
- 6. The next witness is MW-2, Shri P. M. Lal, Senior Personnel Officer. His evidence is similar to MW1. He has further deposed that Sl. No. 1, 7, 13, 17, 29 and 16 were students reading in the school during his time. In cross-examination he has said that there were 900 employees in Khas Karanpura colliery rather he joined in June, 1965. With regard to the number of workers who were reading in school, he has said that he saw them reading between 1965 and 1973 and not thereafter. He knew them only because they were living in Khas Karanpura area and were sons and daughters of the colliery workers. With regard to hat, M2 he has said that he was only an officer who had signed on that document. With regard to Ext. M3 he has said that it was not signed by any clerk officer of the colliery. He has further said that he had left the colliery in 1973 and he has no idea if the concerned workmen worked after his departure from the colliery. He also did not know if they were stopped from work.
- 7. MW-3 Shri R, P. Pathak started working as manager of Khas Karanpura colliery in 1975. He has come to say about 4 original applications about gratuity. They were in respect of Jitu, Raghiya, Bhujo widow of Sayana and Sukra. The colliery manager, Mr. Panja or Pan had signed these applications, Exis, M4 to M4/3 are those applications. The gratuity claimed through these applications are at varying rates of Rs. 49 to 63 per day. His evidence is that according to NCWA-1 the maximum earning of a OBR worker per day could not go beyond Rs. 16 per day. Since the claim was an exaggerated rate an enquiry was held by Mr. Gulhati, Assistant C.P.O. The papers in connection with the wages to O.B.R. workers had been seized and sent to the head-quarters. He has no idea as to what happened to that enquiry. In his cross-examination he has said that these 4 applications Exts. M4 to M4/3 are on N.C.D.C. form. It appears the signature of the manager in the exhibits and therefore the amount of basic wage mentioned in the application has been admitted by these unions to be correct. The union has said that the management fought that gratuity case.
- 8. On the part of the concerned workmen the original file of the Assistant Labour Commissioner(C) Hazaribagh in which the dispute was considered leading to this reference was called for and it has been extensively used by Shri Bose. The record has not been disputed by the management. No other document had been placed on behalf of the workmen except the A.L.C(C) record in this dispute. But two witnesses have been examined, WW-1 Badal Chandra Biswas working in Khas Karanpura colliery as surveyor between 1975 and 1978. He has said that while he was at khas Karanpura colliery, quarry was functioning, and removal of overburden was made manual labour. He used to go to the quarry for measurement work, He further said that surface subsistence in depillering area occured during his time and to fill up that area manual labour was employed. He was not able to give an idea about the labour force employed for the purpose of removal of over burden, WW-2 is Bigal a workman in Sl. No. 29. He has said that there were 10 OBR worker in one garg and there were 15 to 16 such gang. The surveyor used to measure the work done by them. With regard to the concerned workmen he has said that they were working since before the nationalisation and in the year 1978 they were stopped from work. His evidence is that they have been left idle on account of their stoppage of work. WW.3 is Mangra who worked in Khas Karanpura colliery for 10 years before he retired 2 years ago. He was OBR worker in the colliery. According to him the overbuiden removal worked in gang consisting of 10 persons in each gang. He has identified bigal (WW-1) as one of the overburden removal worker. He has said that the surveyor used to measure the work done and bills used to be premated in the name of the gang sindar who was paid by the colliery

office. The gang order used to give his signature or LTI on a piece of paper after receiving the amount of the bill. In cross examination he has said that he and others filed gratuity case at Hazaribagh. He has further said that he and others were demanding gratuity at the rate of Rs. 1500 but the wages were fixed at Rs. 1000.

9 From the evidence produced by the management it will appear that none of the witnesses have admitted the existence of these workmen as OBR workers working in Khas Karanpura colliery. They have not even admitted that they were working under gang leaders and the gang leaders were paid on the basis of the bills presented by them for the work done by the group of which they were leaders. But it is an admitted position that six of the gang leaders had filed gratuity applications and the management has filed the original applications of 4 of them and also the position of the gratuity cases. While at the conciliation stage the management did not admit these 46 concerned workmen as OBR workers, the position taken by the management in the gratuity case was that the persons claiming gratuity were in fact group leaders and payment was made to them for the entire group and not for individual earning of each of them. So, the position is that the contention made by these workmen that they were OBR workers of the colliery and the payment was made to them through the group leaders was virtually admitted by the management. Fhe ALC(C) Hazaribagh has made full mention of this fact in a letter dated 23-1-1980 signed by Shri S, B. Singh, Assistant Labour Commissioner (Central) Hazaribagh addressed to the Manager, Khas Karanpura Colliery of Central Coalfields Limited. This fact further was highlighted at the conciliation stage in respect of these 46 workmen under reference.

10. In a case like this there is bound to be paucity of evidence on behalf of the workmen from the time of the private owners. The private owners engaged miners and OBR workers through a system called sardari system. The miners and OBR workers used to work under gang leaders and payments were used to be made for the work done by them through the group leaders. The object of nationalisation was to abolish this system because it was a mal-practice depriving the actual workers from their due wages as envisaged in the wage board recommendation. These facts can be taken judicial notice of, particularly because the Government of India nationalised these collienes with the very important purpose of providing just wages to the workers of the coal industry. After nationalisation an attempt was made by the Government to eliminate the intermediaries and to put on the rolls of the colliery the workers engaged in the production of coal including the OBR workers. But even then the vested interests at work did not permit genuine workers to be put on the roll of the colliery and allowed induction of their men as workers of the colliery. It will appear that out of the list of OBR workers, 50 were not screened in for the reason best known to the unions working at that time and also the officers of the colliery as soon as the nationalisation took place. But ever since then some of the unions agitated about these OBR workers and also some others about whom even the Assistant Labour Commissioner(C) expressed some doubte about their genuineness. But so far as these 46 concerned workmen, they appeared to be consistent with the list an l about whom the conciliation officer (Central) was also satisfie.d Their case is backed up by the inflated claim made by some of the group leaders and also by the fact that the management admitted that OBR workers worked under groups

11. Thus having considered various aspects of the case I have to hold that the demand of the workmen of Khas Karanpura colliery of Central Coalfields I imited, District Hazaribagh for treating the 46 Overburden Removal Workers mentioned in the Annexure 'A' as their workmen is justified, Consequently, they should be put in the list of Overburden Removal Workers. In the written statement claim for back wages have been made. But this is not supported by the facts and they themselves have said that they did not work during the period. Consequently, the Overburden Removal Workers named in the Annexure 'A' to the schedule of the reference must appear before the management for their enrolment as Overburden Removal Workers within a month

of the publication of this award, failing which they should be treated as not interested in regularisation of their jobs.

This is my award.

J. P. SINGH, Presiding Officer. [No. L-20012/218/78-DHI(A)] A. V. S. SARMA, Desk Officer

आवे श

नई विल्ली, 16 भगन्त, 1982

कारुआर 3015----भैसर्स भारत कोकिंग कोल लिए, डाकघर कुमुन्दा, जिला धनबाद की कुसुन्दा क्षेत्र संख्या 6 के प्रबंधतत्र से सम्बद्ध नियोजकों घौर [उनके कर्मकारों के बीच, जिनका प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर सम (इन्टक) करती है, एक ग्रीचोगिक विवाद विद्यमान है ;

धौर उनन नियोजको भीर कर्नकारों ने भोयोगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 को 14) की धारा 10% की उपहारा (1) के अनुसरण, में एक लिखिल करार द्वारा उनन विवाद को माध्यस्थम के लिए निर्देशिक करने का करार कर लिया है धौर उनन माध्यस्थम करार की एक प्रति केन्द्रीय मरकार को भेजी गई है ,

धत, ब्राब, घीडोगिक विकाद अधिनियम, 1947 (1947 ना 14) की धारा 10क की उपधारा (3) के उपवंधों के प्रतुसरण में केन्द्रीय सरकार उक्त माध्रस्थम करार की, जो उसे 31 जुलाई, 1982 को मिना था, एनदद्वारा प्रकाणित करनी है।

(करार)

(भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1917 की धारा 10क के प्रजीत) पत्र कारों के नाम : नियोक्षकों का प्रतिनिधिस्य करने वाले

> श्री एस०एन० सिन्हा, कार्मिक प्रबंधक, मैंसर्स भारत कोकिंग कोल लि०, कुसुन्दा क्षेत्र संख्या 6, डाकथर कुसुन्दा, जिला धनबाद।

कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले

 श्री जी० बी० पाण्डे, सैश्रेटरो, राष्ट्रीय कोलिय^{री} समदुरसंघ राजेन्द्रपथ, धनकाद।

पक्षकारों के बीच निम्नलिखित ग्रीदोगिक विवाद को श्री श्याम कृष्ण क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केन्द्रीय), धनबाद के माध्यस्थम के लिए निर्देशित करने का करार किया गया है।

1. निभिविष्ट विवाद प्रस्त विवय :

"स्या यूनियन की यह माग कि श्री राम कुमार सिह, श्री राजेन्द्र प्रसाव वर्भा, श्री बी० एन० गर्मा श्रीर श्री मालन सिह की पूर्विक्षी प्रभाव से निषिकीय ग्रेड-2 से लिपिकीय ग्रेड-1 में पदीन्तत किया जाता चाहिए, स्यायमंगन है ? यदि हो तो कर्मकार किस श्रमुतीय के हकदार हैं।

 विवाद के पक्षकारों का विधरण जिसमें प्रंतिलित स्थापन या उप-क्रम का नाम तथा पता भी सम्मि-लित है।

3 कर्मकार का नाम, यदि बहु थिवाय मे स्थयं शामिल है मा यूनियन का नाम यदि कोई हो तो प्रश्नगत कर्मकार का प्रतिनिधित्व करती हों।

मैसर्स मारत कोकिंग कोल लिं इाकबर कुमुन्दा (धनवाद) को कुमुन्दा क्षेत्र संख्या 6 के प्रबंधतंत्र मे सम्बद्ध नियोजक।

राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ (ईटक) राजेरद्र पथ, धनबाद।

- द प्रभातित उत्रक्षम में नियोजित 1500 वीमेकारो का जूल संख्या
- अ विवाद द्वारा प्रभावित या सभाव्यत । (चार)
- प्रभावित होने वाने कर्मकाणो

की प्रायकलित संख्या

मध्यस्थ अपना पनाट र जपन्न मे मध्यस्थ करार के प्रकाशन की नार ख में छ माम की अवधि के भीतर या इतने समय के भीतर जो हमारे र्म।च पारस्परिक लिखित करार द्वारा मकृत्या जाए, देगा । यदि उपर्यकत काल (विधि के भी तर पन्नाट नहीं किया जाता तो माध्यस्थम के लिए निदेश म्बन, रह हो जा। मा भीर हम तम माध्यस्थम के लिए बातकीन करने को स्वतन्न होर्ग।

पक्षकारों के हस्यक्षर

80/-

夏の/~

(एम०एन० मिन्हा)

(जं.० डी.० गाँउ)

कार्मिक प्रबंधक

मैसर्स बी ० सी ०सी ०एल०

राष्ट्रीय कोलियरी सजदर संघ

की कूम्स्याक्षेत्राम० €,

राजेस्द्र पथ धनबाव ।

डाकथर कुसुन्दाः, जिला धनबाद ।

24-7-1982

24-7-1982

साध्य

। भगाठय

2 भगाठय

में ग्रीबोगिक विवाद ग्रधिनियम 1947 की धारा 10क के भन्तर्गन ज़क्त विवेद में मध्यस्थ के रूप में कार्य करने के लिए भारती सहस्रति देता है।

> ज्याम कृष्णः, क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केन्द्रीय) धनकाद ।

[फा॰ म्**ख्या** एल॰-२७०13(7)/82-डी॰ 3 (ए०]

ORDER

New Delhi, the 16th August, 1982

S.O. 3015-W hereas an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of Kusunda Area No. VI of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Kusunda, District Dhanbad and their workmen represented by Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh (INTUC);

And Whereas, the said employers and their workmen have by a written agreement under sub-section (1) of section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), agreed to refer the said dispute to arbitistion and have forwarded to the Central Government a copy of the said arbitration agreement;

Now Therefore, in pursuance of sub-section (3) of section 10A of the said Act, the Central Government hereby publishes the said agreement which was received by it on the 31st July, 1982.

AGREEMENT

(Under section 10A of the Industrial Dispute Act, 1947)

BETWEEN

Name of Parties:

Representing Employer:

Shri S.N. Sinha, Personnel Manager,

Kusunda Areea No. VI of

M/s. Bharat Coking Coal Limited. P.O. Kusunda, Distt. Dhanbad.

Representing workmen

Shri G.D. pandev, Secretary, Richtriva Colliery Mazdoor Sangh. Rajendra Path, Dhanbad.

It is hereby agreed between the parties to refer the following dispute to the arbitration of Shri Shyam Krishna, Regional Labour Commissioner (Central), Dhanoad.

(i) Sparific matters in dispute-

"Whether the demand of union that Shri Ram Kumar Singh Shri Rajenara Prased Vorme, Shii D N. Sharma and Sri Lalan Singh should be promoted from Clerical Grade-II to Chrical Grade-I with retrospective effect is justified? If so, to what relief the workmen are entitled?".

(11) Details of the parties to Employer in relation to the the dispute including the name and address of the establishment of undertaking involve :

management of Kusunda Area No. VI of M/s. Bharat Coking Coal Ltd., PO Kusunda (Dhabid)

(iii) Name of the workman in Rashtraya Colliery Mazdoor case be himself is involved in the dispute or the name of the union, if any, representing the workman or workmen in question:

Sangh (INTUC), Rajendia path, Dhanbad,

- (iv) Total number of work- 1500 men employed in the undertaking affected .
- (v) Estimated number of 4 (four) of workmen affected likely to be affected by the dispute:

The Arbitrator shall make his award within a period of six months from the date of publication of the arbitration agreement in the official gazette or within such further time as is extended by mutual agreement between us in writing. In case the award is not made within the period aforementioned, the reference to arbitration shall stand automatically cancelled and we shall be free to negotiate for fresh arbitration

SIGNATURE OF THE PARTIES.

Sd/-

Sd/-

(\$.N. Sinha)

Personnel Manager,

Kusunda Area,

No. VI of M/s BCCI,

PO Kusunda.

Distt. Dhanbad.

24-7-1982

(G.D. Pandey) Secretary.

Rashtriya Colliery Mizloor Sangh, Rajendri Path,

Dhanbid.

24-7-1982

WITNESSES.

1. Sd/-

2. Sd/-

I hereby give my consent to act as Arbitrator under section 0A of the Industrial Disputes Act, 1e47 in the above dispute,

Sd/-

SHYAM KRISHNA,

Regional Labour Commissioner (Central), Dhanbad.

[No. L-20012(7)/82-D. III (A)]

आवेश

नई विल्ली, 15 अगस्त, 1982

का० आ० 3916 - मैसर्स इंडियन अध्ययम एउ स्टाम सम्पर्नः लिमिटेड डाकघर भागा जिला धनबाद के नुनुई।ह जीलपुर कॉलियरी के प्रवधनक से

सम्बद्ध नियोजको भीर उनके कमकारों के बीचे जिनका प्रतिनिधित्व कोन मार्क्स इंजीनियरिंग वर्कर्स एसोसिएसन, पोर्लाटेकनीक रोड, बेकर अब धनबाद करनी है एक भौद्योगिक विवाद विधामन है.

और उक्त नियोजको भौर कर्मकारों ने भौधोगिक विवाद प्रधिनियम 1947 (1947 का 14) की धारा 10क की उपधारा(1) के अस्तर्गत एक लिखित करार द्वारा उक्त विवाद को माध्यस्थम के लिए निर्वेशित करने का करार कर लिया है भौर उक्त माध्यस्थम करार की एक प्रति केन्द्रीय सरकार को भेजी। गई है,

श्रवः जब उक्त श्रिधिनियमं की धारा 10-क की उपधारा (3) के श्रनुसरण में केन्द्रीय सरकार उक्त माध्यस्थ्म करार को जो उसे 31 जुलाई 1982 को मिला था एनबद्वारा प्रकाशित करती है।

(करार)

(श्रीद्योगिक विवाद श्रीधनियम 1947 की धारा 10-क के श्रश्नीत) पक्षकारों के माभ :

मियोजक का प्रतिनिधित्व करने, वाले: श्री एस॰ पी० मेहरा, एरिया प्रबंधक मैंसमं इंडियन भायरन एड स्टील कम्पमी लि० की नूनूडीह जीसपुर कोलियरी, डाकघर भागा, जिला धनबाव।

कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले: श्री एम० एन० मिलक जनरल सैकेटरी कोल माइंस इंजी-नियरिंग वर्कर्स एसोसिएजन, पोलीटेकनीक रोड, बेकर बंध, धनबाद।

पक्षकारों के बीच निम्नलिखिन प्रौद्योगिक विवाद को श्री प्याम क्रुडणन, क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केन्द्रीय), धनसाव के माध्यस्थ्म के लिए निर्देशित करने का करार किया गया है।

1. विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त विषय .

"स्या स्टोइंग विभाग, जीतपुर कोलियरी के श्री मुनिलाल भौर 26 ध्रन्य कर्मकारों की उचित पदनाम श्रीर वर्ग मजदूरी की मांग उचित है ? यहि हा तो वे किस अनुताय के हकदार है ?"

- 2 विवाद के पक्षकारों का विवरण, मैंसर्स इंडियन आयरन एंड स्टील जिसमें ग्रंतविलित स्थापन या कं० लि०, डाकघर भागा, जिला उपक्रम का नाम ग्रीर पता मी धनबाद की नून्किह जीतपुर कोलि-सम्मिलित है। यर्रा के प्रबंधतंत्र में सम्बद्ध नियोजक।
- 3 कर्मकार का नाम यदि वह स्वयं कोल माइन्स इंजीनियरिंग वर्कती विवाद में अन्तर्भरत है या यदि एसोसिएमन, पोलीटेकनीक रोख, कोई स्वयं प्रकारन कर्मकार या बैकर बध, धनबाद। कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करता हो तो जनका नाम:
- 4. प्रभावित उपक्रम मे नियोजित 2700 कर्मकारों की कुल संख्या
- विवाद हारा प्रभावित या 27 सम्भाष्यतः प्रभावित होने वाले कर्मकरों की प्राक्कालत संख्या

मध्यस्थ घपना पंचाट इस माध्यस्थ्म करार के सरकारी राजपक्ष में प्रकाशन की तारी ख से छ. साम की कालाविध या इतने घोर समय के भीतर जो हमारे बीच पारस्परिक लिखित करार द्वारा बढ़ाया जाए देगा। यदि पूर्व वर्णित कालाविध के भीतर पंचाट नही दिया जाता, तो माध्यस्थ्म के लिए निदेश स्वतः रह हो जाएगा घोर हम नए भाष्यस्थम् के लिए बातवीत करने को स्वतंत्र होगे। पक्षकारों के हस्ताक्षर

ह॰/-(एस॰ पी॰ मेहरा) एरिया प्रबंधक नृनूकीह जीतपुर कोलियरी मैससे इसको लि॰ डाकचर भागा (धनबाद)

ह०/-(एम० एन० मलिक)
जनरल सैकेटरी
कोल माइंम इंजीयिरिंग वर्कर्म
ऐसोसिएणन, बेकर बंध,
धनवाद।
24-7-1982

साओ

1 ह०/-मपठनीय

24-7-1982

2. ह०/-भपठनीय

नूनूडीह जीतपुर कोलियरी, मैसर्स इंडियन धायरन एंड स्टील कं० लि०, डाकथर भाग (धनवाद) के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजक

घौर

कोल माइन्स इंजीयिनरिंग पर्कर्स एसोसिएशन बेकर बंध, धनबाद--बी सुनीलाल घौर 26 धन्य कर्मकार "स्टोइंग विभाग नृनूडीह जीतपुर कोलियरी मैसर्स इंडियन घायरन एंड स्टील कम्पनी लि० के बारे में--के बीच में घौद्योगिक विवाद के मामले में

भौद्योगिक विवाद मिश्विनियम, 1947 की धारा 10-क के भश्चीन में उपयुक्त विवाद में मध्यस्थ के रूप में काम करने की सहमति वेता हूं।

> श्याम कृष्ण, क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केन्द्रीय) धनवाद।

[संक्या एल०-20013/5/82-इति 3 (ए)]

ORDER

New Delhi, the 16th August, 1982.

S.O. 3016.—Whereas an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of Noonodih Jitpur Colliery of Messrs Indian Iron and Steel Company Limited, Post Office Bhaga, District Dhanbad and their workmen represented by Coal Mines Engineering workers 'Association, Polytechnic Road, Bekar Bandh, Dhanbad;

And Whereas, the said employers and their workmen have by a written agreement under sub-section (1) of section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) agreed to refer the said dispute to arbitration & have forwarded to the Central Government a copy of the said arbitration agreement;

Now therefore, in pursuance of sub-section (3) of section 10A of the said Act, the Central Government hereby publishes the said agreement which was received by it on 31st July, 1982.

AGREEMENT

(Under section 10A of the Industrial Dispute Act, 1947).

BETWEEN

Name of parties:

Representing Employer:

Shri S.P. Mehra, Arca Manager.

Noonudih Jitpur Colliery of M/s. Indian Iron & Steel Co. Ltd., P.O. Bhaga, Distt. Dhabad

Representing workmen:

Shri M.N. Mallick, General Secretary,

Coal Mines Engineering workers Association, Polytechnic Road Bekar Bandh, Dhanbad.

551 G of 1/82-6

It is hereby agreed between the parties to refer the following dispute to the arbitration of Shri Shyam Krishna, Regional Labour Commissioner (Central), Dhanbad.

(i) Specific matters in dispute:

"Whether the demand of Shri Munilal & 26 others. workers of Stowing Department, Jitpur Colliery for proper designation and category wages is justified? If so, to what relief they are entitled?".

(ii) Details of the parties to Employer in relation to the the dispute including the name and address of the establishment of undertaking involved:

Management of Noonudih Jitpur Colliery of M/s. Indian Iron & Steel Co. Ltd.. PO. Bhaga, Distt Dhanhad

- (iii) Name of the workmen in Coal Mines case he himself is involved in the dispute or the name of the union, if any, representing the workman or workmen in question:
 - Engineering Workers' Association, Poly technic Road, Bekar Bandh Dhanbad.
- (iv) Total number of workman employed in the 2700 undertaking affected.
- (v) Estimated number of 27 workmen affected ٥r likely to be affected by the dispute:

The Arbitrator shall make his award within a period of six months from the date of publication of the arbitration agreement in the official gazette or within such further time as is extended by mutual agreement between us in miting. In case the award is not made within the period aforementioned, the reference to arbitration shall stand automatically cancelled and we shall be free to negotiate for fresh arbitration.

SIGNATURE OF THE PARTIES.

Sd/-(S.P. Mehra) Area Manager. Noonudih Jitpur Colliery, M/s. II SCO. Ltd., P.O. Bhaga (Dhanbad.)

(M.N. Mallick) General Secretary, Coal Mines Engineering Workers Association, Bekar Bandhu, Dhanbad.

24-7-1982

24-7-1982

WITNESSES:

1. 3d/-

2. 3d/-

I hereby give my consent to act as Arbitrator under Section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 in the above dispute

No. L 20013 (5)/82-D III (A)

SHYAM KRISHNA,

Regional Labour Commissioner (Central), Dhanbad.

भावेश

नई दिल्ली, 18 भगस्त, 1982

का० आ० 3017.—मैसर्स भारत कोकिंग कोल लिभिटेड, कोयला भवन का मुख्यालय, डाक्चर, कोयला नगर, जिला धमबाव के प्रबन्धतंत्र से सम्बद्ध नियोजको मौर उनके कर्मकारों के बीच, जिनका प्रतिनिधिस्व राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर सथ (इन्टक) फरली है, एक झौद्योगिक विवाद विद्यमान है ;

भीर उक्त नियोजको भीर कमिकारी ने श्रीकोशिक विवाद अधिनियम 1947 (1947 का 14) की धारा 10-क की उपधारा (1) के उप-बन्धों के प्रमुसरण में एक विकित करार द्वारा उक्त विवाद को माध्यस्थ्म के लिए निर्देशित करने का करार कर लिया है और उक्त माध्यभ्यम करार की एक प्रति केन्द्रीय सरकार को भीजी गई है .

म्रत, ग्रब उक्त प्रधिनियम की धारा 10-क की उपधारा (3) के उपबन्धों के बनुसरण मे, केन्द्रीय सरकार उक्त माध्यस्थ्म करार को, जो उसे 31 जुलाई, 1982 को मिला था, एलदुद्वारा प्रकाशित करती है।

(करा३)

(ग्रीधोगिक विवाद मधिनियम, 1947 की धारा 10-क के मधीन) पक्षकारों के न(म

नियोजको का प्रतिनिधित्य करने वाले भी टी॰ एस॰ श्रीवास्त्व, मेसर्ग सक्य कार्मिक प्रवन्धक, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, कोयला अथन, डाकघर कोयला मगर, जिला धनवाद।

श्री जीव दीव पाई, सेन्नेटरी, कर्नकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संध (इन्टक्), राजेन्द्रपथ, धनबाद ।

पक्षकारों के बीच निम्निविधित भी द्योगिक विवाद की श्री ग्याम कुरणन, बीक्षीय श्रमायुक्त (केन्द्रीय), धनधाव के माध्यस्थम के लिए निदेशित कश्ने का करार किया गया है।

विनिदिष्ट विवाद ग्रन्म विषय :

ा क्या यनियन की मांग कि श्री सुरेश प्रसाद सिंह की पूर्वीपेक्षी प्रभाव से तकनीकी ग्रेड-बी से रखा अाना चाहिए, न्यायोचित है [?] यदि हो, तो कर्मकार किस अनुसोप का हकवार है ?

- (ii) विवाद के पक्षकारो का विवरण, सभर्म भारत को क्रिया कोल लि-मिटेड कोयला भवत, डाकघर जिस में धन्तैंबलित स्थापन कोयला नगर, जिला धनबाद के का उपक्रम का साम तथा ्पता भी माम्मिलित है । मुख्यालयं के प्रबन्धतत से सम्बद्ध नियोजक :
- (iii) कुर्मकार का नाम, यदि वह भन्दीय कोलियरी मजपूर सध (इन्टक), रामेन्द्र ५थ, धनबाद। विवाद में स्वय शामिल है या यनियन का नाम, यवि को ही हो, जो प्रक्तगत या कर्म-कारांका प्रतिनिधित्य करती **है** ।
- (iv) प्रभावित उपक्रम में नयोजित कर्मकारों की कूल संख्या।
- (v) श्विवाद द्वारा प्रभावित गा एक **मभा**ग्यस प्रभाषित होने वाले फर्मकारों की प्राक्किलन सहया ।

मध्यस्य भ्रयना पचाट संस्कारी राजपत्न में मध्यस्य करार के प्रकाशन की नारीख में छ मास की ग्रविध के भीतर या इतने समय के भीतर, जो हमारै बीच पारस्परिक लिखिस करार हररा बढाया आए, देगा । यदि उपर्यक्त कालावधि के भीतर पंचाट नहीं दिया जाता, तो माध्यस्थम के लिए बामधीत करमें को स्वतंत्र होंगे।

पक्षकारों के हस्साक्षर

(टी० एउ० श्रीव(स्तव)

हु० (जी० इटिंग् पाडे)

उपमुख्य कार्मिक प्रबन्धक, सेकेटरी मैसर्भ भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संग'राजन्त्र कोयला नवन, डाकघर कोयला नगर. पथ, धनवाद । 24-7-1982 । जिला धनवाद । ३४-७-1983।

मक्ष्य

1. ぎッ/-

2 80/-

मैसर्म भारत काकिंग कोल लिमिटेंड, मुख्यालय, कीयला नगर (अत-बाव) के प्रबंधतन से सम्बद्ध नियोजक

राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संध (इन्टक), राजेन्द्र पथ, धनवाव श्री सुरेगा प्रसाद सिंह के संबंध में, जो श्रव मैंसर्भ बीठ सीठ सीठ एलठ की भार से राउरकेला स्टील फांट, क्वालिटी कन्द्रील विभाग में तकतीकी सहायक के रूप में काय कर रहे हैं।

में भौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10क के भन्मगण उस्त विवाद में माध्यस्य के रूप में कार्य करते के लिए प्रपती महमति वेला ₹ा

> (श्याम कृष्णन) क्षेत्रीय अमामल (क्ष्यीय), धनवाद [संबदा एल- 2001 3/6/8 2-को ॰ IIIए ॰] ORDER

New Delhi, the 18th August, 1982

S. O. 3017.—Whereas an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of Headquarters of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Koyala Bhawan, Post Office Koyala Nagar, District Dhanbad and their workmen represented by Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh (INTUC)

And whereas, the said employers and their work ner have by a written agreement under sub-section (1) of section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), agreed to refer the saiddispute to arbitration and have forwarded to the Central Government a copy of the said arbitration agreement

Now therefore, in pursuance of sub-section (3) of section 10A of the said Act, the Central Government hereby publishes the said agree next which was received by it on the 31st July, 1982.

AGREEMENT

(Under Section 10A of the Industrial Dispute Act, 1947)

BETWEEN

Name of parties:

Representing Employers:

Shri T.N. Srivastava, Dy. Chief Perso and Manager M/s. Bharat Coking Coal Ltd.

Koyala Bhawan, P.O. Koyala . Nagar Distt. Dhanbad.

Representing Workman:

Shri G.D. Padney, Socretary Rashtriva Colliery, Mazdoor

Sangh (INTUC) Rajendra Path Dhanbad.

It is hereby agreed between the parties to refue the following dispute to the arbitration of Shri Shyam Krish 1a, Regional Labour Commissioner (Central), Dhanbad.

(1) Specific Masters in dispute:

"Whether the demand of union that Sri Surosh Pd. Singh should be placed in Technical Grade-B with retrospective effect is justified? If so, what relief the workman is entitled to ?"

(ii) Details of the parties to Employers in relation to managed dispute including the name and address of the establishment of undertakings involved;

ment of Headquarters of M/s. Bharat Coking Coal Ltd Koyala Bhawan, P.O. Koyala Nagar, Dist, Dhanbad.

- (iii) Name of the workman in case he himself is involved in the dispute or the name of the union, if any, representing the workman or workmon in question:
 - Rashtriya Colliery Mazdoor Singh (INFUC) Rajendra Path, Dhanbad.
- iv) Total number of work- 400 men employed in the un dertaking affected:
- (v) Estimated number of ONE workmen affected or likely to be affected by the dispute:

The Arbitrator shall make his award within a periou of six months from the date of publication of the arbitration agreement in the official gazette or within such further time as is extended by mutual agreement between us in writings. In case the award is not made within the period aforementioned the reference to arbitration shall stand automatically cancelled and we shall be free to negotiate for frosh arbitration.

SIGNATURE OF THE PARTIES

5d/-

(T.N. Srivastava)

(G.D. Pandey

Dy. Chief Personnel Manager, Secretary M/s. Bharat Coking Coal Ltd. Rashtriya Colliery Mazdoor Koyala Bhawan, P.O. Koyala Sangh, Rajenera Path, Dhanbad Nagar, Distt. Dhanbad.

24-7-1982 Witnesses:

24-7-1982

1. Sd/-

2. Sd/-

I hereby git, my consent to act as Arbitrator under section 10A of the Lid Istrial Disputes Act, 1947 in the above dispute.

> Sd/-Shyam Krishua Regional Labour Commissioner (Central) Dhanbad.

Sd/-

[No. L-20013 (6) /82-D III(A)]

भावेश

का अा 3018 -- मैसर्स भारत को फिंग कोल लिमिटेड, की बरारी कोलियरी, डाकघर मुलन बरारो, जिला धनबाद के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर अनके कर्मकारों के बांच, जिनका प्रतिनिधस्य राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ, राजेन्द्र पथ, हाक्ष्मर श्रीर जिला धन्याव करती है, एक भौधोशिक विवाद नियमान है ,

मीर उक्त नियोजकों भीर कर्मकारों ने भारोगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 10क की अपधारा (1) के अनुसरण में एक लिखित करार द्वारा उक्त विवाद को माध्यस्थम के लिए निर्देशित करने का करार कर लिया है और उक्त माध्यस्ययम करार की एक प्रति किस्त्रीय सरकार को भेजी गई है,

मत:, मब, उक्त प्रधिनियम, की धारा 10क की उपधारा (3) के टपबंधों के धनुसरण में, केन्द्रीय सरकार उक्त माध्यस्थ्म करार को, जो उसे 3 ग्रंगस्त, 1982 को मिला था, एतवृद्वारा प्रकाशित करती है।

(करार)

(फ्रीबोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10क के प्रधीन) पक्षकारों के नाम

नियोजकों का प्रतिनिधित्व करने वाले : श्री एस० के० राय चौधरी, एजेट,

मैसर्स बी० सी० मी० एल० की बरारी कोलियरी, डाकबर भूलम-

घरारी जिला धनवाद ।

श्री जी० हो। पांडे. कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले :

सकेटरी.

राष्ट्रीय कोश्रियरी मजदूर संघ, राजेन्द्र पथ, डाकघर व जिला धनबाद ।

पक्षकारों के बीच निम्मलिखित भौगोगिक विवाद की श्री केंप शन-मृषयेल, उप मुख्य श्रमायुक्त (केन्द्रीय), धनबाद के माध्यस्थ्म के लिए निर्देशित करने का करार किया गया है।

विनिविष्ट विवादग्रस्त विषय :

क्या यनियन की था गंगावयाल सिंह, लिपिक की लिपिकीय ग्रेंड-1 में रखने की मांग स्थाययोजित है। यदि हां, तो वह किथ अनुतोष का हरूदार है,

- 2. विवाद के पक्षकारों के विवरण (जिसमें भ्रन्तर्वेशित स्थापन या उपक्रम का न(म तथा पताभी सम्मिलित है)
- ा. मैसर्स बी० सी० सी० लिमिटेड की बरारी कोलियरी, अकघर भूलनबगरी, जिला धनवाद के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध मियोजक । 3. राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ, राजेन्द्र पथ, धनबाद ।
- 3. कर्मकार का नाम, यदि वह विवाद श्री गंगा दयाल भिह, लिपिक, का में स्थयं शामिल है या यूनियम ना नाम यदि कोई हो, जो प्रमनगत कर्मकार या कर्मकार। का प्रसिनिधिश्व करती है।
- प्रसिनिधित्व राष्ट्रीय कोलियरी मजबूर संघ, राजेन्द्र पथ धनशाद करती है।
- उपक्रम में नियोजिस श्रमिको की कुल संख्या

2209

् 5. विवाद द्वारा प्रभावित या संभा∻ व्यत प्रभावित होने वाले कर्मकारों की प्रावकलित संख्या ।

(केवल एक)

मध्यस्य भपना पंचाट राजपन्न में माध्यस्थता करार के प्रकाशम की

कारीख से छः मास की भवधि के भीतर देगा या इसने समय के भीतर, जो हमारं बीच पारस्परिक लिखिस करार द्वारा बढाया जाए, देगा । यदि उपर्यक्त कालावधि के भीतर पंचाट नहीं दिया जाता तो माध्यस्थम के लिए निर्देश स्वतः रह हो जाएगा छीर हम नए माध्यस्थम के लिए बातचीत करने को स्थतंत्र होंगे ।

पक्षकारों के हस्तक्ष्मर

(एन० के० पी० सिन्हा), पी० एम

(जी० इति पांडें)

भोवराक्षेत्र एजेंट मैसर्स बी० सी० मी० एल० की बरारी कोलियरी, डाकघर भोवरा जिला धनबाद।

सैनेटरी.

राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ, राजेन्द्र पथ, डाकबर मौर जिला

साध्य:

धनवाव

- (1) भ्रपाठ्य (2) भ्रपाठ्य
- विनांक 31-7-1982 जिला धनबाद

मैसर्स भारत कोंकिंग कोल लि०, की बरारी कोलियरी डाक्स्बर भूतन-बरारी जिला धनबाद

ग्रीर

राष्ट्रीय कोलियरी भजदूर संघ, राजेन्द्र पय, धनवाद के बीच घोषोगिक विवाद के मामले

विशेष भामला

क्या युनियन की यह मांग कि श्री गंगावयाल सिंह, लिपिक को लिपिकीय ग्रेड-1 में रखने की कार्यवाही व्यायोजित है? यदि हां, तो वह किस अनुतोब काहकदार है।

में भौधोगिक विवाद भिधिनियम, 1947 की धारा 10 क के भन्तर्गत उक्त विवाद में मध्यस्य के ध्य में कार्य करने की सक्षमति वेता हं।

ह० के० शनम् यवेल मध्यस्य के हस्ताक्षर

ह०/⊸

[संक्या एल०-20013-III (ए०)/82-की]

ORDER

S.O. 3018.—Whereas an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of Bararee Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Bhulanbararce. District Dhanbad and their workmen represented by Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, Post Offic and District Dhanbad;

And Whears, the said employers and their workmen have by a written agreement under sub-section (1) of section 10A of the Industrial Dsiputes Act, 1947 (14 of 1947), agreed to refer the said dispute to arbitration and have forwarded to the Central Government a copy of the said arbitration agreement;

Now Therefore, in pursuance of sub-section (3) of section 10A of the said Act, the Central Government hereby publishes the said agreement which was received by it on the 3rd August, 1982.

(AGREEMENT)

(Under Section 10-A of the Industrial Dipsutes Act, 1947) Between

Name of the parties;

Representing the Employer:

Shri S.K. Roy Choudhury. Agent, Bararee Colliery of BCCL, P.O. Bhulanbararee,

District Dhanbad.

Representing the workmen: Shri G.D. Pandey.,

Secretary, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, P.O. & District Dhaubad.

It is hereby agreed between the parties to refer the following dispute to the arbitration of Shri K. Shannighavel, Deputy Chief Labour Commissioner (Central), Dhanbad.

- 1. Specific matter in dispute:
- "Whether the Union's deman! for placing Shri Ganga Dayal Singh, Clerk, in Cl. Grade-I is justified? If s? what relief he is entitled to ?
- 2. Details of the parties to 1. Employers in relation to the the dispute (including the name and address of the establishment/undertaking involved).
 - management of Bara Celliery of M/s. B.C.C. Ltd. P.) Bh danbararee, District Dhanbad.
 - 2. Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, (Dhanbad).
- 3. Name of the workman in case he himself is involved in the dispute or the name of the union, if any, representing the workman or workman in question:
- Shri Ganga Dayal Singh, Clerk is represented by Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Dhanbad. Rajendra Path,
- 4. Total No. of workmon 2209. employed in the undertaking.
- 5. Estimated No. of work- 1 (one only). men affected or likely to be affected by dispute.

The arbitrator shall make his award within a period of six months from the date of publication of the arbitration agreement in the official gazette or within such further time as is extended by mutual agreement between us in writing. In case the award is not made within the period aforementioned, the reference to arbitration shall stand automatically cancelled a viwe shall be free to negotiate for fresh arbitration.

Signature of the parties.

Sd/-

S·1/-

(N.K.P SINHA, P.M.) Bhowra Area of Messrs BCCL Post Office Bhowra, District Rashtriya Colliery Mazdon Dhanbad.

(D.G. Pandey) Secretary Sangh, Rajendra Path, P.O. & District Dhanbad.

WITNESS:

- (1) Sd/-
- (2) Sd/-

Dated 31st July, 1982.

IN THE MATTER OF INDUSTRIAL DISPUTE BETWEEN

Bararce Colliery of M/s Bharat Coking Coal Ltd., P.O. Bhulanbararee, District Dhanbad.

AND

Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, Dhanbad

Specific matter.

"Whether the Union's demand for placing Shri Gan Dayal Singh, Clerk in Cl. Grade-I is justified? If 52, what relief he is entitled to ?"

I hereby give my consent to act as an Arbitrator under Section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 in the 'above dispute.

Sd/-

(K. SHANMUGHVEL) Signature of the Arbitrator [No. L-20013(9)/82-D. III(A)]

अधिश

का ल्या : 3019 - मैसर्स भारत कोकिंग कोल विमिटेड, डाकवर सोनाराडों ह जिला धनमाव की गोविस्पपुर एरिया (नं० 3) के प्रबन्धनन से सम्बद्ध नियोजको भौर उनके कर्मकारों के बीच, जिनका प्रनिनिधित्य राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर सघ राजेन्द्रपथ डाकघर झौर जिला धनबाद करनी है, एक ग्रौद्योगिक विवाद विद्यमान है,

ग्रीर उक्त नियोजकों ग्रीर कर्मकारों ने ग्रीग्रांगिक विवाद ग्राधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 10-क की उपधारा (1) के प्रतुसरण में एक लिखित करार द्वारा उक्त विवाद को मध्यस्यम के लिए निर्देशित करने का करार कर निया है धौर उक्त माध्यस्थम करार की एक प्रतिकेन्द्रीय सरकार को भेजी गई है।

ग्रतः, प्रव, उक्त भिधिनियम की धारा 10-क को उपधारा (3) के उपबन्धों के धनुसरण में, केन्द्रीय सरकार उक्त माध्यस्यूम करार को, जो उसे 5 ग्रगस्त, 1982 की मिला था, एतद्द्वारा प्रकाशिम करती है।

(करार)

(भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 की धारा 10-क के प्रकीन) पक्षकारों के नाम .

नियोजको क। प्रतिनिधित्व करने वाले

1. श्री मुरेन्द्र सिंह, उप कामिक प्रबन्धक, गोजिन्द्युः भैत्र संख्या 3 मैसर्स बी० सी० सी० एल० लिमिटेड, डाकबर सानार डीह जिला धनबाद।

कर्मकारो का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री जी० डी० पाडे, सेकेटरी, राष्ट्रीय कालियरी मजदूर सद्य राजेन्द्रपथ, डाकघर व जिला धनकाद ।

पक्षक। यो के कीच निस्नलिखिन भी ग्रोतिक निरुद्ध का अहा केट गनमुधवेल उप मख्य श्रमायुक्त (केन्द्रीय) धनबाद के माध्यस्यन के लिए निर्देशित करने का करार किया गया है।

1. विनिर्विष्ट विष्यदग्रस्य विषय:

''क्या राष्ट्रीय कोलियरी नजदूर संघ, राजेन्द्रपथ की माग कि मैसर्स भारत कोर्भिंग कोल लिमिटेड, डाक्रधर सोनारडीह, जिला धनबाद की क्रिडीह कोलियरी के खनिक, औं गुश्वरन सिंह की बगस्त, 1977 से काम बम्बी न्यायोचित है यदि नहीं तो, उक्क कर्नकार किन अपनुतोय का इकदार है। "

2. "नमा मैसर्म भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, डाकघर सोनारडीह, जिला धनमाद की क्रिडीह कौलियरी के प्रबन्धतंत्र की जनवरी, 1977

मे रोजगार के धीरान तथा डय्टी पर रहते हुए दुर्बटना के कारण आ गुरुचरण सिंह, खनिक की एक प्रांख की नजर चले जाने पर उनकी यथी-चित मुद्रावजा न वेने की कार्यवाही ,न्यायोचित है ? यदि नहीं, तो उक्त कर्मकार किम अनुताय का हकदार है ?"

- (ii) विचाद के पक्षकारों के क्यौरे 1. मैसर्स भारत कोकिंग कोल (जिसमे प्रमावंतिन स्थापन या उपक्रम का नाम तथा पना भी सम्मिलित है)
 - निमिटेश, अक्षाचर सोनारई।ह. जिला धनसाद की कुरिडी ह कोलियरी के प्रबन्धतंत्र से सम्बद्ध नियोजका

2 राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर सब, राजेन्द्रपथ, डाकघर व जिला धनबाद ।

(iii) कर्मकार का नाम, यदि बह विवाद में स्वय शामिल हैया युनियन का माम, यदि कोईहो, जो प्रश्नगत कर्मकार या कर्म-कारों का प्रतिनिधित्व करती है।

श्री गुरचरण सिष्ठ, खनिक मैसर्स बी० सी० सी० एप० लिमिटेड की कुरिष्ठोह कोशियरी, जिस_ी प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय कालियी मजदूरी संघ, राजेख्यय, इक्षावर व जिला धनबाद करती है।

(iv) प्रभावित उपक्रम में नियोजित कर्मकारो की कुल संख्या।

1700 (एक हुआ र और मा। मी)

(v) विवाद द्वारा प्रभावित या सम्भा-म्यतः प्रभावित होने वाले कर्मकारो की प्राक्कि जिल सख्या।

केवल एक

मध्यस्य प्रयन्। पचाट समुचित यरकार द्वारा राजपन्न में इस करार के प्रकाशन की तारी खासे छ: माम की अवधि के भीतर या इतने समय के भी सर, जो हमारे बीच पारस्परिक लिखित करार द्वारा बढाया जाए. देगा। यवि उपर्यक्त कालाविध के भीतर पंचाट नहीं विया जाता तो भाध्यस्यम के लिए निवेश स्वतः रख हो ज।एगा ग्रीर हम नए माध्यस्थम के लिए बाम-चीन करने को स्वतंत्र होंगें।

पक्षकारों के नाम

हस्त०

(श्री स्रेन्द्र सिह) **्प कार्मिक प्रबन्धक**,

जी**० डी**० पांडे

मैं सर्स भारत को किंग कोल लिसिटेड,

(मेक्रेटरी) राष्ट्रीय कोलियरी मंघ,

डाकबर व जिला धनबाद

राजेन्द्र पथ, धनबाद

साध्य :

- (1) भपाठ्य 31-7-82
- (2) मिला प्रसाद 31-7-82

विनाक 31 जुलाई, 1982

मैं भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10-क के अधीन उक्त विवाद में मध्यम्थ के रूप में कार्य करने के लिए अपनी सहमति देता हूं।

विमांक 31-7-82

कें ० शनम् अवेल, मध्यस्य के ह० [सक्या एल०-20013/10/82-डी०-3(ए०)]

ए०वी०एस सर्मा, डेस्क घधिकारी

ORDER

S.O. 3019—Whereas an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of Govindpur Area (No. III) of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Sonardih, District Dhanbad and their workmen represented by Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, Post Office and District Dhanbad;

And whereas the said employers and their workmen have by a written agreement under sub-section (1) of sect n 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), agreed to refer the said dispute to arbitration and have forwarded to the Central Government a copy of the said arbittration agreement.

Now therefore, in pursuance of sub-section (3) of section 10A of the said Act, the Central Government hereby publishes the said agreement which was received by it on the 5th August, 1982.

AGREEMENT

(under Section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947)

BETWEEN

Name of the parties:

Representing Employers:

Shri Surender Singh,

Deputy Personnel Manager, Govindpur Arca (No. III). M/s Bharat Colking Coal Ltd., P.O. Sonardih, District Dhan-

bad.

Representing the workmen;

Shri G.D. Pandey, Secretary, Rashtriya Collicry Mazdoor Sangh, Rajendra Path, P.O.

& Distt: Dhanbad.

It is hereby agreed between the parties to refer the following dispute to the arbitration of Shri K. Shanmughavel, Deputy Chief Labour Commissioner (Central), Dhanbad.

- (i) Specific matters in dispute:
- 1. "Whether the demand of Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, Dhanbad, that the stoppage from work of Shri Gurucharan Singh, Miner, Kooridih Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, P.O. Sonardih, District Dhanbad from August, 1977 is justified? If not, to what relief is the said workman entitled ?"
- 2. "Whether the action of the management of Kooridih Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, P.O. Sonardih, District Dhanbad in not giving the duc compensation to Shri Gurucharan Singh, Mmer due to loss of sight of one of his eyes on account of accident while on duty and in course of employment in January, 1977 is justified? If not, to what relief is the said workmen entitled?"
- (ii) Details of the parties to 1. Employers in relation to the the dispute including the taking involved).

management of Kooridih name and address of the Colliery of Messrs Bharat establishment or under- Coking Coal Limited, P.O. Sonardih, Distt. Dhanbad.

2. Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, P.O. & Distt. Dhanbad.

case he himself is involvname of the union if any representing the workman Colliery or workmen in question.

(iii) Name of the workman in Shri Gurucharan Singh, Miner, Kooridih Colliery of M/s. ed in the dispute, or the Bharat Coking Coal Ltd., represented bv Rashtriya Mazdoor Sangh, Path, Dhanbad. Rajendra

- (iv) Total number of work- 1700 (one thousand and seven men employed in the un- hundred). dertaking.
- (v) Estimated number of One only. workmen affected likely to be affected by the dispute.

The Arbitrator shall make his award within a period of six months from the date of publication of this agreement in the official gazette by the appropriate Government, or within such further time as is extended by mutual agreement between us in writing. In case award is not made within the period aforesaid, the reference to arbitration shall stand cancelled and we shall be free to negotiate for fresh arbitration.

Signature of the parties :

Sd/-

Sd/-

Shri Surender Singh Deputy Personnel Manager, M/s. B.C.C. Ltd., P.O. & Distt: Dhanbad. 31-7-1982

G.D. Pandey, Secretary, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path. Dhanbad, 31-7-1982

Witnesses:

- (1) Sd/-
- (2) Sd/-

Dated, the 31st July, 1982

I hereby give my consent to act as an Arbitrator under section/10A of the Industrial Disputes Act, 1947 in the above disputes.

> K. SHANMUGHAVE Signature of the Arbitrator [No. L-20013(10)/82-D. III (A)]

आवेश

नई दिल्ली, 21 मगस्य, 1982

का० आ० 3020.--मैसर्म भारत को किए कोल लिमिटेस को मिक भवत. डाकबर सरायकेला, जिला धनबाद के प्रबंधतन्न से सम्बद्ध नियोजकों ग्रीर जनके कर्मकारों के बीच, जिनका प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय कोलियरी मजबर संघ करता है, एक भौग्रोगिक विवाद विद्यमान है;

भीर उक्त नियोजकों भीर उनके कर्मकारों ने भीश्लोगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 10-क की उपधारा (1) के प्रन्तर्गत एक लिखिक कराष्ट्र द्वारा उक्त विवाद को माध्यस्थ्म के लिए निर्देशित करने का करार कर लिया है भीर उक्त साह्यस्थम करार की एक प्रति केन्द्रीय सरकार को भेजी गई है।

भन भन भौद्योगिक विवाद श्रधिनियम 1947 (1947 का 14) की धारा 10-क की उपधारा (3) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार उक्त माध्यस्थम करार को जो उसे 3 भगस्त 1982 को मिला था एनदहारा प्रकाशित करती है।

करार

(भौद्योगिक विवाद मधिनियम 1947 की धारा 10-क के भ्रधीन) पक्षकारों के नाम .--

नियोजको का प्रतिनिधित्व करने वाले . श्री मी० चौबे,

उप कार्मिक प्रसंधक मै० भारत कोकिय कोल लिमिटेड कार्मिक भवस, धनबाद ।

कर्मकारो का प्रतिनिधित्व करने वाले . अभे जीव डीव पार्डे.

सैकेटरी.

गष्टीय कोलियरी मजदर संघ राजेस्त्र पथः धनबादः।

पक्षकारों के बीच निम्निलिखित बीद्योगिक विवाद को श्री के० शनस्घ-बेल उप मक्य श्रमायुक्त (केन्द्रीय) धनबाद के माध्यस्थम के लिए निर्देशित करने का करार किया गया है।

(i) विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त विषय

युनियन की यह न्यायोचित है कि श्री सुदामा तिवारी की पहली जनवरी. 1980 से श्रेणी-V में मैकेनिकन फिटर के रूप में निर्दिष्ट किया जा∘? यदि हा, तो कर्मकार किस भन्तोष का हकदार **∄** ?"

(ii) विवास के पक्षकारों का विवरण जिसमें धर्तविसत स्थापन या उपक्रम क। नाम और पता भी मम्मिलित है।

मैसर्स भारत को किंग कोल लि०, कार्मिक भवन डाक-सरायढेला, धनबाद के मख्यालय के प्रबं-धतंत्र से संबद्ध नियोजक।

(iii) कर्मकार का नाम यदि वह स्वयं राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ (इंटक), विवाद में भंतर्गम्त हो या कोई संघ प्रश्नगत कर्मकार या कर्मकारों का प्रति-निधित्व करता हो तो उसका नाम ।

र।जेना पथ, धनबाद

(iv) प्रभावित उपक्रम में नियोजित कर्मकारों की मूल संख्या।

300

(v) विवाद द्वारा प्रभावित या सम्भाध्यतः प्रभाधित होने वाले कर्मकारो की प्राक्कलिन

IT U

मध्यस्य प्रयना पंचाट इस माध्यस्यम करार के सरकारी राजपत में प्रकाशन की तारीख में छह माह की भवधि के अन्दर या इतने भीर समय के भीतर ओ हमारे बीच पारस्परिक लिखित करार द्वारा बढ़ाया आए, देगा। यदि पूर्वविणित अविधि के भीतर पचाट नहीं विया जाता तो माध्यस्थम के लिए निदेश स्थत रहे हो जाएगा झौर हम नए माध्यस्थाम के लिए बातचीत करने को स्वतंत्र होगे

पक्षकारों के हस्पाक्षर :

ह० सी० चोबे, ह० जी० डी० पाइटें. उप कार्मिक प्रबन्धक, सैनेटरी. मैसर्स भारत कोंकिंग कोल लि० राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ, कार्मिक भवन, राजेस्द्र पथ, डाकघर सरायतेला. धनवाद ।

23-7-82

साक्षी '---

धनबाद ।

- 1 ह०/--ग्रपठनीय
- 2. ह्०/- भपठ नीय

मैसर्स भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, कार्मिक भवन डाकबर सरायहेला, जिला धनबाद के बाटर डिवीजन के प्रबद्धतंत्र से संस्वद्ध नियोजक

मोग

राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ (इंटक) राजेन्द्र पय धनबाद--श्री भूबामा निवारी मैकेनिकल फिटर कर्मकार वाटर डिबीजन मै० भारत कोर्किंग कोल लि॰ कार्मिक भवन डाकघर सरायहेला जिला धनबाद के बारे में

के कीच प्रौद्धोगिक विवाद के

मामले

ग्रीशोगिक विवाद ग्रधिनियम 1947 की धारा 10-क के घन्तर्गत सध्यस्थ के रूप में काम करने के लिए प्रापनी उपयक्त विनाद में सहमति वेना हं।

> 'ह०/~-के शनमुख्येल उपमुख्य श्रमायुक्त (केस्द्रीय) धनबाद भीर माध्यस्थ

> > 23-7-1982

मंख्या एल ० - 20013/8/82-की (III) p] ए० वी ०एस० शर्मा, डैस्क ग्रधिकारी

ORDER

New Delhi, the 21st August, 1982

S.O. 3020.—Whereas an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Karmik Bhavan, Post Office Saraidhela, District Dhanbad and their workmen represented by Rashtriay Colliery Mazdoor Sangh;

And whereas the said employers and their workmen have by a written agreement under sub-section (1) of section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), agreed to refer the said dispute to arbitration and have forwarded to the Central Government a copy of the said arbitration agreement;

Now therefore, in pursuance of sub-section (3) of section 10A of the said Act, the Central Government hereby publishes the said agreement which was received by it on the 3rd August, 1982.

AGREEMENT

(under section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947)

Name of Parties:

Shri C. Representing Employer: Choubey, Deputy

Personnel Manager, M/s. Bharat Coking Coal Ltd.,

Karmik Bhavan, Dhanbad.

Representing workmen:

Shri G.D. Pandey, Secretary, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path, Dhan-

bad.

It is hereby agreed between the parties to refer the following dispute to the arbitration of Shri K. Shanmughavel, Deputy Chief Labour Commissioner (Central, Dhanbad).

(i) Specific matter in dispute Whether the demand of the union that Shri Sudama Tewary should be designated as Mechanical Fitter in Category-V with effect from the 1st January, 1980 is justifled? If so, to what relief the workman is entitled? taking involved:

(ii) Details of the parties to Employers in relation to th the dispute including the management of Headquarters name and address of the of M/s Bharat Coking Coal Ltd. establishment or under- Karmik Bhavan, P.O. Saraid-Dhanbad. hela.

case he himself is involved in the dispute or the Path, Dhanbad. name of the union, if any, representing the workman or workmen in question:

(iii) Name of the workman in Rashtriya Colliery Mazdoor (INTUC), Rajendra Sangh,

- (iv) Total number of work- 300 men employed:
- (v) Estimated number of 1 (One) workmen affected or likely to be affected by the dispute:

The Arbitrator shall make his award within a period of six months from the date of publication of the aribtration agreement in the official gazette or within such further time as is extended by mutual agreement between us in writing. In case the award is not made within the period aforementioned, the reference to arbitration shall stand automatically cancelled and we shall be free to negotiate for fresh arbitration.

Signature of the parties:

Sd/-Sd/-C. Choubey, G.D. Pandey, Dy. Personnel Manager, M/s Secretary, Rashtriva Colliery Mazdoor Bharat Coking Coal Ltd., Sangh, Rejendra P. th, Dhn-Karmik Bhayan, Dhanbad. bad.

the 23rd July, 1982.

In the matter of Industrial Dispute between Bharat Coking Coal Ltd., Karmik Bhavan, P.O. Saraidhela, Dhanbad, and Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Rajendra Path Dhanbad Specific matter:

"Whether the demand of the union that Shri Sudama Tewary should be designated as Mechnical Fitter in Category-V with effect from the 1st January, 1980 is justified? If so to what relief the workman is entitled ?"

I hereby give my consent to act as Arbitrator under Section 10A of the Industrial Disputes Act, 1947 in the above dispute.

K. SHANMUGHAYEL

Deputy Chief Labour Commissoner (Central) 23-7-82 Dhanbad and Arbitrator.

> [No. L-20013(8)/82-D. III (A)] (A. V. S. SARMA), Desk Officer

नई दिल्ली, 7 प्रगस्त, 1982

का आतः 3021. - केन्द्रीय सरकारं लीह अधस्य खान तथा मैंगनीज भयस्क खान श्रम कल्याण निधि निगम 1978 के निगम-3 के साथ पठित लौह अधस्क खान सथा मैगनींज अधस्क खान श्रम कल्याण निधि मधिनियम 1976 (1976 का 61) की धारा-6 द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत के राजपत्न भाग IIखंड-3 उपखंड (ii) स्(रीख 3 अन्त्वर 1981 के पृष्ठ 3334 पर प्रकाशित भारत सरकार

मन मंत्राना को प्राधित्वा। संध्या काल्जा० 2692 तारीचा 14 सितम्बर 1981 में निम्नलिखित समोधन करती है धर्यात :---

उन्त अधिसूचना में क्रम सब्धा-10 के नामने की प्रविष्टि के लिए निन्नलिखित प्रतिस्थापित १६४॥ जाए .--

"10 श्री जी० क्वी० सिंह

सहायका महाप्रबंधका किरिबुक लौह भयस्क प्रोजेक्ट बोकारो स्टील प्लाट सिह्मुम (बिहार) 1"

[एफ॰ सं॰ यू-23017/10/80-एम IV]

भगोक गुप्त, उप साचिव

New Delhi, the 17th August, 1982

S.O. 3021.—In exercise of the powers conferred by section 6 of the Iron Ore Mines and Manganese Ore Mines Labour Welfare Fund Act, 1976 (61 of 1976) read with rule 3 of the Iron Ore Mines and Manganese Ore Mines Labour Welfare Fund Rules, 1978, the Central Government makes the following amendment to the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 2692 dated 14th September, 1981 published at page 3335 of the Gazette of India, Part II, section 3, sub-section (ii) dated 3rd October, 1981 namely:—

In the said notification, for the entry against serial No. 10 the following shall be substituted namely:—

"10. Shri G. D. Singh

Assistant General Manager,

Kiriburu Iron Ore Project,

Singhbhum (Bihar) of Bokaro Steel Plant".

[F. No. U-23017/10/80-M.IV] ASHOK GUPTA, Director

नई दिल्ली, 10 प्रगस्त 1,982

कारुआर 3022 केन्द्रीय सरकार कर्मचारी राज्य बीमा प्रधिनियम, 1948 (1948 का 31) की घारा 91क के साथ पठित घारा 88 द्वारा शिक्तियों का प्रयोग गरते हुए नैज्ञानिक घौर घौद्योगिक अनुसंघान परिषद की केन्द्रीय सड़क धनुसंघान सस्यान नई दिल्ली के निर्माप कर्मचारियों को 23 अक्तूबर, 1977 से 30 सितस्बर, 1982 जिसमे यह तारीख भी सिम्मिनित है, तक की अवधि के लिए उक्त अधिनियम के प्रवर्तन से छूट देती है।

- 3 उक्त छट की मतं निम्नि/निखिन हैं अर्थात् '--
- (1) पूर्वोक्त कारखाना जिसमें कर्मचारी नियोजित हैं एक रिजस्टर रखेगा जिसमें छूट प्राप्त कर्मचारियों के नाम भौर पदाभिधान दिखाए जाएँमे;
- (2) इस छूट के होते हुए भी कर्मचारी उक्त अधिनियम के अधीन ऐसी प्रमुविधाए प्राप्त करने रहेंगे जिनको पान के लिए बे इस अधिसूचना द्वारा दी गई छूट के प्रवृत्त होने की मारीख से पूर्व पंचन श्री-वायों के आधार पर हकदार हो जाते;
- (3) ख़ूट प्राप्त प्रविधि के लिए यदि कोई अभिदाय पहने ही किए जा चुके हों तो वे वापस नहीं किए जाएंगे;
- (4) उन्न फारखाने का नियोजक उस प्रवधि की वाबन जिसके दौरान उस कारखाने पर उक्त प्रधिनियम प्रवर्तमान था (जिसे इसमें इसके पश्चात् "उक्त प्रविध" कहा गया है) ऐसी

विवरणियों ऐसे प्ररूप में भीर ऐसी विधिष्टियों सिहर्त वेश हैं जो कर्मकारी राज्य कीमा (साधारण) विनियम, 1950 के प्रधीन उसे उक्त श्रवधि की बाबत देय था :

- (5) भिगम वृक्षारा उक्त प्रक्षितियम की घारा 45 की उपघारा (1) के प्रधीन नियुक्ति किया गया कोई निरीक्षक या निगम या इस नित्तित प्राधिकृत कोई अन्य परधारी
 - (1) उक्त प्रविध की बाबत धारा 44 की उपधारा (1) के प्रधीन की गई किसी चित्रणी की विशिष्टियों की संस्थापित करने के प्रयोजनार्थ या
 - (2) यह ध्रश्लिभिचत करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी राज्य बीमा (शाधारण) विनियम, 1950 द्वारा यथा-ध्रपेक्षित राजिस्टर ध्रीर ध्रश्लिख उक्त ध्रवधि के निए रखे गये थे या नष्टी या
 - (3) यह अभिनिशियत करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मकारी नियोजक बारा विए गए उन फायदों को जिसके प्रतिफल स्वरूप इस अधिसूचना के अधीन छूट दी जा रही है नकद और वस्तु रूप मे पाने का हकदार बना हुआ है या नहीं था
 - (4) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनाय कि उस प्रविधि के दौरान जब उक्त कारखाने के संबंध में प्रधिनियम के उपवन्ध प्रवृत्त थे एसे किन्हीं उपवन्धों का प्रनुपान्नक किया गया था या नहीं

निम्नलिखित कार्य करने के लिए समनत होगा :--

- (क) प्रधान या अव्यवहित नियोजक से अपेका करना कि षष्ठ उसे ऐसी जानकारी दे जिसे उपरोक्त किरीकक या अन्य पदधारी भावश्यक समझता है
- (ख) ऐसे प्रधान या श्रव्यविह्न पियोजक के श्रिष्ठिभोगाश्रीन हैं किसी कारखाने, स्थापन, कार्यालय या श्रन्य परिसर में किसी भी उचित समय पर प्रवेश करना श्रीर उसके प्रभारी से यह श्रेपेक्षा करना कि वह व्यक्तियों के पियोज्जन श्रीर मजदूरी के संबंधित ऐसे लेखान बहिया श्रीर श्रन्य दस्तावेज ऐसे निरीक्षक या श्रन्य पद्यारी के समक्ष प्रस्तुत करे श्रीर उसे उनकी परीक्षा करने दे या उसे ऐसी जानकारी दे जिसे वह शावश्यक समझता है या
- (ग) प्रधान या ध्रव्यविहर नियोजक के उसके घर्षिकर्ता या सेवक की या ऐसे किसी ध्यक्ति की जो ऐसे कारखादे, स्थापन, कार्याक्तय या धन्य परिसर में पाया जाए या ऐसे किसी व्यक्ति की जिसके बारे में उक्त निरीक्षक या ग्रन्य पदधारी के पास यह विग्वास करने का युक्ति-युक्त कारण है कि वह कर्मचारी है, परीक्षा करना या
- (घ) ऐसे कारकाने, स्थापन, कार्यालय या भन्य परिसर में रखे गए किसी रिअस्टर लेखाबहीया भन्य यस्तावेज की नकल सैयार करना या उससे उद्दारण लेना।

[स॰ एस-38014/38/81-ए**च॰ भाई॰**]

स्वष्टिकरण आपन

इस मामले में पूर्विपक्षी प्रभाव से छूट देनी धावश्यक हो गई है क्योंकि छूट की मंजूरी के लिए प्रार्थनापन्न देरसे प्राप्त हुआ। तथापि यह प्रमाणिश किया जाता है कि पूर्विक्षी प्रभाव से छूट देने से किसी के हिस पर प्रति-कूल प्रभाव मही पड़ेगा।

New Delhi, the 10th August, 1982

S.O. 3022.—In exercise of the powers conferred by section 38 read with section 91A of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby exempts the regular employees of the Central Road Research Institute, New Delhi, beloging to Council of Scientific and Industrial Research from the operation of the said Act for the period from 23rd October, 1977 upto and inclusive of the 30th September, 1982.

The above exemption is subject to the following conditions, namely:—

- The aforesaid fectory wherein the emilyees are employed shall maintain a register showing the names and designations of the exempted employees;
- (2) Notwithstanding this exemption, the emloyees shall continue to receive such benefits under the said Act to which they might have become entitled to on the basis of the cotributions paid prior to the date from which exemption granted by this notification operates;
- (3) The contributions for the exempted period, if already paid, shall not be refunded;
- (4) The employer of the said factory shall submit in respect of the period during which that factory was subject to the operation of the said Act (hereinafter referred to as the said period), such returns in such form and containing such particulars as were due from it in respect of the said period under the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950;
- (5) Any inspector appointed by the Corporation under sub-section (1) of section 45 of the said Act, or other official of the Corporation authorised in this behalf shall, for the purposes of—
- (i) verying the particulars contained in any return submitted under sub-section (1) of section 44 for the said period; or
 - (ii) ascertaining whether registers and records were maintained as required by the Employees' State Insurance (General Regulations, 1950 for the said period; or
- (iii) ascertaining whether the employees continue to be entitled to benefits provided by the employer in cash and kind being benefits in considerati n of which exemption is being granted under this no ification; or
- (Iv) ascertaining whether any of the provisions of the Act had been complied with during the period when such provisions were in force in relation of the said factory

be empowered to-

- (a) require the principal or immediate employer to furnish to him such information as he may conside necessary; or
- (b) enter any factory, establishment, office or other premises occupied by such principal or immediate employer at any reasonable time and require any person found incharge thereof to produce to such inspector or other official and allow him to examine such accounts, books and other documents relating to the employment of persons and payment of wages or to furnish to him such information as he may consider necessary; or
- (c) examine the principal or immediate employer, his agent or servant, or any person found in such factory, establishment, office or other premises or any person whom the said inspector or other official has reasonable cause to believe to have been an employee; or
- (d) make copies of or take extracts from, any registe. accumot book or other document maintained in such factory, establishment, office or other premises.

 [No. S-38014/38/81-JII]

EXPLANATORY MEMORANDUM

It has become necessary to give retrospective effect to the exemption in this case, as the application for exemption was received late. However, it is certified that the grant of exemption with retrospective effect will not affect the interest of anybody adversely.

CORRIGENDUM

New Delhi, the 11th August, 1982

S.O. 3023.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S. O. 911(E) dated 26th December 1981 published in the Gazette of India Extraordinary, Part II Section 3 Sub-section (ii), dated the 26th December 1981, at page-1580 in line 10, for

"URUAIYAR" read "URUVAIYAR'.

[No. S-38013/31/81-H]]

शुद्धि-पत

नई दिल्ली, 11 प्रागमः, 1982

फां 3024— भारत के धाता द्वारण राजपत, भारा 2, खंब 3, उपखंड (ii) में दिनांक 12 फरवर्रा, 1982 को प्रकाशित, भारत सरकार के श्रम मत्रालय की धिसूचना संख्या काञ्चा० 75 (ध), दिनाक 12 फरवर्रा, 1982 के,—

पृष्ठ 121 की 13वी पिक्न में "पठानकोट जिले" के स्थान पर "गरवासपुर जिले" पढ़े।

[स॰ एस-38013/3/82-एच॰म्राई॰]

CORRIGENDUM

New Delhi, the 11th August, 1982

S.O. 3024.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. 5, O. 73(E), dated 12th Feb.uary, 1982 published in the Gazette of India Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (ii) dated 12th February 1982, at page-122 in line 1, for 'district Pathankot' read "district Gurdaspur".

[No. S-38013/3/82-HI]

नई दिल्मी, 13 प्रवस्त 1982

का॰आ.० 3025—-मैंसर्म कर्नाटक डेरी इवलपमेंट कारपोरेणन लिमि-टेड रिजिस्टर्ट एड सेन्ट्रल झाफिन, 22 पूर्णिमा बिल्डिंग, जयबमा राजेन्द्र फर्स्ट कास, बगनोर-27

(जिसे इसमें इसके पश्चान् उपन स्थापन कहा गया है) ने कर्मनारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबन्ध अधिनियम 1952 (1952 का 19), (जिसे इसमें इसके पश्चान् उपन अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपक्षारा (2क) के अधीन छूट दिए जोने के लिए ग्रावेदन किया है,

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उकत स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिवाय या प्रीमियम का सवाय किए विना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बोमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहें है और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फाय ों से अधिक अनुकृत हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहस्य बोमा स्कीम. 1976 (जिसे इसमे इसके परचान् उकत स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्षेय हैं;

श्रत भेन्द्रीय सरकार, उक्त श्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वाराश्रवल शिवतयों का श्रयोग करने हुए और इससे उपाबद्ध धन्सूची मे विनिदिस्ट शर्तों के श्रधीन रहते हुए, उन्तरणापन को तीन वर्ष की श्रवधि के लिए उक्त स्कीम सभी उपबंधी के प्रवर्तन से छूट देती है।

अपुसूची

- उन्हा स्यापन के सम्रंथ में नियोजक प्रोदेशिक भिविष्य निधि प्रास्क्त, कर्ताटक को ऐसी विवरणियों भेजेगा प्रौर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के निष् ऐसी मुनिधाएं प्रदान करेगा जो कि केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करें ।
- 2 नियोगक, ऐसे निरंक्षिण प्रभारों का प्रत्येक मास की समान्ति के 15 दिन के भीतर सदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त ग्राधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के भ्राधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें ।
- 3 सामूहिक बीना स्कीम के प्रशासन में, जिसके घन्नर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का संघाय, लेखाओं का भनरण, निरीक्षण प्रभारो का संदाय स्नादि भी है, होने वाले सभी ब्ययो का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा धनुमीवित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, धौर जब कभी उनमें संबोधन किया तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्यापन के रचना-पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यवि कोई ऐसा कर्मैचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त प्रिष्ठितियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त देर्ज करेगा भीर उसकी बाबत श्रावण्यक श्रीमियम भारतीय जीवना बीमा निगम को संबत्त करेगा।
- 6. यदि उनन स्कोम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जान हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम कर्मवारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रुप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मवारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के ब्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से प्रधिक ब्रमुक्त हों, जो उक्त स्कीम के ब्रधीन घनुक्रेय है।
- 7 सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मनारी की मृत्यु पर उस स्कीस के श्रधीन रहेस रकम उस रकम से कम है जो कर्मनारी को उस दक्स में संदेय होती जब यह उकत स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजन कर्मगरी के विकित वास्ति/नामनिर्देशिक्षी को प्रतिकर के कर में दोनों रकसों के श्रन्तर के बरावर रकम का नदाय करेगा।
- 8 सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी गणोधन, प्रादेशिक भिविष्य निधि भ्रायुक्त, कर्नाटक के पूर्व शनुभोवन के बिना नहीं किया आयेगा भौर जह किसी संजोधन से कर्मणीरियों के हिन पर प्रतिकृत प्रमान पड़ने की मभावना हो बहां, प्रादेशिक भिक्षण निधि धायुक्त, भ्रपना भ्रतुमोदन से पूर्व मर्भनारियों की अपना नृष्टिकीण स्पण्ट करने का युक्त । सुक्त भ्रवन देगा ।
- 9. यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय श्रीवन बीभा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले धपना चुका है प्रधीम नहीं रह जाने हैं. या इस स्कीम के धधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायवे किसी शिति से कम हो जाने है, तो यह छूट को रह की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कार्रणवज्ञ, नियोगक उस नियन नारीख के झीतर, जो भारतीय जीवन बीमा नियम नियन करे, प्रीमियम का सदाय करने में भ्रमकल रहना है, और पानिसी को व्यापगम हो जाने दिया जाता है तो, छूट रह की जा सकती है।
- 11. नियाजक द्वारा प्रीमियम के सदाय में किए गए किमी व्यक्तिकम की वला में, उन मृत सदस्यों के नामिनिर्देशितियो या विधिक वारिसों

को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के धन्तर्गत होते? बीमा फायदों के सदाग या उत्तरशस्ति विश्वीक्षक पा होगा।

12 उनत स्थापन के लंबध में नियोजक, इस स्कीम के मधीन माने बाने किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकवार नामनिर्देशितियों/ विक्षिक वारिसो को बीमाकृत रकम का सदा। स्परना से भौर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बामा निगम से पितकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीवर सुनिष्ठत करेगा।

[मं॰ एस-35014(90)/82-पी॰एफ॰-I]]

New Delhi, the 13th Aug 1st, 1982

S.O. 3025.—Whereas Messrs Kainataka Dairy Development Corporation Limited, Regd. and Central Office, 22, Poorning Buildings. Jaynchamarajandra Road, 1st Cress Bangalore-27, (hereinafter telegred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (here nafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefit under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees that the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1 The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Kannataka and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Contral Government may, from time to time, direct under clause (c) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the class of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer thall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the Language of majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employers under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.

- 7 Notwith tanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8 No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10 Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due late as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to hapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12 Upon the death of 'he member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure promot payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 't days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. 5-35014(90)/82-PF. II]

का॰ अ० २६ -- मैसर्स नीलगिरी डिस्ट्रिक्ट कोभ्रापरेटिय मिल्क प्राडयूसर्स यूनियन लिमिटेड, भीटाकमण्ड-643001 (टी एन 3102) (जिसे इसमें इसके पण्डात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कमेंचारी भीवष्य निधि भीर प्रकीण उपजन्य भिधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिससे इसमें इसके पण्डात् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के मधीन छूट विए जाने के लिए माबेदन किया है;

सौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी किसी पृथक ग्रांभदाय या प्रीमियम का संवाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के ग्राधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं ग्रीर ऐसे कर्मचारी निक्षेप के लिए ये फायदे उन फायदों से ग्राधिक ग्रमुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे हमने इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के ग्राधीन उन्हें ग्रमुक्केय है;

भत केन्द्रीय सरकार, उक्स मिन्नियम की घारा 17 की उपघारा (2क) द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपासद मनुसूची में विनिधिष्ट शर्तों के मधीन रहते हुए, उक्त स्थापना को सीम वर्ष की मधी के लिए उक्स स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट वेली हैं।

अनुसूची

- 1 उक्त स्थापन के संबंध मे नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायु-क्त, तमिलनाडु को ऐसी विवरणियां भेजेगा भीर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी मुखिधाए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे ।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारो का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त मधिनियम की घारा 17 की उपघारा (3क) के खण्ड (क) के भ्रष्टीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।

- 3 सामूहिक जोमा स्कीम के प्रशासन मे, जिसके ग्रन्तगंत लेखाओं का रखा जाना विवरणियो का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का सदाय, लेखाओं का ग्रंतरण, निरीक्षण प्रभारों का सदाय ग्रादि भी हैं, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक ग्रारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा झमुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, झौर जब कभी उनमें संशोधन किया जाए तब उस संशोधन की प्रति संधा कर्मचारियों की बहुसक्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का झनुबाद, स्थापन के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कमंबारी, जो कमंबारी भिष्टिय निधि भा या उक्त प्रिप्तियम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त वर्ज करेगा और उसकी बाबत प्रावश्यक श्रीमियम शारतीय जीवना बीमा निगम को संवत्त करेगा।
- 6 यदि उन्त स्कीम के ग्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाएं जाते हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के ग्रधीन वर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से में विद्ध की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के ग्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से ग्रधिक ग्रमुकूल हो, जो उक्त स्कीम के ग्रधीन ग्रमुक्त हो, जो उक्त स्कीम के ग्रधीन ग्रमुक्त हो
- 7. भामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी यदि किसी कर्मजारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मजारी को उस द्वाम में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के प्रधीन होना तो नियोजक कर्मजारी के विधिक वारिन/नामनिर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के प्रसर के बराबर रकम का सदाय करेगा।
- 8 सामृहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन प्रावेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त तामलनाड़ के पूर्व धनुमोवन के बिना नहीं किया जाएणा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रमाव पड़ने की संभावना हो वहां प्रावेशिक भविष्य निधि धायुक्त प्रपना धनुमोवन देने से पूर्व कर्मचारियों को धपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त धवसर देगा।
- 9 यदि किसी कारणवंश स्थापन के कर्मचारी भारतीय जीवन बीमा निगम की उस मामूहिक बीमा स्कीम के जिसे स्थापन पहने प्रपता चुका है अक्षीन नहीं रह जाते हैं या इस स्कीम के अक्षीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं तो यह छूट रह की जा सकती हैं।
- 10 यदि किसी कारणवण नियोजक उस नियत सारीख के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियस करे प्रीमियम का सदाय करने मे ग्रसकन रहना है भीर पालिसी को व्यवणत हा जाने दिया जाता है सो छूट रह की जा सकती है।
- 11 नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी व्यक्तिका को वंशा में उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दें गई होती तो उक्त स्कीम के घन्तर्गन होते बीमा फायदों के संवाय का उक्तरवायित्व नियोजक पर होगा।
- 12 उक्त स्थापन के सबध मे नियोजक इस स्कीम के मझीन माने बाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उनके हकदार भामनिर्वेशितियो/विधिक बारिसो को बीमाकृत रकम का सवाय तत्परता से मौर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर सुनिध्चित करेगा।

[स॰ एम-35014(91)/82-पी एक-II]

S.O. 3026.—Whereas Messrs Nilgiris District Cooperative Milk Producers Union Limited, Ootacammund-643001 (TN. 3102) (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Depositinked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Not, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exemp's the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-sectin (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishmen, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employces.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund of the Providen Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insuiance Scheme and pay necessary premium in respect of him o the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.

- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer falls to pay the premium within the due late as fixed by the Life Insurance Corporation of Indía and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014 (91)/82-PF-II]

का० आ० 3027.—मैसर्स पचमहल हिस्ट्रिक्ट को-प्रापरेश्व बैक क्षिमिटेंड गोध्रा जिला पंचमहल (जी ने 14659) (जिसे इसमें इसके परचात् जक्त स्थापन कहा गया है) में कर्मचारी भनिष्य निधि और प्रकीर्ण उपबच्ध प्रधिनियम 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात् जक्त प्रिधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के प्रधीम छूट दिए जाने के लिए ग्रावेदन किया है;

धौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्वापन के कर्मवारी किसी पृथक धिमदाय या प्रीमिथम का संवाय किए बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के बाधीन जीवन बीमा के क्य में फायवे उठा रहे हैं घौर ऐसे कर्मवारियों के लिए ये फायवे उन फायवों से धिधक अनुकृत हैं जो कर्मवारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के घाडीन उन्हें धन्हीय हैं;

भतः केन्द्रीय सरकार उक्त प्रिष्ठितयम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवक्त चिक्तयों का प्रयोग करने हुए और इससे उपाध्य प्रनु-सूची में विनिर्दिष्ट गतौं के प्रधीन रहते हुए उक्त स्थापन को तीन वर्ष की ध्विध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसूची

- 1 उक्त स्थापन के सबध मे नियोजक प्रावेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त गुजरात को ऐसी विवरणियां भेजेगा भौर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय भग्कार समय-समय पर निविष्ट करे।
- 2 नियोजक ऐसे निरीक्षण प्रभारो का प्रत्येक मास की समाध्य के 15 विम के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय मरकार उक्त ग्राधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के ग्रधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3 स(मृहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में जिसके भन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना बीमा प्रीसियम का संवाय लेखाओं का धतरण निरीक्षण प्रभारों का सवाय भावि भी है होने वाले सभी व्यय का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक केन्द्रीय भरकार द्वारा यथा धनुमोदिन मामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति और अब कभी उनमें संयोधन किया जाए तब उस संगोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का धनुवाद स्वापन के सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी जो कर्मचारी प्रावच्य निधि का या उक्त प्रश्नित्यम के प्रश्नीन छुट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य हैं उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजक सामृहिक कीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा श्रीर उसकी बाबत श्रावण्यक प्रीमित्रम भारतीय जीवन बिमा निगम को संदक्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मेचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचिक्त रूप से वृद्धि की जाने की अध्वस्था फरेगा जिस्ते कि वर्मचारियों के लिए सामृहिक बजना स्कीन के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृष हों जा उक्त स्कीम के अधीन अनुशेष है।
- 7 सामूहिक बीमा स्कीम में गिक्सी बात के होते हुए भी याँव किसी कर्मजारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अधीन मंदेय रक्षम उस रक्षम में कम है जो कर्मजारी को उस देशा में सदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो नियोजक कर्मजारी के विधिक वारिम/नामनिर्देशिती को प्रिरिक्ट के रूप में दोनों रक्षमों के अंतर के बराबर रक्षम का संवाय करेगा।
- 8 प्रामृहिक सीमा स्कीम के उपबन्धों मे कोई भी संशोधा प्रादेशिक निषय निधि प्रायुक्त गुजरात के पूर्व अनुमोवन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां जिसी मंगीधन से फर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्राव पड़ने की संधावना हो वहां प्रादेशिक निषय निधि प्रायुक्त अन्ता अनुमोबन देने से पूर्व अकर्मचारियों अनुन प्रतिकृत अन्ता स्वावन देने से पूर्व अकर्मचारियों अनुन प्रतिकृत्त अन्तर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवण स्थापन के कर्मचारी पारतीय जीवन बीमा निगम की उसे सामूहिक बीमा स्कीम के जिसे स्थापन पहले प्रपना चुका है प्राचीन नहीं रह जाते हैं या हर स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीक्षि से कम हो जाने हैं तो यह छूट रह की जा सकती है।
- 10 यदि किसी कारणवश कियोजक उस नियत सारीख के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निशम नियत करे प्रीमियम का संदाय करने में प्रमक्त रहता है और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छूट रह की जा संकती है।
- 11 नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की वशा में उन मूस सदस्यों के नामनिर्देशितियों या निश्चिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के भन्तगंत होते बीमा काथवों के संवाय का उत्तरवाधिस्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक इस स्कीस के घर्षान धाने वाले किसी सदस्य की मृह्यु होने पर उसके हकवार नामनिर्वेशिनियों/वारिसी को बीमाकृत रक्तम का संवाय नत्तरना से घौर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवक बीमा निगम से बीमाकृत रक्तम प्राप्त होने के माल दिन के भीनर मुचिधिवत करेगा।

[स॰ एम-35014(92)/8:-पी एंक-II]

S.O. 3027.—Whereas Messrs Panchmahal District Cooperative Bank Limited, Godhra District, Panchmahals (GT/ 4659) (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to ar the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance

which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment, a copy of the rules of the Group Insurance his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and where any amendment is likely to affect adver-cly the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissionershall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to the cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of arsurance benefits to the nominees or the legal heirs of decreased member who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall en ure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for mand in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014 (92)/82-PF. II]

का ब्लाव 30 28.—मीनने गुजरात को प्रापरिटिय मिल्क मार्केटिंग फेंडरेणत लिमिटेंड, अनूल डेरी रोड, प्रान्त्व-388001(टीव्जेंव/7286) (जिसे इसमें इसके पण्यान् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्पबारी अविषय निधि और प्रकीर्ण उपवन्त्र अधिनियम 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (210) के अधीन छट दिए जाने के लिए आवेदन किया है

श्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी किसी पृथक् अभिदाय था प्रीमिश्रम का सदाय किए बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की राम्हिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं श्रीर ऐसे कर्मचारियों के लिए थे फायदे उन फायदों ने अधिक अनुकृत हैं जो कर्मचारि निटोप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिये इसमें इसके पश्चान् उक्त स्कीम कहा गया है,) के अधीन उन्हें अनुकोश हैं

अनः केन्द्रीय सन्कार उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क्त) द्वारा प्रवत्त पाकियों का प्रयोग करने हुए और उससे उपावक अनुसूत्री में विनिर्दिष्ट पानों के प्रधीन रहने हुए उक्त स्थापन को नीन वर्ष की अवधि के मिए उक्त स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन से छूट देनी हैं।

अम्सृचरि

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भविष्य निधि भ्रायुक्त श्रह्मदाबाद को ऐसी विवरणिया भेजेंगा भ्रोर ऐसे लेखा रखेंगा स्था निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रिय सरकार समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2. नियोजक ऐसे निरीक्षण प्रकारों का प्रत्येक साम की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार उक्क प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय समय पर निदिष्ट करे।
- 3 सामूहिक वीमा स्कीम के प्रमासन में जिनके स्नार्नत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों या प्रस्कुत किया जाना कीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का अन्तरण निरीक्षण प्रधारों संवाय भादि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहुत नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक केन्द्रीय धरकार द्वारा यथा प्रनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति भौर जब कभी उनमें सशोधन किया जाए तब उस संयोधन की प्रति नया कर्मचारियों की बहुसक्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का प्रनुबाद स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रविश्ति करेगा।
- 5 यदि कोई ऐशा कर्मकारी जो कर्मकारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही मदस्य है उसके स्थापन में नियोजिन किया जाता है तो नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका शाम तुरन्न दर्ज करेगा छौर उसकी बावण आवस्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संबक्त करेगा।
- 6 सवि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायवे बढ़ाए जाते हैं तो नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सागृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृत हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुजेय हैं।

- 7. मामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होने हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीप के अक्षीन सबेय रकम उस रकम से सम है जो कर्मचारी को उस दशा से संदेय होती जब वह उसन स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिम/नामिन्दिंशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमी के अंतर के बराबर रकम का संदाय करेगा ।
- 8 सामूहिक बीमा स्कीम के उपवन्धों में कोई भी संशोधन, "प्रादेशिक भविषय निधि ध्रायुक्त, घ्रहमदाबाद, के पूर्व धनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगी; घौर जहां किसी संशोधन से कर्मकारीयों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की साभावना हो वहा, प्रादेशिक भविष्य निधि ध्रायुक्त, प्रपना धनुमोवन देने से पूर्व कर्मकारियों को ध्रयना दृष्टिकोण स्वष्ट करने का युक्तियुक्त प्रवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन वीभा निगम की उस मासूहिक बीमा स्कोम के, जिसे स्थापन पहले प्रपना चुका है प्रधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते है, तो यह छूट रद्द की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजंक उस नियत नारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा नियम नियन करे, प्रीमियम का सदाय करने से श्रमकल रहना है, श्रीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छूट रद्य की जा सकती है।
- 11. नियोजक हारा प्रीमियम के सवाय में किए गए किसी व्यक्तिक्रम की दशा से, उन मृत सदस्यों के नामनिर्वेशितियों या विधिक वारिसों की जो यदि यह, छूट न की गई होती उत्तम स्कीम के श्रन्तर्गत होते, बीमा फायदों के सदाय का उत्तरवाधित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सबध में तियोजक, इस म्कीम के भ्रधीन माने बाले किसी सबस्य की मृत्यु होने पर इसके हकदार नामनिर्देणितियो/विधिक यारिसो को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से भीर प्रत्येक दशा में, भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर सुनिध्वित करेगा।

[स॰ एस० – 35014/96/82-पी० एफ-2]

S.O. 3028.—Whereas Messrs Gujarat Cooperative Milk Marketing Federation Limited, Amul Dairy Road, Anand-388001 (GJ/7286) (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under subsection (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Cen'ral Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmedabad and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month
- 3 All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer
- 4 The employer shall hisplay on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient teatures thereof in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India
- 6 The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme
- 7 Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the Jeath of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation
- 8 No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmedabad and where any amendment is likely to affect adversely, the interest of the employees the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to the cancelled
- 10 Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11 In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benets to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the su massured from the Life Insurance Corporation of India

[No S-35014(96)/82-PF-II]

का॰ आ० 3029—-मैसर्स करूणमियाँ मिल्स लिमिटेड, पोस्ट बॉक्स स॰ 2, सोमनूर ढाकधर, कोयम्बट्र जिला, तमिलनाडु (जिसे इसमे इसके पश्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मेचारी धिषध्य निधि और प्रकीण उपबन्ध इसिमियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छट विए जाने के लिए प्रावेदन किया है, गौर कैन्त्रीय सरकार का मश्रीधान हो गया है कि उक्त स्थान के कर्मचारी, किसी पृथक प्रभिदाय या प्रीमियम का सदाय किए बिना ही, फर्रासीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के ध्रधीन जीवन बीमा के क्ष्य में फायदे उठा रहे हैं भीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से घिन प्रमुक्त हैं जी कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के घर्धीन उन्हें प्रनुक्तेय है,

भ्रत केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रक्षिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदन्त गक्तियों का प्रयोग करते द्वृष् और इससे उपावद्व भनुसूची में विनिर्दिस्ट शर्तों के अधोन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की भवधि के लिए उक्त स्कीम के मभी उपबधी के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसूची

- 1 जक्त स्थापन के सबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि ग्रायुक्त, निमलनाडु, को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुनिधाण प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिग्ट करे।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रधारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के मीनर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रिष्टिनयम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय-समय पर निदिष्ट करें।
- 3 सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन मे, जिसके धन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का धंतरण, निरीक्षण प्रभारों सदाय छादि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोवित सामृहिक बीमा स्कीम केनियमो की एक प्रति, भीर जब कभी उनमे संशोधन किया जाए, तब उन सशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुमंख्या की शाषा में उसकी मुख्य बातों का भनुवाब स्थापन के के सुचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी सिवष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामृहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप मे उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा भीर उसकी बाबन प्रावश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को सबस्न करेगा।
- 6 यदि उनत स्कीम के घाषीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के घाषीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समूचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के धाषीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से घाषक अनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अधीन अमुज्ञेय हैं।
- 7 सामूहिक बीमा स्वीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मवारी की मृत्यु पर इस स्कीम के प्रघीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मवारी को उस दशों में सदेय होती जब बहु उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो नियोजक कर्मवारी के विधिक वारिस/नामनिर्देशिसी को प्रतिकर के रूप में बोनो रकमों के प्रतर के अगंबर रकम का सदाय करेगा।
- 8 सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी सशोधन, प्रावेशिक भिवष्य निधि ग्रायुक्त, प्रमिलनाडू, के पूर्व ग्रनुमोदम के बिना नहीं किया जाएगा ग्रीर जहां किसी संशोधन से कर्मवारियों के हित पर प्रतिकृष प्रभाव पड़ने की सभावना हो वहा, प्रावेशिक भविष्य निधि ग्रायुक्त, श्रमना ग्रनुमोवन देने से पूर्व कर्मेशारियों को ग्रपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त श्रवसर देगा।

9. यदि किसी कारणवण, रथापन के कर्मनारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना धुका है मधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के घधीन कर्मनारिया का प्राप्त होन बाले फायदे किसी रीति में कम हो जाते हैं, सो यह छूट रद्द की जा सकती है।

- 10 यदि किसी कारणवंश, नियोजक उम नियत नारीख के भोतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का सदाय करने में मसफल रहता है, भीर पालिमी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रबुद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के सदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की देशा में, उन भूत सदस्या के नामनिर्दाशितयों या विश्विक वारिसी को यदि यह, छूट नई। दी गई होंसी तो उन्त स्कीम के ध्रन्तगैत हाते, बीमा फायदों के सदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उनत स्थापन के सबध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यु हाने पर उसके हकदार नामनिर्देणितियो/विधिक वारिमों को बीमाकृत रकम का सदाय तत्परना से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन वामा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर मुनिश्चित करेगा।

[स॰ एस॰-35014/119/82-पी॰एफ-2]

S.O. 3029.—Whereas Messrs Karunanbigai Mills Limited, Post Box No. 2, Somanur P. O., Coimbatore District, Tamil Nadu, (hereinafter referred to as the said establishment have be applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the limployees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and, maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, sub mission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in 551 GI/82-8

- his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the reesponsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assuerd from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(119)/81-PF-II]

कारुआर 3030. — मैसर्स फैन्को इंडियन/फार्मीन्यृटिकस्स प्राईवेट लिमिटेड, रिजिम्हीकृत कार्यालय, 20 जानटर ईर् मोसेज मार्ग, बस्बई 400011 (जिसे इसमें इसके पत्रवात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कमेंचारी भिवष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध ग्रिक्षित्रयम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त ध्रितियम कहा गया है) की धारा 17 की उपक्षारा (2क) के ग्रिधीन छूट दिए जाने के लिए ग्रावेदन किया है,

ग्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधन हो गया है कि उक्स स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक् ग्रभिदाय या प्रीमियम का संवाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के ग्रधीन जीवन बीमा कि कप में फायवे उठा रहे है ग्रीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायवे उन फायवों से अधिक ग्रनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त स्कीभ कहा गया है) के ग्रधीन उन्हें धनुजेय हैं,

ग्रंत केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिमित्रम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त सक्तियों का प्रयोग करते हुए ग्रीर इससे उपावड़ श्रन्सूची में विनिधिष्ट सतौं के भ्रष्टीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की श्रवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसूची

- 1. उक्क स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक निश्चि भायुक्त, महाराष्ट्र को ऐसी विवरणियां मेजेगा भौर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, ममय भमय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 विन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उकत प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय समय पर निविष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन मे जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभागे का मंत्राय चावि भी है, होने वाले सखी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संगोधन किया जाए, तब उस संगोधन की प्रति नथा कर्मवारियों की धहुमंख्या की भाषा में उसकी मृख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के मुख्या-पट् पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थायम की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजन किया जाता है तो, नियोजक सामृहिक बीमा रकीम के सदस्य के रूप में उसका नाम नुरुख वर्ज करेगा और उसकी बाबन आवश्यक प्रीस्थिम भारतीय जीवन बीमा निगम की संवत्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदे बकुए जाते हैं तो, तियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन के कर्मकारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मवारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से प्रधिक अनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के प्रधीन अनुकेस हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी यदि किसी कर्मवारी की मृस्यु पर इस स्कीम के अधीन सदेय रकम उस रकम में कम है जो कर्मवारी की उस दशा में संयेय होती जब वह उकत स्कीम के अधीन होता तो नियोजक कर्मवारी के विधिक वारिम/न(मिनिर्देशिक को प्रतिकार के रूप में दोनों रकमों के अंतर के बन्धर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन प्रादेशिक भिष्य निधि आधुकत महाराष्ट्र के पूर्व अनुभादन के जिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रशिक्ष प्रभाव पढ़ने की संगवना हो वहा प्रादेशिक भिष्य निधि आधुकत अपना अनुभावन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवा स्थापन के कर्मवारी भारतीय जीवन की मा निगम की उस समृहिक बीमा स्कीम के जिसे स्थापन पहले अथना खुका है बाग्नीन नहीं रह जाते हैं या इस स्कीम के अधीन कर्मवारियों का प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति में क्या हो जाते हैं सो यह कुट रह की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवण नियोजक उस नियन नारीख के भीतर जी भारतीय जीवन कीमा नियम नियम करे प्रीमियम का मंत्राय करने में भ्रमकल रहता है और पालिभी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छट रह की जा भकती है।
- 11. नियोजन हारा प्रीमिथन के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा में उन मृत सदस्यों के नामनिर्देणितियों या विधिक वारिसों को की यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के प्रत्यंत होते बीमा फायदी के संदाय का उत्तरवायित्य नियोजक पर होगा।

12 उका स्थापन के सबध में नियोजक इस रकीम के अक्षीन आने बात किए चंदरन की मुख्य लोगे पर उसमें हैं ज्ञार नाम निर्देशितियों) विधिक यारिमों का दीमाकुल रकम का सदाद रूपपरता से और प्रत्येक देशा में भारतीय जीवन बीमा निशम में बीमाकुल रकम प्राप्त होने के साम दिन के भीतर मुनिधिका करेगा।

tine e elimina inter el interior la income

[म० ^मने०-35014/137/५७-पी० एक-2]

S.O. 3030.—Whereas Messis Franco Indian Pharmaceuticals Private Limited, Regd. Office 20, Dr. h. Moses Road, Bombay-400011. (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Maharashtra maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Lite Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Gorup Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Maharashtra and

where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.

- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Lite Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure plompt payment of the sum assuerd to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation o India.

[No. S-35014(137)/82-PF, II]

नई दिल्ली, 17 अगस्त, 1982

का॰आ॰ 3031-मैसर्भ राजपूताना मोटर्स 6 मनोरमागज, इन्दोर-452001 (मध्य प्रदेश) (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निश्चि और प्रकीर्ण उपबन्ध प्रधिनियम 1952(1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त अश्विनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के ब्रधीन खुट दिए जाने के लिए श्रावेदन किया है

ग्रीर केल्क्रीय संस्कार का समाधान हो गया है कि उन्न स्थापन के कर्मकारी किसी पृथक श्रीभराय या प्रीमियम वा संदाय किए बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं ग्रीर ऐसे कर्मबार्गों के लिए ये फायदे उन फायदों में अधिक श्रमुकृल हैं जो कर्मबार्ग निक्षेप शह्यद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चाय उक्त स्कीम कहा गया है) के श्रधीन उन्हें श्रमुकीय है

अतः केन्द्रीय संकार उक्ता अधिनियम का धार। 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्न पाक्तियों का प्रयोग करने हुए ग्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिविष्ट गर्नी के अधीन रहते हुए उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट वेती है।

अनुसृची

- ा. उक्त स्थापन के सबध में नियाजक प्राद्देशिक अविष्य निधि क्रायुक्त मध्य प्रदेश का ऐसी विवरणिया भैजेंगा और ऐसे लेखा रखेंगा नथा निरीक्षक के लिए ऐसी मुविधाए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय गरकार समय समय पर निदिष्ट करें।
- 2. विश्वाजक ऐंमे निरीक्षक प्रान्तिक। प्रत्येक मास की भमानि के 15 दिन के मीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय गरकार, उक्त अधिनियम को धारा 17 की उनधारा (उक्त) के खेल्ड (क) के अबोन समय समय पर निरिष्ट करे।
- 3. सामृहिया बीमा स्कीम के प्रणासन में जिसके अन्तर्गम लेखायों का रखा जाना विवयंशियों का प्रस्तुन किया जाना बीमा प्रीमियम का गदाय लेखायों का अनुन्य निर्मक्षण प्रमारों का सदाय आदि भी है, होन बाले सभी बार्यों का यहन नियानक द्वारा किया जाएगा।

- । विशेषक केन्द्रीय भरकार द्वारा तथा अनुमोदित सामूहिक कीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति भ्रौर जब कभी उनमें संगोधन किया आए तब उन संगोधन की प्रति तथा कर्नशारियों की बहुसक्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद स्थापन के सुचना पट्ट पर प्रवर्णित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कर्मचारी जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उनते आंधिन्यम के अर्थान छूट प्राप्त किसी स्थापन की स्थिष्य निधि का पहले ही सदस्य है उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजक मामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरस दर्ज करेगा और उसकी बाबन आंध्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदल करेगा।
- 6 यवि उनन स्थाम के स्थान कर्मचारियों को उपत्रस्थ फायदे बहुए जाते हैं तो नियोजन स्थानूहिन कीमा स्कीम के श्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समूचित रूप से बृद्धि की जाते की व्यवस्था करेगा जिसते कि कर्मचारियों के लिए समुचित बीमा स्कीम के अक्षीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हो जो उनत स्कीम के अधीन अनुजीय हैं।
- 7. नामूहिब बीमा स्वीम में किसी बात के होंगे हुए भी यदि किसी कर्मचारी की मूख्य पर इस स्कीम के ब्रधीन संवेय रकम उस रकम से एम है जो कर्मचारी की उस दशा में सवेय हाती जब वह उक्त स्कीम के ब्रधीन होता तो नियोजक कर्मचारी के ब्रिधिक बारिस/नामिर्विशिती की प्रितिकर के रूप में दोनों रकमी के ब्रंसर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीन। स्कीम के उपबन्धों में कार्ड भी संभोधन प्रावेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त, मध्य प्रदेश के पूर्व प्रनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा थ्रौं। जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हिंत पर प्रतिकृत प्रभाव पढ़ने की संभावना हो वहां प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त, अपना धनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को प्रपना दृष्टिकीण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त प्रवसर देगा।
- 9 यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्भचारी भारतीय जीवन बीमा निगम की उम सामृहिक बीमा म्कीम के जिसे स्थापन पहले अपना चुका है प्रधीन नहीं रह जाते हैं या इस स्कीम के घ्रधीन कर्मचारियों की प्राप्त होने वाले कायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं तो यह छूट रवद् की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवण नियोजक उस नियस तारीख के भीतर, जा भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे प्रीमियम का सदाय करने में असफल रहना है और पालिसी को व्यवगत हो आने दिया आता है तो, छूट रदद् की जा सकती है।
- 11. नियोजन द्वारा प्रीमियम के सदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा में उन मृश सदस्यों के नामनिवणितियों या विधिक वारिसों की जो यदि यह, छूट नहीं गई होती उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते जीमा फायदों के संवाय का उल्लाखायित नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सक्षप्र में नियोजक, इस स्कीम के प्रधीन प्राने याले किसी सदस्य की भृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितयों/ विश्वक वारिसों को बीमाकुत रक्षम का संदाय तत्परना से घीर प्रश्येक द्वारा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकुत रक्षम प्राप्त होने के सात दिन के नीतर स्निरिचन करेगा।

[स॰ एस॰ 35014/9/82-पी॰एफ 2]

New Delhi, the 17th August, 1982

SO. 3031.—Whereas Messrs Rajputana Motors, 6. Manotamaganj Indore-452001 (Madhya Pradesh), (hereinafter teferred to as the said establishment have been applied for

exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provinent Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinatter referred to as the said Act),

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter reterred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conterred by sub-section (2A) of section 17 of the said. Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient reatures thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8, No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.

- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurence benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(9)/82-PF. 1]]

कां आर 3032 - मैसर्स हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, एक्सप्रेष बिल्डिंग बहाबुरवाह करूर मार्ग, पोस्ट वाक्स मं 7003 नई दिल्ली 110002(दिण् 155) (जिसे इपमे इसके प्रचान उक्त स्थापन कहा गया है) ने कमेचारी सविष्य लिधि और प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके प्रचान उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (24) के क्रथीन छूट दिए जाने के लिए कावेदन किया है

ग्रीत केन्द्रीय संकार का समाधात हो गया है कि उकत स्थापन के कर्मचारी किसी पूराइ ग्रामिवाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन वीमा के कप में कायबे उठा रहे और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये कायबे उन कायदों से अधिक ग्रानुकूष है जो कर्मचारी निकीप सहबद्ध भीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हे भन्त्रीय है;

श्रत. केन्द्रीय सरकार, उनेन अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) हारा प्रदन्त मिकिनयों का प्रयोग करने हुए सौर इसमे उपाबद्ध अनुसूची में विनिविष्ट मार्तो के अधीन रहने हुए, उन्त स्थापन को तीन वर्ष की भवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसूची

- ा. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेणिक भविष्य निधि धायुक्त दिल्लों की ऐसी विवरणियां भेजेगा श्रीर ऐसे लेखा रखेगा नथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविश्राए प्रदान करेगा जा केन्द्रीय सरकार, समय समय पर निदिष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रमाणे का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय समय पर निर्विध्द करें।
- 3 सामृद्धिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके घरनमंत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, कीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का सवाय आदि भी है, होने वाल सभी व्ययों का बहुन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारः यथा अनुमंदित मामृहिक वीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, श्रीर अब कभी उनमें संशोधन किया आए, तब २० मंगीधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुमध्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का श्रनुवाद स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदिशित करेगा।
- 5 यदि कांई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त प्राधिनियम के अधीन कृट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोक्ति किया जाता है तो, नियोक्ति सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम सुरन्त दर्ज करेगा

भ्रौर उसकी बाबन श्रावश्यक प्रीमियम सारतीय जीवन कोमा निगम की संदर्भ करेगा।

- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचािरयों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियाजक साम्हिक बीमा रकीम के अधीन कर्मचािरयों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगर जिससे कि कर्मचािरयों के लिए सामुहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों में प्रधिक अनुकृत हों, जो उपत स्कीम के अधीन अनुकीय है।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कार्भचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अर्धात संदेय नकम उस रकम से क्षम है जो कर्मधारी का उस दवा में संदेय होती जब वह उकत स्कीम के अर्धात होता तो, नियोजक कर्भधारी के विधिक वारिस/नामनिर्देणितं। को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्मों के अर्धार के बराबर रकम का सदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीम. स्क्रीम के उपबन्धी में कोई भी संशोधन , प्रादेशिक पिक्य निधि धायक्त, दिल्ली के पूर्व धानुसोदन के विना नहीं किय। जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पटने की संशोधना हो बहा, प्रावेशिक श्रीवध्य निधि धायुक्त, अपना अनुसोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को ध्रापना दृष्टिकीण स्पष्ट करने का स्मुक्त प्रवसर वेगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भाग्तीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कोम के, जिसे स्थापन पहले प्रपत्ता चुका है प्रधीन तही रह जाते हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रह्व की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवण, नियोजक उम नियन नारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा नियम नियम करे, प्रीमयम का मंदाय करने में असफल रहता है, आर पालिकी को व्यवगत हा जाने दिया जाता है तो, छूट रह्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी ध्यतिक्रम की दशा मे, उन मन सदस्यों के नामनिर्देशितिया या विधिक वारिसी की जो यदि यह, छुट न दी गई होती तो उक्त स्क्रिम के श्रन्तर्गत होते, बीसा कायदों के संदाय का उन्तरदायिन नियाजक पर होगा।
- 12. उथन स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्क्रीम के ग्राधीन श्राने बाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशित्या/विधिक बारिमी की बीमाक्कत रकम का संदाय नत्यरमा से ग्रीर प्रस्येक दणा में भारतीय जीयन बीमा नियम से बीमाक्कत रकम प्राप्त होने के सात दिल के भीतर मुनिश्चित करेगा।

[मं० एम० 15014/15/82-२० निः० (11)]

S.O. 3032.—Whereas Messrs Hindustan Lever Limited, Express Building, Bahadur Shah Zafar Marg, P. O. Box No. 7003, Nw Delhi-110002 (DL/155), (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter refedred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees that the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Region Il Provident Fund Commissioner, Delhi maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premi1, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the cstablishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Fmployees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act is camployed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benfits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the leg-1 heir/nominee of the employee as compensation
- 8. No amendment of the provisions of the Group In-urance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Delhi and where any amendement is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment

shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomince/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(19)/82-PF, III

का० आ० 30-3. -- मैसर्म आई० डी० एल० केमिकल्स लिमिटेड, पोस्ट बावम स०, 1 सन्तनगर, हैवराबाद-500018 (जिसे इसमें इनके पश्चात् उक्स स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के प्रधीन छूट विए जाने के लिए प्रावेदन किया है,

श्रीर फेन्द्रीय सरकार का समाधान हा गया है कि उक्त स्थापन के कर्मजारी, किसी पृथक श्रभिवाय या प्रीमियम का सदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के श्रधीन जीवन बीमा के रूप में कायदे उठा रहे है श्रीर ऐसे कर्मजारियों के लिए ये कायदे उन कायदों से अधिक अनुकूल हैं जा कर्मजारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम- 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के श्रधीन उन्हें श्रमुजेय हैं।

भ्रत केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रिधितियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, और इससे उपाबद्ध भ्रतुसूची में विनिदिष्ट शर्सों के प्रधीन रहते हुए, उक्त स्थापन का तीन वर्ष की श्रविध के लिए उक्त स्कीम के भी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट वेती है।

अनुसूची?

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि झायुक्त, झान्ध्र प्रदेश को ऐसी विवरणियां भेजेंगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय समय पर निर्दिष्ट करें।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त भाष्टिनियम की भारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के श्रधीन समय समय पर निहिन्द करे।
- 3 सामूहिक बीमा स्काम के प्रणासन में, जिसके भ्रन्तर्गत लेखाश्रा का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाश्रों का श्रंतरण, निरीक्षण प्रभारों का सदाय श्रादि भी है. होने बाले सभी व्ययों का बहुन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियाजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा ग्रनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, श्रीर जब कभी उनमें संबोधन किया आए, तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का श्रनुबाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदिशित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जा कर्मचारी भंकिष्य निर्धि का या उक्त प्रधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भंकिष्य निर्धि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजिक किया जाता है तो नियोजिक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बांधन भ्रावण्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम की संदत्त करेगा।
- 6 यदि उक्त स्कीम के ब्राधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाने है ता, नियोजक मामृहिक बीमा स्कीम के ब्राधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में ममृजित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिसमें कि कर्मवारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से ब्राधिक ब्रानुकूल हो, जो उक्त स्कीम के विधासि अनुक्रें हैं।

- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए, भी यदि किसी कर्मआरी की मृत्यु पर इस स्कीम के श्रधीन सदेय रकम उस रकम से फन है जो कर्मआरी का उस दशा में पदेय होती जब वह, उक्त स्कीम के श्रधीन होता तो, नियोजक कर्मजारी के विधिक वार्षिम /नामनिर्देशिती की प्रतिकर के रूप में दोनों रकमा के श्रतर के बराबर रकम का सदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धा में कोई भी संगोधन, प्रादेणिक भिष्य निधि प्रायुक्त, प्रान्ध्र प्रदेश के पूर्व धनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रसाव पढ़ने की संभावना हो बहा, प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त प्रपन धनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को श्रपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्ति प्रवस्त प्रवस्त देगा ।
- 4 यदि किसी कारणवर्ण, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस मामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रयान चुका है प्रधीन नहीं रह जाते है, या इस स्कीम के श्रश्वीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदें किसी रीति से कम हो जाते है तो यह छुट रहू की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवण, नियोजक उस नियन नारीख के भीतर, जा भारतीय जीवना बीमा निगम नियन करे, प्रीमियम का संदाय करने में प्रमफल रहना है, भीर पालिसी को व्ययगत हो जाने विया जाता है तो छूट रह की जा सकती है।
- 11 नियोजिक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यनिकम की दशा मैं उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिमों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के झन्तर्गत होते, बीमा फायदों के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजिक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के प्रधीन भाने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितियों/ विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परमा से भ्रीर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन वीमा निगम से विभाकृत रकम प्राप्त होने के मात दिन के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[सं० एस० 35014/22/82-पीर एफ (II)]

S.O. 3033.—Whereas Messrs I. D. L. Chemical Limited, P.B. No. 1, Santhnagar, Hyderabad-500018, (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereimafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Andhra Pradesh maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time driect under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more fevourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Andhra Pradsh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to the cancelled.
- 10. Where, for any reason employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurence benefits to the nominces or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Comparation of India.

[No. S-35014(22)/82-PF, III

का॰ आ॰ 3034 - मैसर्म सध्य प्रदेण लघ् उद्योग निगम लिसिटेड, 23 सार्षिण से स्टर, त्यू मार्केट टी॰ टी॰ नगर, घोषाल (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चान् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छ्ट विए जाने के लिए प्रावेदन किया है:

श्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो ग्या है कि उन्न स्थापन के कमंचारी, किसी पूथक अभिवाय या श्रीमियम का मदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधान जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहें हैं और ऐसे कमंचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों में अधिक अनुकूल हैं जो कमंचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पण्चान उक्त रकीम कहा गया है) के अर्धान उन्हें अनुक्षेय हैं।

ग्रत. केन्द्रीय सरकार, उक्त ग्राधिनियमकी धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत णिक्तयों का प्रयोग करते हुए ग्रीर इससे उपास्क प्रमुसूची में विनिर्दिष्ट पानों के ग्राधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की ग्रवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपवेधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

- उक्त स्थापन के सबक्ष में नियोजक प्रदेशिक अविष्य निधि श्रीयुक्त,
 मध्य प्रयेश को ऐसी विवरणिया भेजेगा श्रीर ऐसे लेखा रखेगा
 तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार,
 समय संसय पर निर्दिष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपभारा (3क) के खण्ड (क) के ग्रधीन-समय समय पर निदिन्ट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में, जिसके धन्तर्गत लेखाओं का रखा -जाना विवरणियों का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का धनरण, निरीक्षण प्रभारों का संवाय ध्रावि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- में निर्याणिक केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा धनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, श्रीर जब कभी उनमे संशोधन किया जाए, तब उस संशोधित की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का श्रनुवाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदिशत करेगा।
- 5. यंदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त विभी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजिन किया जाता है तो, नियोजिक, सामृहिक प्रीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरस्त वर्ज करेगा और उसकी बावन भ्रावश्यक प्रीमियम भारतीय जन्वन बीमा निगम को सदस्न करेगा।
- 6 यति उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपबन्ध फायरे बढ़ाए जाते हैं तो, नियाजक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में ममुचित रूप से बृद्धि की जाने की अवबस्था करेगा जिसमें कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृष हो, जो उक्त स्कीम के अधीन अनुक्षेय है।
- 7 सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्य पर इस स्कीम के प्रधीन सबैय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दणा में सबैय होतं. जब वह उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो, जियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस/नामनिर्देशिक्षी को प्रतिकर के रूप में दोनो रक्तमों के धंनर के बराबर रकम का सबाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम वे उपबन्धों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भविष्य निश्चि प्रायुक्त, मध्य प्रदेश के पूर्व प्रतुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मनारियों के हिन पर प्रतिकृष प्रभाव पड़ने की सभावना हो वहा, प्रादेशिक भविष्य निश्चि प्रायुक्त प्रभाव पड़ने की सभावना हो वहा, प्रादेशिक भविष्य निश्चि प्रायुक्त प्रभाव प्रमुमीदन देने से पूर्व कर्मनारियों को प्रपना ब्रिट्कोण स्पष्ट, करने का युक्तियुक्त प्रथमर देगा।

- 9 यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस मामृद्धिक बीमा स्कीम का, जिसे स्थापन पहले प्रपनाचुका है प्रधीन नहीं रह जाने हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मधारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाने हैं, तो यह छूट रह् की जा सकती है।
- 10 यदि किसी कारणवण, नियोजक उस नियन तारीख के भ तर, जो भारनीय जीवना बीमा निगम नियम करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, श्रीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रक्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमिथिम के संवाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक दारिमों की जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उकन म्कीम के प्रन्तर्गत होते, बीमा फायदी के संदाय का उल्लग्दायिन्द नियोजक पर होगा।
- 12. उन्त स्थापन के संघ में नियाजक, इस स्कीम के प्राधीन प्राने वाले किसी मदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितियो/विधिक वारिसो को बीमाकृत रकम का संदाय ततारता में प्रीर प्रत्येक दशा में, भारतीय जीवन बीमा निगमों में बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर मुनिश्चित करेगा।

[स॰ एस 35014 (27)/82-पी॰एफ॰-[])]

S.O. 3034.—Whereas Messrs Madhya Pradesh Laghu Udyog Nigam Limited, 23, Shoping Centre, New Market, T. T. Nagar, Bhopal, (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hercinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees, Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient feature, thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Fmployees' Provident Fund or the Provident Fund of an

- establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7 Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S. 35014(27)/82-PF III

का० आ० 3035.— मेसर्स गोयट्रज (इंडिया) लिमिटेड, तेज निल्डिंग, बी/8 बहाव्रशाह जफर मार्गे, नई विल्ली-110002 (जिसे इसमें इसके पण्चान उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मेचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबन्ध घिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके पण्चात उक्त धिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के धिन छट दिए जाने के लिए धाबेदन किया है;

श्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक ग्रिभिवाय या प्रीमियम का संवाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा नियम की सामृहिक बीमा रूकीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं श्रीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों में श्रधिक ग्रनुकल हैं जो कर्मचारी निक्षेप भहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पण्चान उक्त स्कीम कहा गया है) के श्रधीन उन्हें अनशेय हैं;

धनः केन्द्रीय सरकार, उक्त गधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) हारा प्रदन्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए और इससे उपाबद्ध धनमूची में विनिधिष्ट शर्तों के धधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की धाविध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपवंशों के प्रवर्तन से छट देनी है।

अन्सृची

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भिविष्य निधि प्रायुक्त, दिल्ली को ऐसी विवरणिया भेजेगा ग्रीर ऐसे लेखा रखेगा नथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार. समय समय पर निविष्ट करे।
- 2. नियोजका ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रस्येक मास की ममाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त ब्रिधिनियम की छारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के ब्रिधीन समय समय पर निदिन्द करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, नेखाओं का अनरण, प्रणारों का संवाय आदि भी है, होने वाले मक्की व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा घनुमोवित मामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संगोधन किया जाए, नब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मनारियों की बहुमंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का घनुबाद, स्थापन के मुचना पट्ट पर प्रवर्णिन करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उपत ग्राधिनियम के भ्राधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सवस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, निधोजक, सामृहिक श्रीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्तवर्ज करेगा भीर उसकी बाबत भ्रावण्यक प्रीमियम भारतीय जीवन श्रीमा निगम को संवस्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायवे बढ़ाए जाने हैं तो, नियोजक सामृद्धिक बीमा स्कीम के प्रधीन कर्मनारियों को उपलब्ध फायवों में ममृजित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मनारियों के लिए मामृद्धिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायवे उन फायवों से प्रधिक ग्रनुकुल हो, जो उक्त स्कीम के प्रधीन प्रनुक्तेय हैं।
- 7 सामूहिक बीमास्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्म बारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन मंदेय रक्षम उस रक्षम से कम हैं जो कर्म बारी को उस द्या में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्म जारी के विधिक बारिस / नामनिर्देशिती को प्रतिकर के रुप में दोनों एकमों के अंतर के बराबर रक्षम का संदाय करेगा।
- 8. साम् हिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कई भी संशोधन प्राविशिक भिविष्य निधि भ्रायुक्त दिल्ली के पूर्व भ्रत्मोदन के बिना नहीं किया जाएगा भीर जहीं किसी संशोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहा, प्रावेशिक भविष्य निधि श्रायुक्त भ्रपना श्रनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को भ्रपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त भवरस वेगा ।
- 9. यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मनारी, भारतीय जीवन कीमा निरास की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रह की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक उस नियन तारीख के भीतर, जो भारतीय जोवन बीमा निगम नियन करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, भीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशिनियों या विश्विक थारिसों को 551 GI/82—9

जो यदि यह, छूट न वी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायदो के मंदाय का उत्तरवायित्व नियोजक पर होगा।

12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्थाम के अधीन आते वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकवार नामनिर्देशितियों विधिक वारिशों को बीमाक्षण रकम का संदाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बामा निगम से बामाकृत रकम प्राप्त होने के साल विन के भीतर सुनिध्वत करेंगा।

सि॰ एस॰ 35014(52) 82 पी एफ-II]

S.O. 3035.—Whereas Messrs GOETZE (INDIA) Limited, Tej Building, Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110002, (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Delhi and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the clouse of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India,
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the

said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.

- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Delhi and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall casure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

INo. S-35014(52)/82-PF-III

कार आरं 3036.— मैं सर्व एक एम रही विमिटेड, यही कारखाना एक एम रही व्हाकधर, बंगलीर-560031 (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्म कारी भविष्य निधि सीर प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पण्चात उक्त स्थाननियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के सधीन सूट दिए जाने के लिए श्रावेदन किया है:

भीर केन्द्रीय सरकार का समाजान हो गया है कि उकत स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिदाय या प्रीमियम का सदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में कायदे उठा रहें हैं भीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से प्रधिक अनुकूष हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहब्र बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुज्ञेय हैं।

धतः केन्द्रीय सरकार, उकत ग्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्न भिक्तियों का प्रयोग करने हुए भीर इससे उपाबद्ध धनुसूची में विनिधिष्ट गतौं के श्रधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की भवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छुट वेती है।

अनुसूची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोज क प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त कर्नाटक को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुनिक्षाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय मरकार, समय समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐमें निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेंगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय समय पर निष्टिन्द करे।

- 3. सामृहिक बीमा स्कंभि के प्रशासन में, जिसके ग्रन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का सदाय, लेखाओं का ग्रंतरण, निरीक्षण प्रभारों सदाय ग्रावि भी है, होने वाले सभी ब्ययों का बहुत नियाजक बारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमो की एक प्रति, और जब कभी उनमें संगोधन किया जाए, तब उम संगोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदर्शिन करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कमंचारी, जो कमंचारी भविष्य निधि का या उक्त प्रधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किसा जाता है तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदर्श करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था यारेगा जिससे कि कर्मवारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृष हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अमुन्नेय हैं।
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बान के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दणा में संदेय होता जब वह उक्त स्कीम अधीन होती तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिम/नामनिर्देणिती के प्रतिकर के रूप में दोनो रकमों के अंतर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. मामूहिक जीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन, प्रादेशिक भविष्य निधि श्रायुक्त कर्नाटक के पूर्व श्रनुमोबन के बिना नहीं किया जाएगा और जहाँ किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रिकूल प्रभाव पड़ने की मभावना हो वहां, प्रादेशिक भविष्य निधि श्रायुक्त, श्रपना श्रनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को श्रपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तयुक्त श्रवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, यह इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं तो यह छुट रह की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवण, नियोजक उस नियन नारीख के भीतर, भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में अराफल रहता है, श्रीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाना है तो, छूट रह की जा सकती है।
- 11 नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या निधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के धन्तर्गत होते, बीमा फायदों के संदाय का उत्तरदायिक्य नियोजक पर होगा।
- 12 उक्त स्थापन के सबंध में नियोजक, इस स्काम के प्रश्नीन आने वाले किसी सबस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिवेंशिनियों/ विधिक बारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से घौर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन भीतर सुनिश्चित करेगा।

[सं० एम० 35014/53/81 भ० नि० (II)]

S.O. 3036.—Whereas Messrs H.M.T. Limited, Watch Factory, H.M.T. P.O. Bangalore-560031, (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately engol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees

under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.

- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the life insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomince|legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014 (53)|81-PF-II]

का० आ० 3037.— मैंगर्स नेशनल भिनरल उयलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड, सोमिजिगंडा, हैदराबाद के मैंससं (i) डायमण्ड प्रेजेक्ट पन्ना (मध्य एम० पी० 1444) (ii) बैलेडिला प्राहरन ग्रोर प्रोजेक्ट, बचली एम० पी० 2278 भीर (iii) बैलेडिला ग्रायरन प्रोजेक्ट किरनदल एम पी/ 2279) (जिसे इसमें इसके परवात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भिष्य निधि ग्रोर प्रकीण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परवात उक्त ग्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के ग्रधीन छूट दिए जाने के लिए ग्रायेदन किया है।

धौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मेचारी, किसी पृथक ध्रिभावाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के ध्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं धौर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन्हें कुए प्रदों से अधिक अनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुत्रेय हैं।

ध्रतः केन्द्रीय सरकार, उक्त ध्रधिनियम की ध्रारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त गक्तियों का प्रयोग करते हुए ध्रौर इससे उपाबद्ध ध्रनुसूची में विनिर्दिष्ट शतों के बर्धान रहने हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की ग्रवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट वैती हैं।

अनुसूची

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेणिक भविष्य निधि श्रायुक्त मध्य प्रदेश को ऐसी विवर्णायां भेजेगा शौर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय समय पर निविद्य करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उन्त श्राविनियम की धारा 17 की उपवारा (3क) के खण्ड (क) के श्रावीन समय-पमय पर निदिष्ट करें।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में, जिसके ग्रन्तर्गत लेखाघों का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाघों का ग्रंतरण, निरीक्षण प्रभारों का सदाय घादि भी है, होने वाले सभी थ्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा त्रथा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, भीर जब कभी उनमें मंगोधन किया जाए, नय उस संगोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का भनुबाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मजारी, जो कर्मजारी भिषय्य निधि का या उक्त भ्रिधिनियम के भ्रिधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त वर्ज करेगा भीर उसकी बाबस ग्रावण्यक ग्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संवस करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदो में समुखित रूप से बुद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से ध्रधिक अनूकून हो, जो उक्त स्कीम के प्रधीन अनुक्षेय हैं।
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्य पर इस स्कीम के प्रधीन सदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस/नामनिर्देशिक्षी को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमो के अन्तर के घराबर रकम का संदाय करेगा ।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन, प्रादेशिक भिविष्य निधि श्रायुक्त, मध्य प्रदेश के पूर्व श्रनुभोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सभावना हो बहां, प्रादेशिक भिविष्य निधि श्रायुक्त, श्रपना श्रनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को श्रपना कृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त श्रयमर देगा।
- 9. यवि किसी कारणवश, स्थापन के कमचारी, भारतीय जीवन बीमा मिगम की उस सामहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपना चुका है मधीन नही रह जाते हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवास, नियोजक उस नियत तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियम करे, प्रीमियम का मंदाय करने में असफल रहता है, भ्रौर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रह की जा सकती है।
- 1). नियोजक द्वारा श्रीमियम के संवाय में किए गए किसी व्यितिकम की वशा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिसो को, जो यवि यह छूट न वी गई होती तो उक्त स्कीम के श्रन्तर्गत होने, बीमा फायदों के संवाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उसत स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के घ्रधीन ग्राने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उसके हकतार नामनिर्देशितियों /विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से ग्रीर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[सं॰ एस॰ -35014(65)/82-पी एफ-II]

S.O. 3037.—Whereas Messrs (i) The Diamond Mining Project, Panna (MP/1444), (ii) The Bailadila Iron Ore Project, Bacheli (MP/2278) and (iii) The Bailadila Iron Ore Project, Kirandul (MP/2279) belonging to the National Mineral Development Corporation Limited, Somajiguda, Hyderabad (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution of payment of premium, the enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life

Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the said Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh and, maintain such accounts and provide for such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately cnrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to chance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said S heme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Madhya Pradesh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any mude by the employer on payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heis of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014 (65)/82-PF-II]

कार अगर 3038.— मैरासं भ्राध्य प्रदेश कोभ्रापरेटिय सैन्ट्रेल एमी-कल्चर उनलपमेट बैक लिमिटेड बरकुतपुरा, हैदराबाद (ए.पी/12505) (जिसे इसमें इसके पण्चात् उनन स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि भ्रीर प्रकीर्ण उपवन्ध भ्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पञ्चात् उक्त भ्रधिनियम कहा गया है) की भ्रारा 17 की उपधारा (2क) के भ्रधीन छूट दिए जाने के लिए भ्रावेदन किया है:

श्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक श्रभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के श्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं श्रीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से श्रधिक धनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमे इसके पण्चत्व उक्त स्कीम कहा गया है) के भ्रधीन उन्हें अनक्षेय हैं ;

धतः केन्द्रीय सरकार, उक्त ध्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त प्रक्तियों का प्रयोग करने हुए और इसमें उपाबद्ध धनुसूची में विनिर्दिष्ट एतीं के ब्रधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की प्रक्षि के लिए, उक्त स्कीम के मधी उपबंधों के प्रवर्षन में छूट वैती है।

अनुसूची

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भनिष्य निर्धि आयुक्त प्रांध प्रदेश को ऐसी निवरणिया भेजना श्रीर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा को केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रस्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार. उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना. विवरणियों का प्रस्तुस किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय प्रादि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा धनुमोदिन सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, धौर जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, सब उन संशोधन की प्रति नथा कर्मजारियों की बहुमंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का धनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदिशान करेगा ।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो वर्मचारी भविष्य निधि का या जनन भिधिनियम के भ्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदरय है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाना है तो, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम सुरन्त दर्ज वरंगा और उसकी बाबत श्रावण्यक श्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम की संदत्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बहाए जाते हैं तो, नियोजक मामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में ममृजित रूप से वृद्धि की जाने की ब्यबस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए मामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध

फायदे उन फायवों से भ्रधिक श्रनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के श्रधीन अनु-जेय हैं।

- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बान के होंने हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्य पर इस स्कीम के ब्रधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी की उस देशा में संदेय होतो जब यह उक्त स्कीम के ब्रधोन होता तो, नियोजक कमचारी के विधिक वारिस/नामनिर्देणिती को प्रतिकर के रूप में दोनो रकमों के प्रत्तर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामूश्चिक वीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन, प्रादेशिक भिक्य निधि आयुक्त, आध्र प्रदेश के पूर्व अनमोदन के बिना नहीं किया आएग. और जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहा, प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का स्वित्यक्त अवसर देगा ।
- 9. यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपता चुका है प्रधीन नही रह जाने हैं, या इस स्कीम के म्रश्नीन कर्मचारिया को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीनि से कम हो जाते हैं, ता यह छूट रह की जा सकती है ।
- 10. यदि किसी कारणवण, नियोजक उस नियन तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करें, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, ग्रीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रह की आ सकसी है।
- 1.1. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए व्यक्तिकम की दणा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के धन्तर्गत होते, बीमा कायदों के सदाय का उत्तरदायित्व नियोगक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीस के अधीन धाने थाली किसी सबस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितियों/विधिक थारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परना से धीर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के मंतर सुनिध्वित करेगा।

[म॰ एस-35014(66)/82-पीएफ॰-II]

S.O. 3038.—Whereas Messrs Andhra Pradesh Cooperative Central Agriculture Development Bank Limited, Barkatpura, Hyderabad (AP/2505), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under subsection (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

1. The employer in relation to the said establishment shall submit returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Andhra Pradesh and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when admended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, this employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India,
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under the scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Andhra Pradesh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the extension is liable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of the exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(66) '82-P.F. II]

का० आ० 3039 — मैंगमें त्यु शोरोक मिल्म, कोन्न्नापरे।टव कंजममें सोमागटी लिमिटंड, नादेड (जी० जै०/4823) (जिसे उससे इसके पश्यात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भनित्य निधि भीर प्रकीण उपवन्ध प्रशिविषम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चान् उसत श्रिधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2का) के अधीन শুক্ত दिए जाने के लिए भावेदन किया है ,

श्रीर फिन्दीय मरकार का समाधान हा गया है कि उनन स्थापन के फर्नवारो, किसी पृथक श्रीभाराय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन कीमा निगम की सामृहिक नीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं श्रीर ऐसे कर्मनारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से श्रीक्षक अनुकूल हैं जो कर्मवार्ग निकीप सहसदा बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पण्डात् उनन स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें शन्जेय हैं,

श्रत. कंन्द्रीय मन्त्रार, उनत ब्रिक्षिनयम की घारा 17 की उपधारा (2%) द्वारा प्रदत्त प्रक्षितयों का प्रयाग करते हुए धौर इसमे उपायद्ध प्रत्यूची में विनिर्विष्ट मर्तों के ब्रिक्षीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की शर्वाध के लिए उक्त स्थीप के सभी उपबंधों के प्रवर्तन में छूट देती है।

अनुसूची

- उसत स्थापन के मंबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि श्रायुक्त गुजरात को ऐसी विवरणियां भेजेंगा श्रीर ऐसे लेखा रखेंगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेंगा जो केन्द्रीय संस्कार समय-समय पर भिविष्ट करें।
- 2. नियोजक ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की भमाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के श्रधीन समय-समय पर निर्दिश्ट करें।
- 3. सामूहिक बामा स्कोम के प्रणासन में जिसके श्रन्सगैन लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का श्रंमरण, निरीक्षण, प्रभारों का संवाय श्रावि भी है होने वाले मुजी ब्यूपों का बढ़न नियोजक हारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा कनुमोदिन साम्हिउ कीमा स्काम के नियमों की एक प्रति भ्रारे जब कर्मा उ०में संशोधन किया जाए नक्ष उम संशोधन की प्रति सथा कर्मजास्थिं की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य वातों का श्रनुवाद स्थापन के मूचना-पट्ट पर प्रविश्वि करेगा।
- 5. यदि कोई ऐंगा कर्मबारी जो कर्मबारी भविष्य निधि का या उक्क श्रीधनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है उसके स्थापन में कियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका माम मुस्त्य दर्ज करेगा श्रीर उसकी बाबत आवश्यक श्रीमियम भारतीय जीवन यीमा निगम की संदत्त करेगा।
- 6. य(द उक्त स्कीम के अधीक कर्मवारियों को उपलब्ध परायदे बढ़ाए जाते हैं तो नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप में वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिसमें कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदां से अधिक अनुकृष हो जो उक्त स्कीम के अधीन अनु-श्रीय है।
- 7. मानूहिक बीमा स्कीम में किसी काश के हीने हुए भी यदि किसी कर्मजारी की मृत्युपर इस स्कीम के झधीन संदेध रक्षम उस रक्षम से कम है जो कर्मजारी को उस वणा में संदेय होती जब वह उक्षम स्कीम के झधीन होना सो नियोजक कर्मजारी के विधिक बारिम/नामिनर्वेणिनी को प्रतिकर के रूप में दोनीं रक्षमों के झन्तर के बराबर रक्षम का सदाय करेगा।
- ९ सामृहिक बीसा स्तीम के उपबन्धों में कोई भी संबोधन प्राविशिक भविष्य निधि श्रायुक्त गुजरात के पूर्व श्रनुमोदन के बिता नहीं किया जाएगा झौर जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत

प्रभाव पड़ने की सभावना है। वहाँ प्रविधिक भनिष्य निधि श्रायुक्त श्रपना भन्भोदन देने में पूर्व कर्मवारियों को श्रपना वृष्टिनोण स्पष्ट नरने था यक्तियकत श्रवभर देशा ।

- 9 यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी भारतीय जी. जन ग्रीमा निगम के उस सामृद्धिक बीमा स्कीम के जिसे स्थापन पहले प्राप्ता चुका है ग्राधीन नहीं रह जाते हैं या इस स्कीम के ग्राधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रिलि से क्या हो जाते हैं तो यह छूट रह की जा सकती है।
- 10 यदि फिसी कारणवण नियोजक उन्त ियन नारीख के भीतर जो भारतीय जीवन नीमा नियम नियम करे प्रीमियम का नवाय करने में अमफल नता है भीर पालिमी को व्यपगत हो जाने दिया जाना है लो छट पह की जा सकती. है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमिश्रम के संदाध में किए गए किसी व्यिकिकम की दण में उन मृत भवस्यां के नावनिर्देश्णितयों या विधिक वारिसों की जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के श्रान्तर्गत होते, बीमा कायवों के संदाय का उत्तरकादित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियाजक इस स्वीम के कार्यन आते वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसने हकवार नामनिवैधिनियों /विधिक वारिसों को बीमाकुन रकम का संदाय सन्यरता से और प्रत्येक वशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकुन रकम प्राप्त होने के सात दिन कें भीनर सनिविचन करेगा।

[सं गम 35014 /84/82 पी ग्फ (ii)]

S.O. 3039.—Whereas Messrs New Shorrock Mills Cooperative Consumers Society Limited, Nadiad (GJ/4823) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefit admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.

- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Covernment and as and when amended along with a translation of the sahent features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the sald Act is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be fiable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S 35014(84)/82-PF.II]

का० आ० 3040 — मैंगसं राजकोट कोझापरेटिव वैंक लिमिटेड "महयोग" छेवर भाई रोंड राजकोट (जी जी 4660) (जिसे इसमें इसके पण्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भिक्षण निधि भौर प्रकीर्ण उपवत्स अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पण्चात् उक्त अधिनियम घाटा गया है) की धारा 17 की उपकारा (2स) के अधीन छूट दिए जाने के लिए आवेदन किया है;

भीर केन्द्रीय सरकार का सभाधात हो गया है कि उकत स्थापत के कर्मचारी किसी पूथक अभिदाय या प्रीमियम का संवाय किए जिता ही भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृष्ठिक बीमा स्कीम के ध्रप्रीत जीवन बीमा किए ये प्राप्तीत के लिए ये फायदे उटा रहे हैं ध्रीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उता सहस्व बीमा

स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चाम् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुजेप हैं ;

भन केन्द्रीय सरकार उक्ता प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए घौर इसमें उपाबद्ध अनुसूची में विनिविष्ट णतीं के अक्षोन रहते हुए उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविध के लिए उक्त स्वीम के सभी उपवंधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसूची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भनिष्य निधि प्रायुक्त गुजरात को ऐसी विवरणियां भैजेंगा और ऐसे लेखा रखेंगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी मुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार समय-समय पर निरिष्ट करे।
- 3. नियोजक ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की नमाप्ति के 15 दिन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार अक्न प्रशिनियम की धारा 17 की उपधारा (3%) के खण्ड (क) के प्रधीन सभय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3: सामूहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवर्गणियों का प्रस्तुत किया, जाना बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का श्रीनरण, निरीक्षण, प्रभारो का संदाय श्रावि भी है होने वाले सभी व्ययों का बहुत नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक केन्त्रीय सरकार द्वारा यथा अनुमोवित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति और जब कभी उनमें संशोधन किया आए तब उस संयोधन की प्रति सथा कमैचारियों की बहुमंख्या की भाषा में उसकी मुख्य वातों का अनुवाद स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी जो कर्मजारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुकन दर्ज करेगा और उसकी बाबत आयम्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा नियम को संदल करेगा!
- 6. यदि उन्त स्कीम के प्रधीम कर्मनारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो नियोजिक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मनारियों को उपलब्ध फायदों में धमुनित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मनारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुभीय है।
- 7. सामृष्टिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी अदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से क्रम है जो कर्मचारी को उस दया में संदेय होती जब वह अक्त स्कीम के प्रश्नीत होता तो नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/ नामनिर्देशिती की प्रतिकार के रूप में दोनों रकमों के अस्तर के बराबर रकम का संवाय करेगा।
- 8. सामूहिक वीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन प्रादेशिक भिष्टप निधि भ्रायुक्त गुजरात के पूर्व अनुमोदन के जिला नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मनारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां प्रादेशिक भविष्य निधि श्रायुक्त भ्रपना अनुमोवन देने से पूर्व कर्मनारियों को श्रपना वृष्टिकीण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त श्रवसर वेशा।
- यदि किसी कारणवण स्थापन के कर्मचारी भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के जिसे स्थापन पहले भ्रपना चुका

- है श्रधीन नहीं रह आते है या इस स्कीम के श्रधीन कर्मजास्यिं को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं तो यह छूट रह की जा सकती है।
- 10 यदि किसी कारणवण नियोजक उस नियन तारीख के भीकर जो भारतीय जीवन बीमा नियम नियम करे प्रीमियम का मंदाय करने में अस्पक्त रहता है और पालिसी को व्यवसन हो जाने दिया जाता है नो एट रह की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की देशा में उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दें। गई होती तो उक्त स्कीम के प्रन्तर्गत होने बीमा फायदों के सदाय का उन्तर्वायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक इस स्कीम के प्रधीन प्राने वाले किसी सवस्य की मूरण होने पर उसके हक्षवार नामिं दें णितियों विधिक यारिसों वो बीमाकुन रकम का संदाय तत्परना से प्रौर प्रत्येक दणा में भारतीय जीवन बोमा निशम में बीमाकुन रकम प्राप्त होने के साम दिन के भीतर सनिश्चिन करेंगा।

[सं० एस 35014/85/82-पी० एफ 2]

S.O. 3040,—Whereas Messrs Rajkot District Cooperative Bank Limited, "Sahyog" Debarbhai Road, Rajkot (GJ/4660), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exericse of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such reuting to the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him

=-._- =*=*- -.====

as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Lite Insurance Corporation of India.

- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance scheme appropriately it the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the amployees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the lgal heir/nomince of the employee as compensation
- 8. No amendment of the pprovision of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Sceline of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal hens entitled for it in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(85)/82-PF.II]

का०आ१०3041 — मैंगर्स मेटल लेम्प कोर्स (कण्डिया) लिमिटेड 2, मर्फी रोड पी०बी०नं०876 यलसूर बंगलोर-560008 (जिसे इसमें ४सके पर्वात उक्त स्थापम कहा गया है) ने कर्मकारी निवन्य निधि और प्रकीण उपवन्ध मधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पर्वात उक्त मधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपशारा (2क) की स्थीन खूट दिए जाने के लिए झावेदम किया है;

और कैरहीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापत के कर्मबारी किसी पुषक सिन्दाय या प्रीमियम का संदाम किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मबारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक भनुमूल हैं जो कर्मबारी निशेष सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें सनुग्रेय हैं;

भनः केन्द्रीय सरकार, उसन द्राधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदक्त गरितायों का प्रयोग करते हुए द्वार इससे उपायद अनुसूची में बिनिविष्ट गर्तों के प्रधीन रहते हुए, उसन स्थापन को तीन वर्ष भी भवधि के लिए उपस क्लीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छट वेती है।

551 G of I/82-10

अनुसूची

- 1. उक्स स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक श्रीवध्य निधि भायु-क्स, कर्नाटक को ऐसी विवरणिया भेजिंगा भ्रीर ऐसे लेखा रखेंगा सथा निरीक्षण के लिए ऐसी सूधिधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार समय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की समाधित के 15 विन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रक्रिनियम की घारा 17 की उपधारा (अक) के खण्ड (क) के प्रधीन समय-समझ पर निधिष्ट करे।
- 3 सामृहिक वीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाम, लेखाओं का अंतरण निरीक्षण प्रभारों का संवाय आदि भी हैं, होने वाले सभी कार्यों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा प्रनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, झौर अब कभो उनमें संशोधन किया जाए, शब उस संशोधन की प्रति सथा कर्मेचारियो की बनुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बानों का प्रनुवाद, स्थापन के सूचना-पट पर प्रवर्शित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कर्में जारी, जो कर्में बारी अविध्य निधि का या उक्त भिधिनियम के अधीम छूट प्राप्त किसी स्थापन की अविध्य निधि का पहले ही मवस्य है, उसके स्थापन में नियोजिम किया जाता है तो, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के भदस्य के रूप में उमका नाम तुरन्त दर्ज करेगा भौर उसकी बाबन आवश्यक प्रीमियम आर्न्तीय जीवन बीमा निगम को संदर्त करेगा।
- 6 यदि उक्त स्कीम के घधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक साम्हिक बीमा स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीभा स्कीम के घड़ीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से प्रधिम अनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के घड़ीन धनुनेय हैं।
- 7. साम्हिक कीमा स्लीम मे किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के ब्रधीन सदेय रकम उम रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में सबेय होती जब वह उकत स्कीम के ब्रधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक नारिस/मामनिर्वेशिती को प्रतिकर के रूप में दोनो रकमों के ब्रनर के बराबर रकम का मदाम करेगा।
- 8 मामृहिक बीमा स्कीम के उजबन्धों में कोई भी समोक्षन, प्रादेशिक भिष्य मिश्रि भायुक्त, कर्नाटक के पूर्व भनुमोदन के जिना नहीं किया आएगा थ्रीर जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रादेशिक अधिष्य निधि धायुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का यिकत्यकत अवसर देगा।
- 9 यदि किसी क(रणवक्ष, स्थापन के कर्मकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस मामृहिक बीमा स्कीम के, जिमे स्थापन पहले अपना-चुका है प्रधीन नही रह जाते हैं, या इस स्कीम के धाधीन कर्मकारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती हैं।
- 10 यदि किमी कारणवण, नियोजक उस नियत सारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, श्रीमियम का संदाय करने में प्रसाकत रहता है, भीर पालिसी को व्यवगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रव्द की जा सकती है।

- 11. नियोजक प्रारा पीमियम के सदाय में किए गए किसी क्यतिश्वम की दशा में, उस मृत सदस्यों के नामिन्दीणितयां था विधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के श्रव्यान होते, श्रीमा कायदों के सवाय का उत्तरवायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के श्रधीन आने वाले किसी सहस्य को मृत्यु होत पर अपके हकदार नामनिर्देणितियां/विभिक्ष वारियों को कीमकृत रकम का सदाय तत्परता से भीर प्रत्येक दणा में भारतीय जीवन कीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के मात दिन के भीतर सुनिष्चित करेगा।

[संब्युस-35014(93)/82-पी ब्युफ-II]

S.O. 3041.—Whereas Messrs Metal Lamp Caps (India Limited 2, Murphy Road, P.B. No. 876, Ulsoor, Bangalore-560008, (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act;

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Inurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of Section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule arnexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employee' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corpration of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.

- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of promium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S. 35014(93)/82-PF. JI]

का ब्या व 3042.— मैंससे डी व्यी व्याप व देवस्ता हिस्स कि सेट्ट-पलस्थम रोड, कोयम्बद्र-641029 (टी व्याप व 1059) (जिसे इसमें इसके परवास उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मवारी अधिव्य निधि और प्रकीण उपवस्थ आधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परवास उक्त अधिनियम, कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन खूट विष् जाने के लिए अधिदन किया है;

भी केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारे, किसी पृथक अधिवाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के भ्रधीन जीवन प्रीमा के कप में कायवे उठा रहे हैं भीर ऐसे कर्मवारियों के लिए में कायवे उन कायवें से भ्रधिक अनुकूल हैं जो कम्बारी निभेष करना बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त भ्रवीस कहा गया है) के श्रधीन उन्हें यनुक्रैय हैं;

धनः केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदश्न पाक्तियों का प्रयोग करते हुए और इसमे उपाबद अनुमूकी में विनिद्धित गर्तों के प्रधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की प्रविध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन में छट वेती है।

अनु सूची

1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक सविजय निधि प्रायुक्त तिमिलनाडु को ऐसी जिवरणियां भैजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निदिन्द करे।

- 2. नियोजक ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रस्येक मास की समाधित की 15 दिन की कीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की बारा 17 की उपधारा (3क) क खंड (क) के अबीन समय-समय पर निर्देश्व करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके ग्रन्थांत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का ग्रंतरण निरीक्षण प्रभारों का संवाय धादि भी हैं, होने बाले सभी व्ययों का बहुत नियोजक द्वारा किया आएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार धारा यथा अनुमोदिश सामूहिक जीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, धौर अब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति सथा कर्मजारियों की बंहुमंख्या की भाषा में उमकी मुख्य बातों का अनुवाद स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मवारी, जो कर्मचारी श्रीवध्य निधि का या उक्त ब्रिधिनियम के ब्रिधीन छूट प्रान्त किसी स्थापन की श्रीवध्य निधि का पहले ही सबस्य हैं, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामुहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त वर्ज करेगा बौद उसकी बाबत श्रावश्यक ग्रीनियम भारतीय जीवन त्रीमा निगम को संबक्त करेगा ।
- 6 यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों की उपबन्ध फायवे बढ़ाए फाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों की उपलब्ध फायवों में ममृचित रूप से तृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए मामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायवे उन फायवों से अधिक अनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अनुजैय हैं।
- 7 सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होतें हुए. भी, यदि किसी कर्मवारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेय रक्षम उस रक्षम से क्षम है जो कर्मवारी को उस देशा में सदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मवारी के विधिक वास्मिनामितिकी को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमों के अंतर के अराबर रक्षम का संवाय करेगा।
- 8 सामृहिक क्षेमा क्लीम के उपबन्धों में कोई भी समोधन, प्रादेशिक सिवध निधि प्रायुक्त, निम्नानाकु के पूर्व भनुमोवन के बिना नहीं किया जाएगा भीर जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रसिकृत प्रभाव पढ़ने की सभावना हो वहां, प्रावेशिक निवध्य निधि प्रायुक्त प्रपत्न अपना धनुमोवल देने से पूर्व कर्मचारियों को भ्रापना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का यक्तियक्त अवसर देगा।
- 9 प्रवि किमी कारणवाग स्थापन के कर्मचारी, धारतीय जीवन धीमा निगम की उम मामूहिय बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस म्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किमी रीति में कम हो जाते हैं, तो यह छूट रस्द की जा सकती हैं।
- 10 यदि किनी कारणवण, नियोजक उस नियन नारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहना है, धाँर पालिसी को व्यपगन हो जाने दिया जाता है सो, छूट खुब की जा सकतो है।
- 11 तियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिक में की दशा में, उन मूस सदस्यों के नामनिविधितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह, श्रृंट न दी गई होती तो उक्त स्कोम के प्रकर्णन होते, भीमा फायदों के संदाय का उत्तरदायिक्ष्य नियोजक पर होगा।

12. उनत स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के प्रधीन धाने वाले किसी सबस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितियो/विधिक वारिभों को बीमाक्कत रकम का सदाय तत्परता से भीर प्रस्यंक दक्षा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाक्कत रक्षम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर सुनिश्चिन करेगा।

[स॰एस-35014(91)84-पा॰एफ॰ 2]

S.O. 3042.—Whereas Messis D.P.I. Textiles Limited, Mettupalayam Road, Combatore-041029 (1N/1059) (neremafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 1/ of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinatter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the emloyees of the said establishment are without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Not, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately eurol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.

- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be hable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S. 35014(94)/82-P.F.II]

का० आ० 3043 — मैसर्स ला० गण्जर मणीनरीज प्राईवेट लिमिटेड, प्रपोजिट कल्याण मिल्स, नरोदा रोड झंहमवाबाद-380025 (जी जे /20 ई) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मेचारी भविष्य निधि और प्रतीर्ण उपवन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त झिंपित्यम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के प्रधीन छूट दिए जाने के लिए ब्रावेदन किया है;

भीर केंग्नीय सरकार का समाधान है। गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक प्रभिधाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं भीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये कायदे उन फायदों से प्रधिक धनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पण्चास् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्षेय हैं;

श्रतः केश्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाबद्ध मनुसूची में विनिधिष्ट शर्तों के प्रधीते रहते हुए , उक्त स्थापन को तीन वर्ष की श्रवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रधर्तन से खूट देती है।

अनुसुची

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक अविष्य निधि प्रायुक्त गुजरात को ऐसी विवरणियां मेजेगा भीर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त भविवियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा आना, विवरणियों का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संवाय आदि भी है, होने बाले सभी अवयों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।

- 4. नियोजक, केन्द्रीय मरकार द्वारा यथा अनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संगोधन किया जाए, तब उम संगोधन की प्रति तथा कर्मजारियों की बहुसंबया को भाषा में उसकी मुख्य बानों का प्रनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रविधित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या जक्त मिनियम के मिनि छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजक, सामूहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम सुरम्स वर्ज करेगा मौर उसकी बावत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदल्त करेगा।
- 6. यवि उनत स्कीम के झाधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायवे बढ़ाएं जाते हैं तो, नियोजक मामूहिक बीमा स्कीम के झाधीन कर्मजारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप से वृद्धि की जाते की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के झाधीन उपलब्ध फायवे उन फायदों से झाधिक झनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के झाधीन अनुक्रेय हैं।
- 7 सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी, कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के प्रधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दक्षा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नामनिर्देशिसी माँ प्रनिकर के रूप मे दोनों रक्षमों के ग्रंतर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. मामृहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भविष्म निश्चि प्रायुक्त, गुजरात के पूर्व अनुमादिन के बिना नहीं किया जाएगा भीर जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रादेशिक भविष्य निधि भ्रायुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकीण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवल, स्थापन के कर्मवारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले धपना चुका है झंधीन नहीं १ह जाते हैं, या इस स्कीम के झंधीन कर्मचारियों को प्राप्त फायदे किसी रीति से कम हो जाने हैं, तो यह छूट रह की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवण, नियोजक उस नियत नारीख के भीतर, जो भारतीय जीवना बीमा निगम नियत करें, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, भीर पालिसी को व्ययगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रह की जा सकती है।
- 1. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी ध्यक्तिकम की वक्षा में, उन भृत सदस्यों के मामनिर्देशितियों या विधिक धारिसी को जो यदि छह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के प्रत्नौत होते, बीमा फायबों के संदाय का उन्तरवाधित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के ध्रधीन ध्राने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितियों विधिक वारिसों को वीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से धीर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[सं॰ एस- 35014 / 95 /82 न्मी एफ (II)]

S.O. 3043.—Whereas Messrs La Gajjar Machineries Private Limited, Opp. Kajyan Mills Naroda Road, Ahmedabad-380025 (GJ|20B) (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereot, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Iusurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Jife Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this S-heme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heir, of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomine elegal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(95)/82-P.F.II]

का० आ० 3044--मैनर्स सावरका था डिस्ट्रिक्ट कोश्रापरेटिक मिल्क प्रोध्यूससँ यूनियन लिमिटेड (सावर डेरी) हिम्मत नगर (गुजरात) (जी० ज० / 3558) (जिसे इसमें इसके परनान उक्त स्वापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रक्रीण उपअध्य प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके परनात उक्त झिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए झाबेदम किया है:

त्रीर केन्द्रीय सरकार का समाह्यान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक प्रभिवाय या प्रीसियम का संदाय किए बिना ही, भाग्नीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं भौर ऐसे कर्मचारियों के खिये ये फायदे उन फायदों से प्रधिक प्रनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहस्रद्ध विमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पण्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के प्रधीन उन्हें अनुक्षेय हैं;

गतः केस्त्रीय सरकार, उकत प्रधिनियम की द्वारा 17 की उपद्वारा (2क) द्वारा प्रदल्त मित्रयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाद्ध प्रमुखी में विनिर्दिष्ट मतों के प्रधीन रहने हुए उक्त स्वापन को तीन वर्ष की प्रविधि में लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अमुसूची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक अधिष्य निधि श्रायुक्त, गुजरात की ऐसी त्रिवरणिया भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी मुलिशाए प्रधान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2. नियोजक ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रस्येक मास की समाप्ति के 15 विम के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय संग्कार, उक्त ग्राह्मिनयम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के ग्राधीन समय समय पर निर्धिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में जिसके मन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाध, लेखाओं का संतरण, निरीक्षण प्रभारों का संवाय झावि भी है, होने वाले सभी उथयों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा धनुमोवित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति. धौर जब कभी उनमें संशोधन किया आए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियो की बहुसख्या की भाषा में उसकी मुक्य बांसों का प्रमुखाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रविधित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी सविषय निधि का या उक्त धितियम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन को सविषय निधि का पहले ही सवस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामू- हिक धीमा स्कीम के सवस्य के रूप में उसका माम कुरस्त वर्ज करेगा और उसकी बाबन प्रावश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदश्त करेगा।
- 6- यवि उक्त स्कील के मधील कर्मचारियों को उपलब्ध पायबे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कील के मधील कर्मचारियों

को उपलब्ध फायदों में समुजिम एप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मजारिमों के लिए सामूब्रिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से प्रधिन ध्रमुकृत हों, जो उक्त स्कीम के प्रधीन ध्रमुक्षेय हैं।

- 7. सामूहिक बीमा स्क्रीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्म-जारी की मृत्यू पर इस स्कीम के प्रधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मजारी को उस दक्षा में सदेय होती अब वह उक्त स्कीम के भ्रष्ठीत होता तो, नियोजक कर्मजारी के विधिक वारिस / नामनिर्देशिनी को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमो के भ्रमर के बराबर रकम का सदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धी में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक जिबस निधि प्रायुक्त गुजरात के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहा बिसी संशोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रादेशिक मिष्टिया निधि प्रायुक्त प्रपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त स्वसर देगा।
- 9 यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मचारी, भाग्तीय जीवन बीमा निगम की जस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपना पृका है प्रधीन नहीं रह जाते हैं, यह इस स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छुट रह की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवंश, नियोजक उस नियन तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवना बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संवाय करने में प्रसफल रहता है, श्रीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रह की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी क्यितिश्रम की दशा में, उन मृत सवस्यों के नामनिर्वेशितियों या विधिक वारिमों का जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के घस्तर्गत होते, भीमा फायदों के संवाय का उत्सरवायित्व नियोजक पर होगा।
- 1.2. उक्त स्थापन के सबध में नियोजक, इस स्कीम के मधीन माने बाले किसी सबस्य की मृत्यु हुंनि पर उसके हकवार मामनिर्देशितियो/विधिक पारिसों को बीमाकृत रक्तम का सवाय तत्तरता से श्रीर प्रत्येक दक्ता में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रक्तम प्राप्त होने के सात विभ के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[स॰ एम-35014 / 97 / 82-पी॰ एफ -2]

S.O. 3044.—Whereas Messrs Sabarkantha District Co-operative Milk Producers Union Limited (Sabar Dairy) Himabnagar (Gujarat) (GJ/3558) (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under subsection (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Com-

- missioner, Gujarat and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and a_8 and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who $i_{\rm S}$ already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Gujurat and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs o deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(97)/82-PF.II]

का॰ आ॰ ३०४5.—मैं सर्न खेथी-सीमी इनिवपमेंट पोलवी रोड, मलुम वमपट्टी पोस्ट कोयम्बट्टर-641021 (टी॰ एन॰-19884). (जिसे इसमें इसके पश्चास उक्त स्थावन कहा गया है) ने कर्मवारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपयन्ध छिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इममें इसके

पम्चाम उक्त अधिनिधम कह गया है) की खाण 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए ब्रावेदन किया है,

श्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उसन स्थापन के कर्मकारी, किसी पृथक श्राभिषाय या श्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के श्रधीन जीवन बीमा के स्प में कायवे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मकारियों के लिए ये कायवे उन कायदों में श्रधिक अनुकूल है जो कर्मकारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे हममें इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के श्रधीन उन्हे श्रनकेय है;

ग्रतः केन्द्रीय सरकार, उक्त जधिनियम की धारा 17 की उपधीरा (2क) द्वारा प्रदत्त सक्तियों का प्रयोग करते हुए भीर इससे उपास्य धनुसूची में विनिद्दिष्ट शर्ती के अद्वीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की शब्धि के लिए उक्त स्कीम के मभी उपबंधों के प्रवर्ग से खूट देती है।

जनुसुची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भविष्य निधि घ्रायुक्त, तिमलनाडु को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा नथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निरिद्ध करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त ग्राधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के ग्राधीन समय-समय पर निदिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीभा स्कीम के प्रणासन में जिसके अन्तर्गत लेखाड़ों का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाता, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाड़ों का झंतरण, निरीक्षण प्रभागे संदाय झादि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।

नियोजक केस्त्रीय सरकार द्वारा यथा अनुमोदिन सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति भौर जब कभी उनमें संशोधन किया जाए तब उस संशोधन की प्रति नथा कर्मकारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद स्थापन के सूचना-पट पर प्रदर्शित करेगा

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मेचारी जो कर्मेचारी श्रीवय निधि का या उक्स अधिनियम के प्रष्टीन छुट प्राप्त किसी स्थापन की भिन्य निधि का पहले ही सबस्य है उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामूहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तुरस्त दर्ज करेगा और उसकी बाबन भावण्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदल्त करेगा।
- 6. यदि उस्त स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों की उपलब्ध कायदे बहाए जाने हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध कायदों में समृचित रूप में षृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध कायदे उन कायदों से अधिक अनुकृत हो, जो उक्त स्कीभ के अधीन प्रमृचि ग्री, जो उक्त स्कीभ के अधीन ग्रमुनीय हैं।
- 7. सामृहिक बी.मा स्कीम मे किसी बाम के होते हुए भी, यदि किमी कर्मचारी की मृह्यू पर इस स्कीम में अधित संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दणा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीत होता तो, तियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/तामितिर्देणिती को प्रतिकार के छए मे दोनों रकमों के अंतर के बराबर रकम का संवाय करेगा।
- 8. सामृद्रिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी सणोधन, प्रावेणिक भविष्य निधि प्रायक्त, तीमलनाड के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और अर्थ किसी सणोबन से कर्मकारियों के बिन पर प्रतिकृत

प्रभाव पड़ने की संभावना हो बहा, प्रावेशिक भविष्य निधि धायुक्त, धवना प्रतुमोदन वेने से पूर्व कर्मकारियों को धयना वृष्टिकीण स्पष्ट करने का यक्तियक धनसर वेगा

- 9 यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले धरना जुका है ग्रधीन नहीं रह जाते हैं या इस स्कीम के जधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रह की जा सकती हैं।
- 10 यदि किनी कारणवण, नियोजक उस नियत तारी**क के भी**तर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असकल रहता है, और पालिगी को व्यवगत हो आने दिया जाता जाता है तो, छट रवद की जो सकती है।
- 11 नियोजन द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा मे, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशियों था विश्विक वारिसों को जो यदि यह छट न वी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते, बीभा फायदों के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12 उनत स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के श्रवीन द्याने वाले किसी सवस्य की मृत्यु होने पर उसके लुकवार नामनिर्देशित्यों/विश्विक वारिसी को बीमाकृत रकम का संवाय तत्परता से द्यौर प्रत्येक दक्षा में भारतीय जीवन बीमा नियम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के साम दिन के मीतर मुनिक्चित करेगा।

[सं॰ एस-35014/98/82-पी॰**एफ-**2]

S.O. 3645.—Whereas Messrs Revathi CP Equipment, Pollachi Road, Malumachampatti Post, Coimbatore-641021 (IN/9884), (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Lice Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed here'o, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time,
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.

- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as alread adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to the cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Schéme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(98)]82-PF-II]

का०आ१०3048.--मैनर्से निश्च बातु निगम लिमिटेड, ल्यर मलायस प्रोजेक्ट, डाक्स्यर कंचनकाग, हैवराबाद-500258(ए०पी०/3988) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मवारी अविध्य निश्चि और प्रकीण उपवन्त्व प्रक्रिनियम, 1952 (1952का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त प्रधिनियम कहा गया है) कि खारा 17 उपवारा (2का) के अधीन छूट दिए जाने के लिए छावेदन किया है;

भीर केन्द्रीय सरकार का सावक्षान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक ध्रविचाय या प्रीमियम का संवाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के ध्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायवे उठा रहे हैं भीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायवे उम फायवों से ध्रविक ध्रनुकूल हैं जो कर्मचारी निभीप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें ग्रव्होंय है;

धतः केन्द्रीय सरकार, उक्त झिखानियम की श्रारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदेन भक्तियों का प्रयोग करने हुए और इससे उपापश्च धनुकूषी में बिनिविष्ट भर्तों के भ्रश्चीन रहने हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविश्व के लिए उक्त स्काम के सभी सपबंधों के प्रवर्शन से सूद देती है।

अन्स्ची

- 1. उक्त स्वापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक मविष्य निधि प्रायुक्त, प्रान्ध्र प्रदेश को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, सनय-नमय पर निविध्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरोक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रश्चितियम की बारा 17 की उपबारा (3क) के खंड (क) के प्रश्नीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामूहिक वीमा रकीम के प्रशासन में, जिसके ग्रन्तगैत लिखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का प्रग्तरण, निरीक्षण प्रभारों संदाय भावि भी है, होने वाले सभी व्ययों का यहन नियोजक ग्रारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केस्ब्रीय सरकार इतरा यथा प्रमुमोदित सामूिक्त बीमा स्कीम के नियमो की एक प्रति, धौर जब कभी उनमें संशोधन किया जाए तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मकारियों की बहुसंन्त्रा की चाथा में उसकी मुक्य बातों का प्रमुखाव, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निश्चि काया उक्त प्रश्नित्यम के प्रश्नीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की मिनष्य निश्चि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामूहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त वर्ज करेगा और उसकी बाबत प्रावश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा स्कीम नियम को संवत करेगा।
- 6. यदि उकत स्कीम के प्रश्नीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजिक सामृहिक की मा स्कीम के प्रश्नीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित कप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक की मा स्कीम के प्रश्नीन उपलब्ध फायदे उम फायदों से प्रश्निक प्रमुक्त कों, जो उक्त स्कीम के प्रश्नीन प्रमुक्त हों,
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए, भी, यदि किसी फर्मजारी की मृत्यु पर इस स्कीम के मधीन संदेय रक्तम उस रक्तम से कम है जो कर्मजारी की उम दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के मधीन होता तो, नियोजक कर्मजारी के विक्रिक बारिम/नामनिर्देशिती को प्रसिक्त के रूप में दोनों रक्तमों के मन्तर के बराबर रक्तम का संदाय काना।
- 8 सामूहिक बीमा स्कीम के उपजन्ती में कोई भी संजीवन, प्रावेभिक मिष्य नििष्ठ प्रायुक्त, धानध्र प्रवेश के पूर्व धनुमोवन के बिना निर्ही किया आएगा और जहां किसी संगीधन में कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पढ़ने की संभावना हो वहां, प्रावेशिक भविष्य नििष्ठ धायुक्त, धवना अनुमोवन वेने से पूर्व कर्मचारियों को धवना वृष्टिक्शीण स्पष्ट करने की युक्ति युक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मवारी, भारतीय जोवन बीमा निगम की उम सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहने घनना बुका है प्राधीन नहीं रह जाने हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मवारियों को प्रीप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाने हैं, सीयह छूट रह की जा सकती है।
- 10. यवि किसी कारणवश नियोजक उस नियत तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन कीमा नियस नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिनी को व्ययगत हो जाने विधा जाता है तो, छूट रह की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय मे किए गए किसी व्यक्तिकम की दला में, उस मृत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विश्विक कारिसों कें। जो विष यह, छूट न दी गई होती तो उक्त क्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायवों के सदाय का उत्तरदाणिक नियोजक पर होगा।

12. उक्त स्थानन के नंत्रंत्र में नियोज क, इस स्कीम के अबीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्दाणितियों/विधिक बारिसो को बंत्माकृत रकम का सदाय तत्परता से और प्रत्येक दशा मे भारतं य जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के मात दिन के भातर सुनिश्चित करेगा।

[स॰एस-35014/108/82-पो एक-2]

S.O. 3046—Whereas Messis Mish a Dhatu Nigam Limited Superalloys Project, P. O. Kanenan Bagh, Hyderabad-500258 (AP/3936) (hereinafter referred to as the said establishment) have be applied for exemption under subsection (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme),

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmadabad maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund of the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Schenae and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corpe ation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme, are chlanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.

- 8. No amendment of the provisions of the Group Insusance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmadabad and where any amendment is likely to affect adversely the intenst of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmadabad and where any amendment is likely to affect adversely the intenst of the employees, the Regional Provident Fund approval, give a control of the employees to explain their ocint of the
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance. Scheme if the life Instruce Coronation of India as alterely idented by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be hable to the cancelled.
- 10. When, for any reason the employer fails to pay the premium within the doe date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014 (103)/82-PF. III

का॰आ॰ 3047.--मैसर्स ला-गज्जर ब्लोग्रर्स प्राईवेट लिसिटेड कल्याण मिल्स के निकट, नरोदा रोड, ग्रहमदाबाद - 380025 (ग/20 सी) (जिसे इसमें इसके पण्चान / उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपवन्ध ग्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए अपनेदर किया है:

श्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गर्या है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही. भारतीय जीवन वीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के ग्रधीन जीवन बीमा के रूप में फाय दे उठा पहें है ग्रीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदो से अधिक अनुकुल है जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमे इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुज्ञेय है ;

श्रतः केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रन-सूची में निर्तिदिष्ट णर्तो के अधीन रहते हुए, उनन स्थापा को तीन वर्ष की अविधि के लिए उक्त स्कीम के सभा उपबन्धी के प्रवर्तन से छट देती है।

अनुपुची

- 1 उनंत स्थापन के सबध मे तिरोजक प्रादेशिक भविष्य निधि ग्रायुक्त, अहमदाबाद को ऐना तिवरणियां भे नेग और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐस। सुविधाए प्रदान करेगा जो वेर्न्द्राय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उका मधिनियम की क्या 17 की उपधारा • (3क) के खड (क) के ग्रधान समय-सनय पर
- 3 सामूहिक बीमा स्कंम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवर्णियों का प्रदान किया जाना, बामा प्रीमियम का सदाय. नेबाम्रो का मन्तरण, निर्रक्षण प्रभारो वा संदाय ग्रादि भा है, होने वाले सभी व्ययो का वहन नियात्रक द्वारापिकाः गार्गा।

- 4 नियाजक, केन्द्रीय भरकार द्वारा यथा प्रनुपोदिन सामूदिक बामा सकीम के नियमी की एक प्रति, श्रीर जब कभी उनमें सशोधन किया जाए, तो उम संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसख्या को भाषा में उसकी मुख्य जानों का श्रनुवाद, स्थापन के मुचना-पट्ट पर प्रवर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधिका या उक्त अधिनियम के अर्धान छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधिका पहले ही सदस्य है, उनके स्थानन में निशीजन किया जाता है तो, निशाजक, साम्हिक वीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त वर्ज करेगा और उसकी बायत अन्वप्रक प्रीमियम भारतीय जीवन कि मा निगम को संदत्त करेगा।
- (यदि उक्त स्काम के अर्थान कर्मचारियों की उपलब्ध फायदे बढ़ार जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक वीमा स्कीप के अधीन कर्मचारियों की उपलब्ध फायदों में समृत्वित रूप में वृद्धि का जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहित व'सा स्कीम के अर्थान उपनव्ध फायदें के अर्थिक अनुकल हो, जो उक्त स्कीम के अर्थान अनुकेय हैं।
- 7 मामूरिक बीमा नकीम ने िया कि को होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कोम के प्रधीन सदैय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी की उस दशा में सदैय होती जब यह उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजक कमचारी के विधिक वारिस/नामनिर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के श्रन्तर के बराबर रकम का सवाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा ल्कीम के उपबन्धों ने काई भी संगोधन, प्रादेशिक भिवास निश्चि आयुक्त, अहमदाबाद के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया आएगा और उहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृष प्रभाव रजने की संभावना हो वहा, प्रादेशिक भविष्य निश्चि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने ते पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त प्रवसर देगा।
- 9 यदि किसी कारणनम्म, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगर की उस सामूहिण बीमा स्कीम के, जिले स्थापन पहले ध्रपना जुका है, अधीन निश्च के ते हैं, या अस स्कीम के ध्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त हीने याले पत्रपदे भिन्न नीति से अम हो जाते हैं, तो यह छट रह की जा सकती है।
- 10 प्रति किसी कारणवण, नियोजक उस नियत हारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में, असफल रहता है, धौर पाणिसी को घ्ययगत हो आने दिया जाता है ता कुट रह की जा सकती हैं!
- 11 नियोजक हारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा मे, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिसों को जो पहिंच यह, छूट रा दी गई हीती ता उकत स्कर्ण के श्रत्सारीह होती, बीमा फायदों के सदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12 उक्त स्थापन के सबध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने बाल किसी सदस्य की मत्यु होने पर उसके हकदार नामनिर्देशितियो/विधिक बारिसों को बीसाफुन रकम का सदाय तत्परता से और प्रत्येक देशा में भारतीय जीवन बीम। निगम से बीमाइत रकम प्राप्त होने के साम दिन के भीतर मुनिध्यित करेगा।

सि॰ एस॰-35014(122)82-पी एफ-2]

S.C. 3647.—Whereas Messis La-Gajiat Blowers Private Limited, Near Kalvan Mills, Naroda Road, Ahmedabad-380025 (GJ/23c) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneou Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any reparate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such

employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmedabad and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme, are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmedabad and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to the cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer tails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of

assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure mompt payment of the sum assured to the nominee/legal he is entitled for it and m any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014 (122) [82-PF II]

कार्ट्सा० 3948 — संसर्ग केसट डाइस एड के मिकल्स, 34, चौरिषी रोड, कमकता-700071, (जिसे इससे इसके प्रचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचार। भिष्टिय निधि भीर प्रकीर्ण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इससे इसके प्रचात् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (क्र) के श्रधीन छूट दिए धाने के लिए साबेदन किया है.

श्रीर केन्द्रीय सरगार का समाधान हो गया है कि उसत स्थापन के कर्मचारी, किसी पथन पश्चिष्य या प्रीमियम कासदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा कि स्थीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उटा रहे हैं और ऐसे वर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से श्रधिक श्रमकल है जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमे इसके पश्चात् उक्त रक्षीम कहा गया है) के श्रधीन उन्हें अनुकोय हैं,

ग्रत केन्द्रीय सरनार, उत्तर प्रथितियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदक्त शक्तियो ना प्रयम् करने हुए और इससे उपावक शनस्वी में तिनिदिष्ट शर्तों के प्रधान राजने तप, उत्तर स्थापन को तीन वर्ष की ग्रवसी के लिए उत्तर स्थीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से हुट देती हैं।

अगुमुची

- 1. त्यतः स्थापन के सबध में नियोजक प्रादेशिक मिवष्य निधि मायुक्त, कलकत्ता को ऐसी विवरणिया भेजेगा भ्रौर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी मुदिधाण प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2 नियोजक, एंसे निर्देशण प्रभारा का प्रायंक मास की समाधित के 15 दिन के भीतर सद य करेंग जो नेज्यांस सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (अक) के खण्ड (क) के अधीन समय समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3 सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन मे, जिसके श्रन्तर्गत तेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीक्थिम का सदाय लेखाओं का घतरण, निरीक्षण प्रभूरों का सवाय श्रावि भी है होने वाले सभी व्ययों का वहन नियंजक द्वारा किया जाएगा।
- 4 नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा बनुमंदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, ग्रीर जब कभी उनमें सणोधन किया जाए, तब उस सणोधन की प्रति तथा कर्मचारिया की बहुसदया की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनवाद, रघापन के सूचना पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कमचारी, जो कर्गवारी भविष्य निधि का या उक्त श्रिधितियम के श्रिक्षीण छूट प्राप्त विस्ता त्यापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन के स्थिति है दिया जाता है तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्थीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी सावर्त श्रावण्यक श्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम की सदत्त करेगा।
- 6 यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बहाए जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों के समृश्वित रूप से बिद्ध की गाने की व्यवस्था करेगा,

जिससे कि कर्मच।रियों के लिए सामूहिक वीम। स्कीस के प्राथीन जपलब्ध फायदे उन फायदा से थिषक धनुकूल हो, तो उत्तन स्कीस के अधीन अनुजेय हैं

- 7 सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के हाते हुए मी यदि किसी कर्मचारी को मृत्यू पर इस रकीम के अधीन मदेय रक्ष उत्तर रक्तम से कम है जो कर्मचारी को उस दणा में सदेय होता जब वह उत्तर स्ताम के अधीन होता, तो नियोजक कर्मचारी के विधिक धारिस/नामनिर्देणिये को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमों के अन्तर के बराबर रक्षा का सदा करेगा।
- 8 सामूहिक र्यामा स्काम के उपयन्तों से नाई भा सशायन, प्रादेशिक शिविष्य निधि प्रायुस्त, कलकत्ता के पूर्व अनुसीक्षा के विचा नही किया जाएगा और जहा किसो सशाधन से पर्मचारिया के हिता पर प्रतिभूत प्रभा पटन की सभावना हो वहा, प्रादेशिक शविष्य विकि आपुन्त, अपना अनुमोक्ष्य देने से पूर्व कर्मवारियों को अपना पृष्टिकोण रपष्ट गरने का युक्ति-युक्त शवसर देगा ।
- 9 पदि किसी कारणवण, स्थापन के कमंचारी, भारतीय जीलन बीमा निगम भी उस समृहिक वीमा स्थापन के ित्मे स्थापन पहते अपना चुंदा है प्रधीन नही रह जान है, या एस स्कीम के प्रधीन कमेंचारियों की प्राप्त होने अले फायदे किसी राति सं यस हो जाते हैं, तो यह छूट रह की जा सकती है।
- 10 यदि किसी का णवण, नियोजक उस नियंत तारील के भीतर, जो भारतीय जीवन बासा निगम नियंत करे, प्रीमियम का माध्य करने में प्रसाफल रहता है, प्रीर नालिसी को ज्यासत है। अभी दिया नात है ता छुट रह की जा सकती है।
- 11 निगोजिक द्वारा प्रीमियम के सदाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की बगा में, उन मृग भदस्यों के नामनिर्दीर्णातयों या विधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्काम के श्रन्तर्गम होते, वीमा कायदी के सवाय का उत्तरवायित्व तियोगिक गर हो ।।
- 1.2 जनत स्थापन के सबध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने बारी किसी सदरम की जून्य होने पर उसके एकदार नामनिदेशितियो/विधिक बारिसो को बीमाकृत रकम का सदाय तत्परता से और प्रत्येक देशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर मुनियन १९४॥।

[स॰ एम॰ 35/11 1/126/81-भ०नि०-2]

S.O. 3048.—Whereas Messrs Crescent Dyes and Chemicals, 34, Chowringhee Road, Calculta-700071. (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employers of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident. Fund Commissioner, Calcutta and multitain stell accounts and provide for such faculties for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group. Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be boing by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is etaployed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under Scheme arpropriately if the benefits ployees under the said scheme, are benefits, available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Institution Scheme, if on the death of an employee the amount payable under his scheme less than the amount that would be payable had employee been covered under the said volume, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Sch.me shill be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Calcutta and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India is already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason the employer fails to now the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased member, who would have been covered under the said Scheme but for grent of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee-leval heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life. Insurance Corporation of India.

काठ आठ 3049—मैससँ हिन्दुस्तान निथर निमिटेड, हिन्दुस्तान लीवर हाउस, 165-166, खँकबे रेक्लमंग्रत, मुम्बई-400020 (महा०/917) (जिसे इसमें इसके पण्यात् उस्त स्थापन कहा गया है) ने कमंचारी मिनव्य निधि ग्रीर प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्यास् उस्त ग्रिधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए ग्रावेदन किया है,

...e serma-

श्रीर केन्द्रीय संकार का समाधान हो गया है कि ज्यत स्थापन के कर्मशारी, गिरी पृथक अभिवाय या प्रीमियम का गदाय किए विना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृद्धिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उटा रहे हैं श्रीर ऐसे कर्मशारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से श्रीधक अनुकल हैं जो कर्मशारी निक्षेप सद्वाब बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमे इसके पश्चात् उयत स्कीम करा गया है) के श्रधीन उन्हें श्रन्तेय है;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रविनियम की घारा 17 की उपधारा (१००) द्वाराश्रदत्त शिवतयों का प्रयोग करने हुए और इससे उपावस श्रनुसूची में विनिदिष्ट शर्ती के श्रधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की श्रविधि के लिए उन्त स्कीम के सभी उपवधी के प्रवर्तन से छूट टेकी है।

अनुसर्चर

- 1. उभत स्थापन के संबंध में नियाजक प्रावेणिक भविष्य निधि श्रायुक्त महाराष्ट्र को ऐसी विश्वरणिया मेजेगा श्रीर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी मुक्धिएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निराक्षण प्रभारों का प्रत्येक गाम की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सदाय करेगा जो केन्द्रीय गरकार, उक्त श्रविनियम की धारा 16 की उपधारा (3क) के खड़ (क) के श्रधीन समय समय पर निर्विट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन मे, जिसके अन्तर्गन लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, वीमा प्रीमियम का संबाय, लेखाओं का अतरण, निरीक्षण प्रभारों सदाय ग्रादि भी है, होने वाले सभी ध्यां का बहन नियोजक हारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा धनुवीदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमो की एक प्रति, धौर जब कभी उनमें प्रशाधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मवादि यी बहुमस्ता की भाषा में उसकी मुख्य बाता का धनुवाद, स्थापन के सुप्रका-पट्ट पर पर्धात करेगा।
- 5. यदि कोई ोमा कर्मचारी, जो कर्मभारी प्राथित्य निधि का या उक्स प्रधिनियम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भिवाय विधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियाजित दिया जाता है ता, नियाजिश, सामृहिक बीमा निशाम के सदस्य के रूप में उसका नाम नरना वर्ज गना। धीर उसकी बादन प्राययक्ष प्राधियम भारतीय जीवन बीमा विध की सदस्य के रूप में
- 6. सदि उनत स्कीम के श्रधीन कर्माणिया को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं ती, नियोजक सामृहिक बोमा स्कार के श्रधीन कर्म िया को उप-सब्ध फायबों में समृतिन रूप से बुक्ति कार कि का कर किया के किया कि कर्मवारियों के निष् सामृहिक बार क्लीस के श्रधीन पान्टिस फायदे उन फायदों से श्रधिक श्रमृकूष हो। या उत्तर रूपन के श्रधीन श्रमुकीय है।
- 7. सामूहिक बीशा स्कीम में किसी बात के हले हुए भी, यदि किसी कर्मवारी की मृत्यू पर इस स्काम के अधीन सदय रकता उस रकम के कम है जो कर्मवारी को उस दला में मदेश है तो जब धर उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजक कर्मवारी के विधिक वर्धिस्मानाम निर्देशिता की प्रतिकर के रूप में दीनों एकमां के प्रस्तर के वरावर रकम का सदाय करेगा।

- ठ सामृहिक आसा स्कीम के उपजन्धों में कोई भी सणोधन, प्रादेणिक शिविष्य निधि प्राप्तुक्त, सहाराष्ट्र के पूर्व अनुगोबन के जिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी सणोधन से कर्मचारिया के हिन पर प्रशिक्त प्रभाव पड़ने की संभावना हो बहां, प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, ध्रपना धनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों का ध्रपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तिय्वत अवसर देगा।
- 9 यदि किसी कारणवंण, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीसा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपत्ता खुका है मधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होंने बाले फायदे किसी रीति से कम हा जाते हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10 यदि किसी कारणवण, नियांजक उस नियन तारीख के भीतर, जो भारत य जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में . असफल रहता है, भीर पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो. छूट रह की जा सकती है ।
- 11 नियोजक द्वारा प्रीमियम के सदाय में किए गए किसी व्यतिश्रभ की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विश्विक वारिमों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती ता उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते बीमा फायदों के संदाय का उत्तरवाधित्व नियोजक पर होगा।
- 12 उक्त स्थापन के सबंध में नियोजक, इस स्कीम के ध्रधीन श्राने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकवार नामनिर्देशिनियो/विधिक वारिमों को बीमाकुन रकम का संवाय तत्परता से धौर प्रत्येक दणा में भारतीय जीवन बीमा निगम में बीमाकृन रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीवर मुनिश्चित करेगा ।

[ग्म॰ 35011/130/82-पी॰ग्फ॰-2]

S.O. 3049.—Whereas Messrs Hindustan Lever Limited, Hindustan Lever House, 165-166. Backbay Reclamation, Bombay-400020 (MH/917) (hereinafter referred to as the sad establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more faycurable to such employees than the benefits admissible under the Employees Depositlinked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule agnexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner. Maharashtra and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.

 551 G of 1/82—12

- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient leatures thereof, in the language of the majority of the employees
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Lite Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under Scheme appropriately if the benefits available under the said scheme, are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance enhanced so that the benefits available to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme he less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Muharashtra and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10 Where, for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure promot payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

INo. S-35014 (130) 82 PF. IП

का० आ० 3050 — मैसर्स भारत फ़िट्ज वर्नर प्राहवेद लिमिटेड. रिजस्ट्रीकिन कार्यालय पीनियां, बंगलीर-560022 (के॰एन०/2346) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि सीर प्रकीर्ण उपबन्ध स्रक्षिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्रिधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के स्रष्ठीन छट दिए जाने के लिए धारोदन किया है;

ग्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उबत स्थापन के कर्मबारी, किसी पृथक ग्रिमियय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा रकीम के घ्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं ग्रीर ऐपे कर्मबारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से श्रीक्षक ग्रनुक्ल है जो कर्मबारी निक्षेप सम्बद्ध बीमा स्कीम 1976-(जिमे इसमे इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन अर्म्हें प्रमुक्तेय हैं;

धनः केन्द्रीय सरकार, उक्त घिधिनयम की धारा 17 की उपधारा (2क) धारा प्रवक्त गक्तियो का प्रयोग करने कुए घौर इसमे उपाबद्ध धनुसूची मैं विनिर्दिष्ट शर्नों के घ्रधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की धन्नधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबंधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसुको

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त, कर्नाटक को ऐसी विषरणियां भेजेगा प्रौर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उनन अधिनियम की भारा 17 की उपधारा (3क) के श्रंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन, में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय प्रादि भी है, होने बाले सभी अयमी का बहुन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा अनुमोदिन सामृहिक बीमा स्क्रीम के नियमी की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मजारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त शिक्षित्रयम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामूहिक शीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम सुरत्त दर्ज करेगा श्रीर उसकी बाबन ग्रावण्यक श्रीमियम भारतीय जीवन कीमा निगम को सबल्य करेगा।
- 6. यदि उन्नत स्कीम के भ्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए, जाने हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के भ्रधीन कर्मचारियों को उप-कब्द फायदों में समुचित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिनसे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के भ्रधीन उपलब्ध फायदे उन कायदों से भ्रधिक भ्रमकृत हों, जो उन्तर स्कीम के भ्रधीन सन्होंग हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए थी, यदि किसी कर्मजारी की मृत्यु पर इस स्कीम के प्रधीन संदेग रकम उस रकम से कम है जो कर्मजारी को उस दबा में सदेम होती जब वह उक्त स्कीम के प्रधीत होता तो, नियोजक कर्मजारी के विधिक बारिस/नामनिर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोगों रकमों के अन्तर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा म्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन प्रादेशिक भविष्य निधि धायुक्त, कर्नाटक के पूर्व धनुमोदन के बिना नहीं किया आएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हिंत पर प्रतिकृत प्रभाव पढ़ने की संधावना हो वहां, प्रादेशिक भविष्य निधि ध्रायुक्त, धपना धनुमोदन देने के पूर्व कर्मचारियों की धपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त धवमर देगा।
- 9. यदि किसी कारणबाग, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले भ्रपना चुका है भ्रभीन नहीं रह जाते हैं, बा इस स्कीम के भ्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले कायदे किसी रीति से कम ही जाने हैं, तो वह छूट रह की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक उस नियम कारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा नियम नियम करे, प्रीमियम का संदाय करने सें

- श्रमफल रहता है, श्रीर प∣लिसी को व्यवगत हो जाने दिया जाता है तो, छुट रह की जा संकतो है≀
- 1). नियोजक द्वारा प्राप्तियम के संदाय में किए गए किमी व्यतिक्रम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिमों की जो यदि यह, छूट न दी गई होती ती उक्त स्कीम के प्रस्तर्गत होते. बीमा फायदों के सवाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 1.2. उदन स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के द्यवीन भाने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नाम निर्देणिनियों/विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का मदाय तरपरता से भीर प्रत्येक दला में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त हाने के सात दिन के भीतर मुनिष्चित करेगा।

[मं॰एस॰ 35014/133/82-भ॰नि॰(II)]

S.O. 3050.—Whereas Messrs Bharat Fritz Werner Private Limited, Regd. Office, Peenya, Bangalore-560022(KN/2346) (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is 'employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme, are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.

<u>--- -----</u>

7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.

_ _==

- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and where any amendment is taking to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to the cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(133)/82-PF.II]

का० आ० 3051—मैसर्स एलिडाक डिस्ट्रिम्यूटर्स, 371-372, ईसानपुर, धहमदबाद-382443 (जी० जे०/10832) (जिसे हममें हमके पण्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कमंजारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम. 1952 (1952 का 19) (जिसे हममें इसके पण्चात् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के ध्रवीन छुट दिए जाने के लिए ध्राव्यन किया है;

ग्रीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्नवारी, किसी पृथक भिन्दाय या प्रीमियम का सदाय किए जिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के भर्धन जीवन बीमा के घर में फायवे उठा रहे हैं भीर ऐसे कर्मवारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृत है जो कर्मवारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चाप उक्त स्कीम कहा गया है) के श्रुयीन उन्हें अनुक्षेप है;

श्रत केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रिधिनयम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए और इसमें उपायद्व भ्रमुसूची में बिनिर्दिष्ट शर्यों के श्रिधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीत वर्ष की श्रविध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन में छूट वैता है।

अनुसूची

! उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक अविष्य निर्धि धायुक्त ग्रहमदाबाद को ऐसी विश्वपणियां भेजेगा भीर ऐसे लेखा रखेगा नधा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाए प्रदान करेगा जो केरद्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करे।

- 2 नियाजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की समाप्ति के 15 दिन के भीवर सदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त मिलियस की द्यारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के मधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामुहिक बीमा स्कीम के प्रणासन मे, जिसके ग्रन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना त्रिवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रामियम का सवाय, लेखाओं का भन्तरण, निरीक्षण प्रभारी का सवाय भ्रावि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहुन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामृहिक बीमा सकीम के नियमों की एक प्रति, भौर जब कभी उनमें मशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मवारियों की बहुमंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मजारी, जो कर्मजारी भविष्य निधि का या उक्त भिधिनयम के अधीन छुट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, इसके स्थापन मे नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम सुरन्त दर्ज करेगा। और उसकी बालन का नेप्यक प्रीमीयन भारतीय जीवन बीम, निगम को संबक्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के ब्राधीन कमंजारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाएँ जाते हैं तो, नियाजक सामूहिक बीमा स्कीम के ब्राधीन कमंजारियों को उपलब्ध फायदों में समुजित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेग जिससे कि कमंजारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के ब्राधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से ब्राधिक ब्रानुकूल हों, जो उक्त स्कीम के ब्राधीन ब्रानुक्य हैं।
- 7 सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होंने हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के मधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी का उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के मधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस/नामनिवेशिक्षी को प्रतिकर के रूप में दोनो रकमों के मन्तर के बगबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा म्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन, प्रावेशिक भिष्य निधि भ्रायुक्त, प्रहमदाबाद के पूर्व प्रमुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा भौर जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सभावना हो वहां, प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त, भ्रपना भ्रमुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को प्रपना पृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त भ्रवसर देगा।
- 9. यदि किनो कारणाश, स्थापन के कर्मकारी, धारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपत्ता कुका है प्रधीन मही रह जाने हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मकारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाने हैं; तो यह छूट रह की जो सकता है।
- 10 यदि किसी कारणवण, नियोजक उस नियन नारीख के धीनर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियन करे, प्रीमियम का संदाय करने में भमफल रहना है, भीर पालिसी की स्थपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रहद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के सवाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की देशा में, उन मृत सदस्यों के नामिनर्देशितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त क्काम के प्रन्तर्गन होते, बीमा फायदों के सदाय का उन्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्न स्थापन के सबक्ष में नियोजक, इस स्कीम के प्रधीन प्राप्त वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकवार नामनिर्देशिनियों/विधिक बारिसी को बीमाकृत रकस का संदाय तत्परता से घीर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात दिन के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[मं० एम-35014/(134)/82-भ०नि०-2]

s.o. 3051.—Whereas Messrs ALIDAC Distributors 371-372, Isanpu., Ahmedabad-382443 (GJ/10832), (hereinafter referred to as the said establishment) have be applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinatter referred to as the said Scheme):

Not, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

- 1. The employer in telation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmedabad and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and passecessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme, are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Ahmedabad and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Lite Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.

- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. \$.35014(134)/82-P.F II]

काल्आल् 3052---मैमर्स एन० जी० ई० एफ० लिमिटेड, रिजिर्ट्रीकृत कार्यालय धाल्ड, मद्राम रोड, व्याप्पनाक्षतली, पोस्ट बाक्स न० 3876 कंगलीर 560038(के०एन०/2835) ,(जिसे इसमें इसके पण्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मश्रारी भिवाय निधि और प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके पण्चात् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के प्रधीत छूट दिए जाने के लिए प्रावेदन किया है,

भीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मशारी, किसी पृथक अभिदाय या प्रीमिश्रम का संवाय किए, बिमा ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा रकीम के भाषीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे है और ऐसे कर्मनारियों के लिए ये फायदे उन फायदें ने अधिक अनुकृष हैं जो कर्मशारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पण्यान् उक्त रकीम कहा गया है) के प्रधीन उन्हें अनुशेय हैं,

ग्रन केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त मक्तियों का प्रयोग करने हुए, भीर इसमे उपावद्ध ग्रन्सूची में विनिर्दिष्ट शर्नी के भधीन रहते हुए, उक्त ग्थापन को तीन वर्ष की ग्रन्नाध के लिए उक्त ग्राम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

अनुसुची

- उक्त स्थापन के सबध में नियाजक प्रादेशिक भिवाय निधि श्रीयुक्त कर्नाटक का ऐसी विवर्णिया भेजेगा श्रीर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के निए ऐसी सुविधाए प्रवान करेगा जा केन्द्रीय सरकार, समय-सभय पर निर्दिश्ट करें।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षणो प्रभारों का प्रत्येक साप्त की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय संस्कार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय-समय पर निविष्ट करें।
- 3 सामृहित बीमा स्कीम के प्रणासन मे, जिसके घरतर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणिया का प्रस्तुन किया जाना, बीमा प्रीमियम का सदाय नेखाया का प्रंतरण, निरीक्षण प्रभारो सवाय घादि भी है, होने वात सभी ध्ययों का बहन नियोजन द्वारा किया जाएगा।
- तियोजक, केन्द्रोय सरकार द्वारा यथा प्रमुमोदित सामृहिक बोमा स्कीम के नियमों को एक प्रति, ग्रीर जब कभी उनमें संगोधन किया अएए, तब उस संगोधन की प्रति तथा कर्मबारियों को बहुसस्या की भाषा में उसका मृख्य बातों का श्रनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कीई ऐसा कर्मवार्य, जो कर्मवारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के प्राधीन छुट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि

का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियं,जिन किया जाता है तों, नियोजक, सामूहिक बीमा रकीम के सदस्य के रूप में उसका नाम नुरस्त दर्ज करेगा भीर उसकी बाबन भावण्यक प्रीमियम भा तीय जीवन बीमा निगम को सदन्त करेगा।

- 6 यदि उन्न स्कीम के प्रधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदे बेढ़ाएं, जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के श्रधीन कर्मजारियों को उपलब्ध फायदों में समृजित रूप से बृद्धि की जाते की व्यवस्थ। करेगा जिसने कि कर्मनारियां के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से श्रद्धिक श्रनुकूल हो, जो उक्त स्कीम के प्रधीन अनुक्षित है।
- 7 सामूहिक बीमा स्कीम में किसी वात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मभारी की मृत्यू पर इस स्कीम के घडीन सदेय रक्तम उस रक्षम से कम है जो कर्मचारी की उस दला में सदेय होता। जब वह उक्त स्कीम के घडीन हाता ता, नियोजक कर्मचारी के विश्विक वारियानामनिर्देणिती की प्रतिकर के रूप में दोनी स्कमों के अंतर के बराबर रक्षम का सदाय करेगा।
- 8. सामूहिक व मा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन, प्रावेणिक भिविष्य निधि भागुन्त, कर्नाटक के पूर्व भनुभोदन के बिना नहीं किया भागा और जहां किसी संगोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सभावना हो। कहां, प्रावेणिक भिविष्य निधि भागुक्त, अपना भनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को भ्रवना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त भवनर वेगा।
- 9 स्वि किसी कारणवाग, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन की मा निगम की उस मामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अर्धान नहीं रहे जाते हैं, या इस स्कीम के अर्धान कर्भचारिया को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं; तो यह रहे की जा सकती हैं।
- 10. यदि किसी कारणवंश, नियात्रक उस नियन तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियन करे, प्रीमियम का संदाय करने में फ्रमफल रहता है, फ्रीर पालिसी का व्यवगत हो जाने दिया जाता है सो, छूट रह की जा सकती है।
- 11 नियाजक द्वारा प्रीमियम के सवाय म किए गए किसी ध्यतिक्रम की दणा में, उन भूत सदस्यों के नामनिर्देशितियों या विधिक वारिमों का जो यवि यह. छूट ने दी गई हीती तो उक्त स्कीम के झत्नगंत होते, बीमा फायदों के सदाय का उत्तरदायित्य नियोजक पर होगा।
- 1.2 उनन स्थापन के सबध में नियाजक, इस स्कीम के प्रधीन प्राने वाले किसी सदस्य की मृत्यु हीने पर उसके हकदार नामनिर्देशितिया। विधिक वारिमों की बीमाकृत रकम का सदाय नत्परशा से प्रीर प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा नियम से बीमाकृत, रकम प्राप्त हाने के सात दिन के भीतर मुनिध्वत करेगा।

[स॰ एस-35014/141/82-पी॰ एफ-2]

S.O. 3052.—Whereas Messis NGEF Limited, Regd. Office, Old Mudras Road, Byappanaballi, P.B. No. 3876, Bangalore-560038 (KN/2835) (hereinatter referred to as the said establishment) have been applied for exeption under subsection (2A) of Section 17 of the Employ es Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked

Insurance Scheme, 1976 (hereinaster referred to as the said Scheme);

Not, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULL

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and majntain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme, are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more lavourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Karnataka and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption is liable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any mide by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees of the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No S-35014(141)/82-P.F.-II]

कार ग्रा० 3053. — मैं समं में जेस्टिक आटो लिमिटेड, सी/48-51, कीकल पाइट, लुधियाना-141001, (जिसे इसमें इसके पश्चान् उत्तर स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी हिष्टिय निधि भीर प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके पश्चान् उत्तर प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के प्रधीन छट विए जाने के लिए भावेदन किया है;

भौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक शिक्षिय या प्रीमियम का संवाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की मामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे है भौर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृष हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा रकीम 1976 (जिसे इसमे इसके पण्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्षेय है ;

भतः केर्चाय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदम्न सकितयों का प्रयोग करने हुए भीर इससे उपावद्ध भनुसूची में विनिधिष्ट भनों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की भवधि के लिए उक्त स्काम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से खुट देती है।

घनुसू भी

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियाजक प्रावेशिक भिक्य निधि भ्रायुक्त, पंजाब को ऐसी विवरीणयां भेजेगा भीर ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाए प्रदत्ता करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय भमय पर निर्दिष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्क प्रधिनियन की छारा 17 की उपधारा (3क) के खण्ड (क) के प्रधीन समय समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3 साम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके श्रम्तर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का श्रंतरण, निरीक्षण प्रभारों का सदाय श्रादि भी है, होने बाने सभी व्ययों का बहुत नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियाजिक, कैन्द्रीय सरकार द्वारा यथा प्रनुमोदित सामूहिक वीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, भीर जब कभी उनमें संगोधन किया जाए, सब उस संगोधन की प्रति तथा कर्मभारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का श्रनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य तिथि का उनते अधिनियम के अर्धान छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उनके स्थापन में नियोजिन किया जाता है तो, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम धुरस्त दर्ज करेगा और उसकी बाबन अरवण्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीम, निगम को सबस करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मजारियों को उपलब्ध कायदे बढ़ाए जाने हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों से सम्कित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिसमें कि कर्मजारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से घश्चिक धनुषूल हों, जो उक्त स्कीम के प्रधीन धनुक्रेय हैं।

- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बाह के होते हुए भी यदि किसी कार्सचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के प्रधीन संदेय रक्तम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में सदेय होती जब वह उकत स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिम/नामनिर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्तमी के ग्रंतर के बराबर रक्तम का सदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संगोधन, प्रावेशिक भिविष्य निधि भ्रायुक्त, पंजाब के पूर्व भ्रनुमोदन के बिना नहीं किया आएगा भीर जहां किसी संगोधन कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रशास पड़ने की सीनावना हो बहा, प्रावेशिक धविष्य निधि भ्रायुक्त भ्रयना भनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को भ्रयना दृष्टिकोण स्पन्ट करने का युक्तियुक्त भ्रवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवर्ग, स्थापन के कर्म चारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले प्रपत। चुका है प्रधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छट रद्व की जा सकती हैं।
- 10 यदि किसी कारणवण, नियाजक छम नियम नारीख के भीतर जो भारतीय जीवन वीमा निगम नियन करे, प्रीमियम का सदाय करने में प्रमफल रहना है, भीर पालिसीका व्ययगत हो जाने दिया जाता तो छूट रव्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए, किसी व्यक्तिकम की देशा में, उन मृत सदस्यों के नामनिर्देणितियों या विश्विक वारिसी को जो यदियह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के चन्तर्गत होने, बीमा फायदों के सदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियांजक, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उनके हकदार नामनिर्वे शिनियों/ विधिक वारिमो की बीमाकृत रकम का सदाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में आरतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के सात विन के भीतर मूनियिचत करेगा।

[स. एस-35014/112/82-पी एफ-2] ए० के० स्ट्राराई, भवर मचिव

S.O. 3053.—Whereas Messis Majestic Auto Limited, C/48-51, Focal Point, Ludhiana-141001 (hereinafter referred to as the said establishment) have been applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees Deposit-linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a period of three years.

SCHEDULE

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Punjab and maintain such accounts and provide for such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges, etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the notice board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Where the employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Lite Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately if the benefits available to the employees under the said scheme, are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said

- scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Gioup Insulance Scheme shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Punjab and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving him approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason the employees of the establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the establishment or the benefits to the employees under this Scheme are reduced to any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where for any reason the employer fails to pay the premium within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the member covered under the Scheme, the employer in relation to the said establishment shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs entitled for it and in any case within 7 days of the receipt of the sum assured from the Life Insurance Corporation of India.

[No. S-35014(142)/82-PF.II]
A. K. BHATTARAI, Under Secy.